(5)

Kayceetee

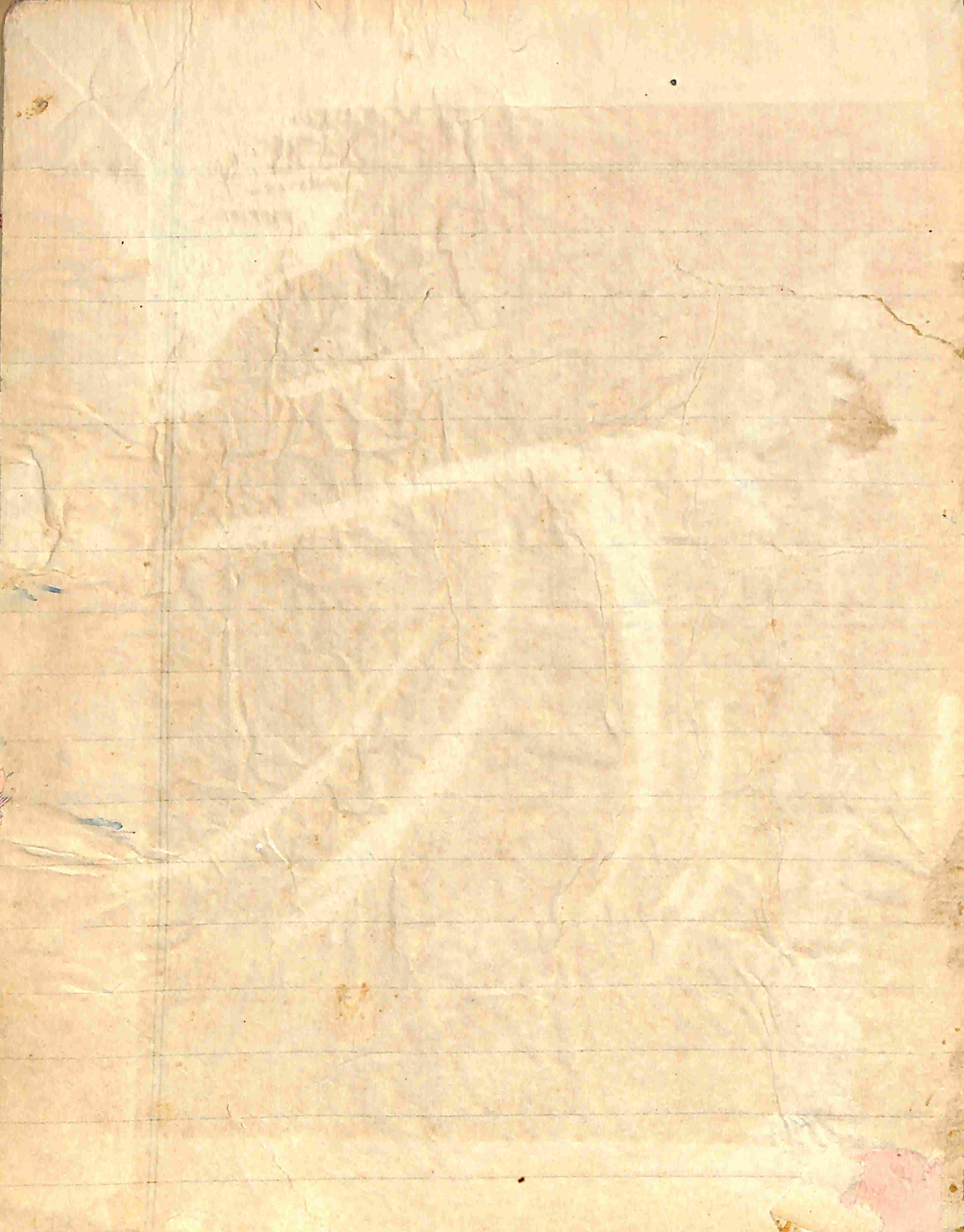
NOTE
BOOK



NAME ______________________

CLASS ______________________

SUBJECT ______________________



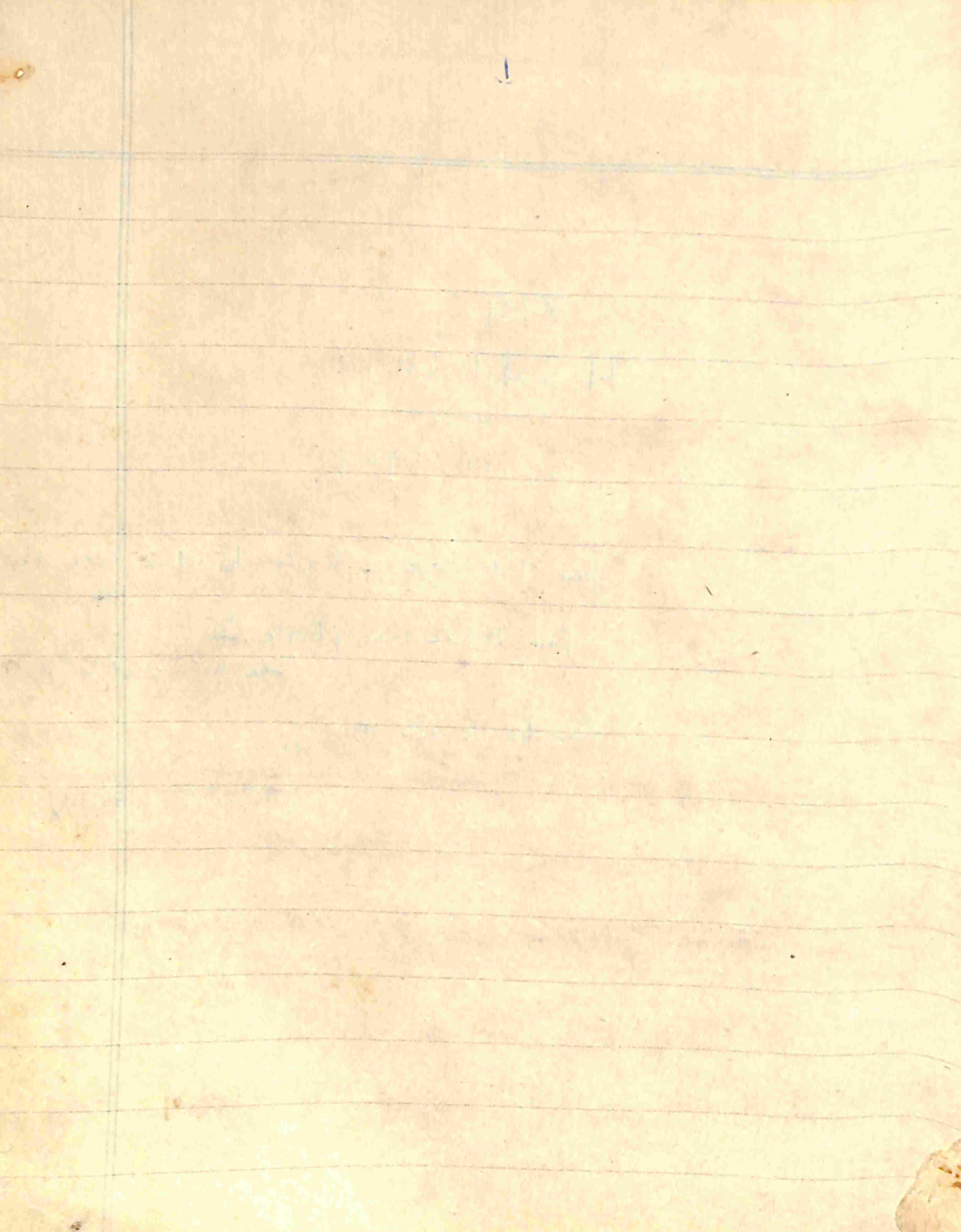
अथ
स्पन्दकारिका :

16 Feb. 1967

from 1st page of book to 122 page [illegible] &

from 123 of page of book to 141
See notes on (प्र[illegible] note book)

from 142 to 161 end
See
(साम्ब पञ्चाशिका).



प्रथमो निःष्यन्दः।

दशादिक्कालाद्यैरकलितचिदालोकवपुषः
सदा तादृक्स्वात्मनानुभावितृतया विस्फुति यः।
निजो धर्मः शम्भोरनुपमचमत्कारसरसः
परे शाक्ते तत्त्वे जगति जयति स्पन्द इति तत्॥१॥

दशा = [illegible] दिक् = [illegible] काल = [illegible]
आदि = [illegible] ( )
अकलित = [illegible] चिदालोक = [illegible]
वपुषः = [illegible] सदा = ہمیشہ
तादृक = ویسا ہی स्वात्मना = [illegible]
अनुभावितृतया = [illegible] ([illegible])
विस्फुतियः = [illegible] यः = جو
[illegible] निज = اپنا धर्म = [illegible]
[illegible] शम्भो = [illegible]

[illegible] अनुपम = [illegible] चमत्कार = [illegible]

सरस: = [illegible]

[illegible] परे = [illegible] प्राक् = [illegible]

तत्त्वं (= [illegible])

जमाति = [illegible] जयति = [illegible]

[illegible] यत = [illegible] स्पन्द = [illegible]

اسی کو سپند کہتے ہیں تत = وہ

तज्ज्ञैरदर्शितदिशः स्वयमाविशन्तः
केचित्तिसर्गगहने विषमे भ्रमन्तु।
तेनैव यत्पुनरमी हतवर्त्ममान्यान्
प्राकारयन्ति गमनाय महान्भ्रमोऽयम् ॥२॥

तत्रैः = [illegible] अद्दष्टितदिशः = [illegible]

स्वयम् अविश्रान्तः = آپ اندر [illegible] केचित् = کوئی / بعض

निसर्ग गहने = [illegible] विषमे = [illegible]

[illegible]

भ्रमन्तु = پھرتے ہیں

तेनैव = [illegible] यत = جو पुनर = پھر

पन्थाः = راہ हतवर्त्मम = [illegible]

[illegible]

अन्यान् = دوسروں کو प्राकारयन्ति = [illegible]

[illegible] गमनाय = جانے کے لئے

महान् भ्रमोऽयम् = یہ بڑا بھرم ہے

नाना वादानिलोद्धानवसरकृतान्योन्य संघट्टघोरो-
द्भ्रान्तानापादयद्भिः प्रबल विदल नो द्दाम दाव्द प्रबन्धान्।
प्राप्ताब्धि क्षोभ्यते यैर्विवरशार मसादु य्यदावर्त भीम-
भ्रान्ति भ्रष्टागमार्थ प्लववधुरमति स्तारितोऽथी जनैस्तैः ॥३

नानावाद = ناناواد — [illegible]

अनिल = ہوا [illegible]

क्रोध = [illegible] غصہ

अनवसर = جو نہ موقع پر

कृत = کئے ہوئے

अन्योन्य = آپس میں

संग्रह [illegible] = [illegible]

घोर = کٹھن

उद्घाटन = [illegible]

[Point of view — [illegible]]

प्रतिपादयति = [illegible]

श्रवण = سننا — کان [illegible]

उद्भव = [illegible]

शब्द प्रबन्धान = شبدوں کا پربند

शास्त्रविधि = شاستر [illegible]

क्षोभ = [illegible]

ये = [illegible]

विवरण = [illegible] → Comentaries

उद्यत = [illegible]

प्राकृत = [illegible]

भीम = خوفناک [illegible]

भ्रान्ति = [illegible]

[illegible]

अभ्र = [illegible] पृथ्वी = [illegible]

प्लव = جہاز विधुर = [illegible]

मति = [illegible] तारिता = [illegible]

पृथ्वी = [illegible] — जन = [illegible]

ते = [illegible]

[illegible]

कश्चिद्भिन्नरुचिर्विदन्नपि परं तत्त्वं विपर्यस्यति
द्वेषध्वान्तविरुद्धबुद्धिरितरो जात्यैव चान्यो जडः।
इत्थं दुर्लभ एव सर्वहृदयग्राही गिरां संग्रहः
किंत्वेतेऽद्य विवेकिनः कतिपये सन्त्यत्र पात्रं सताम्
॥४॥

केनापि ग्रथितां प्रसाररसाधिया केश्चिद्बुद्धिसूत्रीकृता-
मेकीकृत्य यथागमं विरचितां स्पन्दार्थसूत्रावलीम्।
ईशानुग्रहशक्तिवज्रशिखया विद्धेषु विद्वन्मनो-
माणिक्येषु निवेशयाम्यहमिमां कर्तुं कृतार्थां द्वयीम् ॥५॥

काश्चित = کوئی भिन्नरुचि = بھید رُچی پُرش (رچی) بھید بدھی رُچی

विदन अपि परं तत्त्वं = جانتا بھی ہو پرم تتو کو [پرم تتو کو جانتے ہوئے بھی]

विपर्यस्यति = شک میں پڑ جاتا ہے ۔ اُس کو غلط سمجھتا ہے بھید بدھی رچی ۔

اندر تو ہو ایک پرش ۔

द्वेष = دُر (دُوش) द्वात = جو اندر ہو ← [اس پرم تتو کو اُلٹا ہی سمجھتا ہے]

विरुद्धबुद्धि = اُس الٹی بدھی پُرش चि इतरा: = کئی اور پرش

angbarth जात्यैव = ذاتی سے ہی ۔ سوبھاؤ سے ہی जडः = جڑ ہو یا دوسری قسم کا پرش

इत्थं = اس طرح दुर्लभ = مشکل ہی ہے (کیونکہ پرش الگ الگ قسم کے ہیں)

सर्वहृदयग्राही = سارے پرشوں کو اندر (سے) پکڑے

गिरा संग्रह: = وانی کا سنگرہ ۔

(یہ سنگرہ وانیوں کا سب پرشوں میں آسانی سے کیا جا سکتا ہے)

किंत्वेते किंतु = کچھ इतरेय = یہ अद्य = آج / اب

विवेकिनः = وچار وان कतिपये = کچھ सन्ति = ہیں

अत्र = یہاں पात्र सताम = ست جن پاتر

(کچھ ست جن پاتر اب بھی ملتے ہیں یہ دیکھا ہے)

केनापि = (اور کسی نے) کسی نے   ग्रथितां = باندھی ہے

प्रसारणाधिया = پرچار کی بدھی سے - [illegible]

कैश्चित् = کچھ لوگوں نے - (کاٹ کر [illegible])

(اُن کی) [illegible] द्विसूत्रीकृताम् = دو سوتروں والی بنائی (گئی) [illegible]

[illegible] ऐकीकृत्य = ایک کر کے (جوڑ کر) यथा ह्यागमे = شاستروں میں

विरचितां = بنائی ہوئی स्पन्दकारिकासूत्रावलीम्
[illegible] اس نے سوتروں کی قطار

इदानीं = [illegible] अनुग्रह = [illegible] प्राप्ति

اُس वज्रप्रख्यया = [illegible] विद्वत्सु
[illegible] [illegible] =

[illegible] विद्वन्मनो = [illegible] मात्सर्यकेषु = [illegible]

[illegible] निवेद्यायाम् = [illegible] ([illegible])

पाठे = میں ([illegible]) यमो = [illegible]

कर्तुं = [illegible] कृतार्था = [illegible]
([illegible])

दृढीम् = [illegible] ([illegible])
[illegible]

३/

यस्योन्मेषनिमेषाभ्यां जगतः प्रलयोदयौ ।
तं शक्तिचक्रविभवप्रभवं शंकरं स्तुमः ॥१॥

यस्य = جس شنکر کی उन्मेषनिमेषाभ्या = انمیش نمیش سے

जगतः = اس جگت کی प्रलयोदयौ = پرلیہ اور ادیہ ہوتا ہے

ते اس شنکر کو शक्तिचक्रविभव प्रभवं جو شکتی چکر [illegible] ہے

शंकरं = اسی شنکر کی

स्तुमः = ستتی کرتے ہیں

'तं शंकरं' → श्रेयसः कर्तारं = [illegible]

'स्तुमः' "ستی" → प्रशंसाम = پرشنسا کرتا

तं के [illegible] "यस्य उन्मेष-निमेषाभ्यां"

جس کے انمیش نمیش سے =

→ [illegible] - [illegible] شکتی کا پرسار = शक्तिप्रसार प्रलयाभ्यो

([illegible]) [illegible]

x. لیکن زمیں سے کیا ہوا۔ دسشووں یعنی دشن پر لوگوں کا سامنا [illegible] —

what are his relation with material world?

3/4 زمیں کا "जगतो" → विश्वस्य = دشن کو

"प्रलयोदयौ" = پریلے اور ادیے → विनाशप्रादुर्भावौ
ناس بھی اور پرادُربھاؤ بھی

क्रम = ترتیب (پہلے پیچھے) यथासंख्यं = ترتیب

न विवक्षितम = کہنے کی بات نہیں ہے { ترتیب کہیں دیکھنا ہے }

इति वक्ष्याम = ہم کہیں گے

ते कीदृशः = وہ کیسے ہے

"प्रातिचक्रविभवप्रभवं" = [illegible]

→ प्रातीनां = [illegible] वक्ष्यमाण स्वरूप = [illegible]

"चक्रं" = چکر → समूह = گروہ

स एव 'विभव' = [illegible] → ऐश्वर्य = [illegible]

तस्य "प्रभवं" = اس کا [illegible] कारणम = [illegible]

इति = زمیں पदसंबन्ध = [illegible] योजना

तावत् सूत्रधार = [illegible]

वस्तु संगीत प्रसृति कथा = [illegible] तु = [illegible]

4/

कथं = کیونکر ہے

इति विचार्यम = یہ وچارنی ہے

प्राकब = پیشتر تو तावत् = [illegible] नित्यम = ہمیشہ ہے - نت ہے

पर्यायेण चरत् = [illegible] एक एव = ایک ہی [illegible]

पदार्थ: = ایک ہی پدارتھ ہے

परमार्थसन् = ایک ہی سچ ہے - پرمارتھ ہے

इति प्रकरणस्य अस्य तात्पर्यं = اس طرح اس پرکرن کا یہ مطلب ہے

तथा निर्वोढव्यात् = اس وچار کرنے سے [illegible]

तस्य = اس شئے کا परस्परविरुद्धौ = آپس میں ایک دوسرے سے مخالف ہیں

अपि नित्यौ (३.८) = دونوں نت ہیں

निमेषोन्मेषात्मकौ = [illegible]

([illegible])

4/

अवस्थाविशेषौ = یہ دو اوستھائیں

सम्बन्धित्वेन = یہ سمبندھ ہونے سے

कथं प्रतिपादितौ = کیسے سدھ کروگے

[شنکر تو نت ہے لیکن یہ دو اوستھا دونوں ایک دوسرے سے مختلف ہیں اور نہ نت ہیں تو ان کا اس ایسے نت ہونے والے اور ایک ہو سے شنکر سے کیسے جوڑ ہو سکتا ہے]

جواب

कर्तृ प्रथया = کرنے والے یا بانی   हि = کیونکہ

अन्यथा = ایسے نہیں   एवं प्रतिपाद्यते = یہ سدھ کیا جاتا ہے (نتیں اس کرتا سے سدھ ہو سکتا ہے)

प्राकट [illegible] निमित्तौ इति   اس سے سنکری اوستھائیں آتا ہے [illegible] ہے یہ بات

एवं च = اور ایسے   अनित्यावस्थायोगित्वं   یہ ایک اوستھا کا [illegible]

नित्ये भगवति = نت بھگوان میں

अनुपपन्नम् = نہیں ہے (اُن بھگوان میں)

([illegible] - ایسے انت کا [illegible]) [illegible]

4/

तत् कथमुक्तं = پھر وہ کیسے کہا گیا ہے

"यस्योन्मेषनिमेषाभ्याम" इति

کہ اسکے آنکھ کھلنے میں جگت ہے

अत्र उच्यते = اس پر یوں کہا ہے

उन्मेष-निमेष शब्दाभ्यां = ان دو شبدوں سے

तत उपचारित वृत्तिभ्याम = یہ اسکا اپچار ہے - ان سے

इच्छामात्रमेकं = اکیلا (اچھا) ماتر ہی

शंकरसंबन्धि प्रतिपाद्यते = آنکھ کھلنے بند شبد سے اُس کا جو اپچار ہے کی وجہ
اُن سے جو شنکر کا ہی سمبندھ سے کہا ہے
ہے - یہ ایک ہی اچھا ماتر (یعنی ارادہ میں آئی ہے) ہی اچھا ماتر ہی
شنکر سمبندھی سے دکھایا جاتا ہے -

स च = (شنکر) وہی اچھا ماتر तस्य = اُس شنکر کا

नित्यो = ہے نت धर्मः = دھرم ہے

स्वभावभूतः = جو اسکا سوبھاؤ ہے (یعنی شنکر)

तस्य = اُس سوبھاؤ کو उन्मे-निमेष शब्दवाच्यत्वं

= آنکھ کھلنے بند (اچھا) شبد سے جو کہا گیا ह

5/ द्वित्वं च = دوئت پنا (اِس لئے بھی)

= یہ اُپچار سے کیا گیا = उपचारात्

यतो = جس سے जगतस्तु = جگت کو بھی परमेश्वरमाया

= پرمیشور کی مایا شکتی سے प्राप्ति

उद्भावितकस्य = اُس نے پرکٹ کیا ہے کार्य रूपत्वात्

(یہ مایا شکتی کا کاریہ ہے) کاریہ

مایا کا کاریہ ہے अनित्यस्य = جو نشٹ ہے (انِتی)

प्रलयोदय संभवे सति = اُس سے پرلیہ اور اُدے کا سمبھو سمجھنے پر

निमेष-उन्मेषौ वस्तुतः = دونوں نمیش - اُنمیش کا سمجھو بھی وہی

संभवतः। اُسی سے ہے

لہذا तौ च = پرلیہ اور اُدے (وہ دونوں) ईश्वरेच्छामात्र = ایشور کی اِچھا ماتر

नित्तकों

- وہی نِمِت کارن ہوتے ہیں - جو ہے

इति उदयात्मकः = اُدے روپ -

उन्मेषहेतुत्वात् = اُنمیش ہی ہیتو ہونے سے

لہذا ईश्वरेच्छैव = ایشور کی اِچھا ہی

उन्मेषप्रादेन = اُس اُنمیش کے صرف (کارن ہی ہے)

5/

प्रलयात्मकनिमेष = پرلے شکتی جو نمیش ہے ڈبی ہوتی ہے
हेतुत्वात् - निमेष- = نمیش شبد سے ادہی رش
शब्देन च آتی ہے (یعنی ابھر (قبضہ)
उपचर्यते।

مثال

यथा च = جیسے आयु शब्देन = آیو کا نام ہے

घृतम = آیو شبد سے گھی کیا جاتا ہے

सा च = وہ प्रत्यभिज्ञा = یہی

शंकरस्य = اس شنکر کی प्राप्तिः = ملتی

तदवगम एव च = اسی کا جو جانا ہے
حاصل کرنا

आत्मैश्वर्य = آتم کا ایشوری

प्राप्ति प्रत्यभिज्ञा = اسی کی پہچان

5/ लक्षणा सिद्धिहेतु = کی سدھی کا کارن ہے

सा च = وہ "दिदृक्षयेव सर्वार्थान"
دیکھنے کی اچھا سے سب پدارتھوں کو

उत्पन्न = ہیں جو پیدا ہوئے वक्ष्यमाणान्यायेन = بیان کیے جانے والے طریقے سے

सांसारिक = سنساری پرش पुरुष = پرش کو

प्रसिद्ध इच्छा = مشہور اچھا سادृश्यात् = اس اچھا سے مشابہت کی وجہ سے

तदवगम = اسے جاننے کا اُپایتیا = طریقہ ہونے سے

इच्छाशब्देन = اچھا شبد سے व्यपदिश्यते = نام دیا جاتا ہے

यथा हि = جیسا کہ پुरुषस्य = پرش کی

इच्छावस्थायाम = اچھا کی حالت میں इष्यमाणाः = چاہے جاتے پदार्थाः

स्वरूपव्यतिरेकेणैव = اپنے سروپ سے الگ ہی

अवतिष्ठते = ٹھہرا ہے

तथा = اسی طرح भगवतः प्रात्तौ = بھگوان کی اچھا میں

अनन्त = بے حد प्रतिभास = پرتیभاس (آبھاس)

विशेषचित्रे = انیک طرح کا

जगत् = جگت

मनागपि = ذرا سا بھی

अनुपजात = نہیں ہوتا ہے विप्रीभात

5/

[illegible] स्वरूपात् = سروپ سے

= [illegible] अव्यातिरेकेणैव

प्रवर्तिष्यते = [illegible]

सेयं = [illegible] परमार्थसती = [illegible]

प्रावदषा = [illegible]

या स्वं = [illegible] तत् विबुद्धिः = [illegible]

स्तूयते = [illegible]

= [illegible]

6/ "सदा सृष्टिविनोदाय सदा स्थितिसुखासिने।
सदा त्रिभुवनाहारतृप्ताय स्वामिने नमः॥"

[illegible]

सदा = [illegible] सृष्टिविनोदाय = [illegible]

सदा = [illegible] स्थितिसुखासिने [illegible]

सदा = [illegible] त्रिभुवन = [illegible]

आहार = [illegible] तृप्ताय [illegible]

स्वामिने नमः = [illegible]

6/

इति तथा ईश्वर प्रत्यभिज्ञायाम् [illegible]

“या चैषा प्रतिभा तत्तत्पदार्थ क्रमरूपिता।
अक्रमानन्तचिद्रूपः प्रमाता स महेश्वरः ॥”

या च = ३ चैषा = [illegible]

तत् तत् = पदार्थ क्रम [illegible] रूपिता = [illegible]

[illegible]

? [illegible] अक्रमानन्त [illegible] चिद्रूपः

[illegible] प्रमाता

स महेश्वरः = [illegible]

इति - इत्थम् एकस्या एव पारमेश्वर्या शक्ते

[illegible]

इच्छा - ज्ञान - क्रिया = [illegible]

व्यपदेशः = [illegible]

اسی طرح بھگوان کے سروپ میں اس دشتی کی نانا بانی الف و با شکتی کی دیتی کی (شکتی میں) [illegible] ... [اس نانا بانی میں بھی فرق نہیں ہے] تھوڑے میں بھی فرق نہیں ہے نانا شکتی کے سروپ میں

[جیسے بیج میں پوری درخت کی نانا بانی قرتیں ہوتی ہیں بس رہتی ہیں۔]

इन्दता = جو بہ بڑھتا ہے उन्मेष وہ اُمس کی ہے۔ وہ مایا شکتی

मायाशक्ति जृम्भिता एव: اس نے ابھارا ہے

यत: = جس (جو ایک مقام ہے) शिवदशा [illegible] دب گیا ہے

एको = ایک ہی ہے मुक्त्वा = وہ چھوڑ کر

मायाशक्ति: सवित्र कृतपदा = مایا شکتی ہو کر سوئے بھگوان سوتے ہے

यत् वशात = جس کے وش سے एकस्मिन = ایک ہی شوتتّو ہے शिवतत्त्वे

परमार्थसति = پرمارتھ میں सदाशिवादि = سداشو آدی کو (اب نام) (پرتھوی)

तत्त्वान्तर - व्यपदेश: = ادروں تو تو ناں [illegible]

प्रक्रियादशासु = پرکریا کی شری میں یہ نام دئے گئے ہیں -

एतच्च च = بھی (مایا شکتی [illegible])

पुरस्तात् = آگے آگے

6. "परामृतरसापादः" پورا پاشت ہوا رس جس }
جب وہ ہو تا ہی میں آیا }

इत्यादि = وغیرہ श्लोक = شلوک کا

व्याख्यान = وناکھیا अवसर

प्रतिपादयिष्यते = سمجھائی جاوے گی

सा = وہ एवं लक्षणा = ایسے لکشن ہوئے

पारमेश्वरी शक्ति = ایشور کی شکتی

स्वलीलोल्लासितस्य = اپنی لیلا کر کے اٹھائے
= [illegible]

जगतः = جگت کی तत = [illegible]

[illegible] प्रवस्थाद्वय = دو اوستھا - (پرلے رہنا)

हेतुत्वात् = سبب ہونے سے

द्वित्वेनापि च = اور دو پن سے بھی उपचरिता = [illegible]

तैन = اس سے इदम = یہ अत्र = یہاں

प्रथम श्लोक = پہلے شلوک کا یہ پہلا حصہ

पूर्वार्ध

Pencil
22/2

6

(اُن آدھے شبد کا مطلب ہے)

तात्पर्यम = یہی اسکا مطلب ہے

(یعنی جس کی) यस्य = جس پرمیشور کی ; इच्छामात्रेण = اچھا ماتر سے

जगतः = جگت کا ~~پرلیہ اور ادے~~

प्रलयोदयौ = جگت پرلیہ اور ادے ہوتا ہے ; पर्लیہ ہوتا ہے ; तं = اسکو پرنمسکار

स्तुमः = ہم ستُتی کرتے ہیں

ततः च = اور ; यथा संख्यम = کرم سے

पक्ष = پکش ; मुख्यया वृत्त्या = پردھان ورتی سے

(اسکی اپیکشا) न ... अपेक्षणीयम् = اسکی اپیکشا نہیں کی جاتی

[یعنی پر [illegible]] (یہاں کرم کی بھی اپیکشا نہیں کی جاتی ہے)

(یعنی) उन्मेषेण उदयो = جس کا اُنمیش کا اُدے ہوتا ہے

निमेषेण प्रलयः = جس سے پرلیہ ہے } (ان کا)

न अपेक्षणीयम् - اسکی اپیکشا نہیں کی جاتی ہے

7

इति तु = لیکن یہ ، پृथ्वीसंख्या = یہ اور بھی گنتی میں
समवैति (یہ بات) ہو جاتی ہے

एवञ्च = اور اسی طرح یہ ، इच्छामात्रम् = یہ سب اچھا ماتر
उन्मेषनिमेषौ (یہ اُنمیش نمیش) ہی ہے

इति = یہی ، तावत् = اتنا ، तात्पर्यं =
اس کا مطلب ہے

प्रतिपादयितुं = سمجھانے کو ، स्वयं = آپ ہی

वृत्तिकृता = ورتی کار (جس نے ورتی لکھی ہے) भट्टकल्लटेन
کلٹ بھٹ نے

व्याख्यातम् = واکھیا کی ہے

"संकल्पमात्रेण" سنکلپ ماتر
(یہ اچھا ماتر سنکلپ ہے - اس طرح سنکلپ ہے)

इति = اور ہی ، ये तु = جو کہ

ترتیب وار यथासंख्य = جیسا ، समर्थन =

अनुरोधात् = اسی کے لحاظ سے

7

پیدا کرنا — उन्मेषे = اُنمیش → क्रियाप्राप्ति = کریا پراپتی کا

اندر کھینچنا — प्रतिसंहारात = یعنی واپس لے آنا ہوتی ہے →

स्वरूपविकासे = سروپ وکاس یعنی जगत: प्रलयो विनाश:

= جگت کا پرلے یعنی ناش ہے (یعنی بند ہونا ...)

(ختم ہونا)

निमेष → نمیش کا ہے → प्रसृतक्रियाप्राप्तित्वात्

پرسرتی کریا پراپتی اس طرح ہوتی ہے (باہر نکلنا)

स्वरूपसंकोच — اس وقت سروپ کا سنکوچ ہے

रूप — روپ کا سکڑنا ہے

اسی وقت — जगत: उदय = جگت کا اُدے ہے (پیدا ہونا)

उद्भव:

उत = اور — व्याचक्षाणा: = سمجھانے والوں نے بیان کیا ہے

دونوں باتیں — शंकरस्यैव = شنکر کا ہی — पारमार्थिकौ = سچ ہے

उन्मेषनिमेषौ = انمیش نمیش

* { 3. یعنی عکس شنکر کا ہی دھرم سدھ کرتے ہیں - وہ یہ سمجھ کر کہ اس درشن میں فرق ہے اندر آکے ہیں -
یعنی بنیاد پید انکے نزدیک یا ہے - اسلیے ان کو نمسکار ہے - }

(23)

7

धर्मित्वेन = دوسرا والا تعلق ہونے سے سو تعلق بھی -

رکہ یہ شنکر کا سو تعلق بھی ہے اعکس لعکس

प्रतिपादयन्ति = سدھ کرتے ہیں

ते च = وہ काल्पनिकमेव = کلپنا کیا ہوا ہے

(یہ اعکس لعکس ہیں) - یہ صرف اسکا کلپنا یا تریبی ہے -

अर्थं = یہ ارتھ वह परमार्थत्वेन = سچ ہونے سے یعنی ہونے سے

प्रतिपद्यमाना = سدھ کرتے ہیں

(یہ دونوں ہیں یہ ایک ہی ہے)

तथा = ویسا ہی दर्शनस्य / ऋस्य = درشن کو

अन्तरं = فرق ہی ननु = کیوں प्रविष्टाः?

= کیسے ہیں - (وہ بھی فرق ہی مانتے ہیں)

इति = اس لیے नमस्तस्यै = ان کو نمسکار

ननु = پرنتو ہے नित्य = نت ہو ہے

अव्यभिचरत् = ایک سا رہنے سے ہو

= ایک سا رہے

7/

एक स्वभावस्य = ایک ہی سوبھاؤ کا سوست
شونیہ تا اس ہے

भगवतः = اس بھگوان کی   शक्तिरपि = اس کی شکتی بھی

तादृगेव = ویسی ہی   प्रतिपादिता = بتائی ہے
(اس کی شکتی بھی ایک ہی ہے اس ...)

[illegible]

तयो = ان شکتی ودوشوں کا   भेदाभ्य
उपगमात् = ان دونوں میں کوئی فرق نہیں ہے

ततः = اس واسطے   कथं = کیسے   व्याख्यात =
وہ دکھایا کیا گیا

शक्तीनां चक्रमिति = ہر شکتی چکر کا (جب ہر شکتی اس سے بنی ہیں)

अत्र = یہاں پر   क्रमः = ترتیب سے

8/

ननु = لیکن इदमेव = یہی तत् = وہ

निरतिशयम् = زیادتی سے برتر ऐश्वर्यम = [illegible]

[illegible] ईश्वरस्य = ایشور کا इह = اس دنیا میں

विवक्षित = [illegible] ہے

यत = جو (موجود) सर्वत्र = ہر جگہ

'स्फुरत्' = (ابھرنا) इति = ہوتا

स्वरूप परामर्श मात्र = [illegible] अव्यभिचारे ऽपि = نہ بدلنے والا ہے

निरवधि = بے حد

विजृम्भमाण = [illegible] विचित्र अवभास = [illegible]

[illegible] खचिते = [illegible] — [illegible] — جڑا ہوا

[illegible] — त्रैलोक्या = [illegible] प्रातिरूप्यम् — [illegible]

8/

इदम् = یہ उल्लिखति = جو اسکو اُٹھاتی رہتی

نیز इत्थम् उल्लिख्यमानमपि = اسطرح اُسکو اُٹھائی
میں رنگینیوں سے

एतत = یہ परामथित: = سلجھے ہودسے —

परामृश्यमाने = چھوا جانے میں तत्स्वभावात = اس کے سبب
= اپنی فطرت سے मनागपि = ذرا
بھی نہیں ٹوٹتی

न भिद्यते = نہیں ٹوٹتی

यथा उक्तम् = جیسا کہ

"परमेश्वरता जयत्यपूर्वा - तव सर्वेश यदीशितव्यशून्या
अपरापि तथैव ते ययेदं - जगदाभाति यथा तथा न
भाति ॥"

8/

परमेश्वरता = پرمیشورتا کی طاقت — (بڑی) जयत्य = وہی جے ہو رہی ہے

अपूर्वा = جو انوکھی ہے तव = وہ تیرا

सर्वेश = اے سب کے ایشور यत् = جو پرمیشور

ईशितव्यशून्या = جس کو کسی پر حکم [illegible]

یعنی جو پرمیشور کی طاقت ہے اس کا کوئی حاکم نہیں ہے

अपरापि = دوسری (جو شکتی ہے [illegible])

تمام کو حکم [illegible] اس کا کوئی حاکم نہیں

तथैव = ایسی ہی ہے ते = تیری यथा

यथेदम् (जगत) = یہ جگت आभाति = جس طرح سے بھاس رہا ہے = यथा

तथा = ویسا ہی न भाति = نہ بھاس رہی ہے (انتر [illegible]) اسطرح ।

جس وقت پرمیشور [illegible]
[illegible]
[illegible]

इति । अन्यत्रापि = دوسری جگہ بھی یہ ہے

"लिखते जगत्त्रितयचित्रमद्भुतं ।
प्रतिभापरिस्फुरितपांसि ते नमः ।
सुसितैकसूक्ष्मनिजशक्तिवर्तिका-
रचितावभासपात सोमि प्रभवे ॥"

8/

लिखते = لکھتے ہیں   जगत्त्रय चित्रम् = ملکِ ثلاثہ - اس چیز کو

स्फुरत = ظاہر ہوا   प्रतिमा = مورتی (جو شباہت [illegible] عکس ہو اس کی)

ایسی   परिस्फुरित = وہ روشن ہے   اس میں   प्राति = تقلید کرتی ہیں

ते = त्रम = [illegible]   सु = اچھا   सिते = سفید صاف شفاف

एक = ایک   सूक्ष्म = سکھم   निज प्राप्ति = اپنی شکتی

वर्तिका = بتی - شمع - دیا   संचित = بنایا ہوا

अवभास = بھاس   शात = [illegible]   [illegible]

प्राणि = [illegible]   प्रभवे = [illegible] - [illegible]

इति = ایسا   एतच्च = یہ   एवं विधं = ایسا ہی

प्राकर्मैश्वर्य [illegible] = قدرتِ الہٰی   तत अनुग्रहात = اس کی مہربانی سے

ग्रहस्त = گرفتار ہوا   समस्त = سارا

मायातम = [illegible]   तु = [illegible]   [illegible]

= [illegible]   [illegible]

[illegible]

8/9

अप्रकाशित = [illegible] परमार्थानां = [illegible]

स्वसंवेद्यमेव = [illegible] सुप्रबुद्धानां =

[illegible] महात्मानःकिं [illegible]

ईश्वर प्राक्तिपात प्रबोधितानां = [illegible]

= [illegible] तु = [illegible]

सम्यक = [illegible] उपनत = [illegible] सद्गुरु

उपदेशक्रमेण = [illegible] अभ्यस्यतां = [illegible]

प्रत्यक्षासन्न = [illegible] स्वानुभवम = [illegible]

अप्रबुद्धाः = [illegible] पुनः = [illegible]

अनुपदेशया = [illegible] एव इति = [illegible]

एतदेव = [illegible] इह = [illegible] परस्तात = [illegible]

प्रतिपादयिष्यमाणास्य = [illegible] तत = [illegible] एवं विधे = [illegible]

स्थिते = [illegible] स्थित = [illegible] परमार्थ [illegible]

या = 3. सूत्रा = 3. [illegible] 3.3.

9/

परमाद्भुत = [illegible] मायाशक्ति = [illegible]
-वशात्

चिद्-अचित = [illegible] ([illegible]) भेदेन =
द्विविधा अपि = ([illegible])

अवान्तर भेदात् = [illegible] ([illegible]) — multiplication of بید

[illegible] अपर्यन्ता = [illegible] — भावव्यत्यय:
[illegible]

[illegible] सा = وہ . परमेश्वरस्य = [illegible]

स्वरूपात = [illegible] अभिन्ना = [illegible]
शक्ति: ([illegible]) [illegible] सकैव = [illegible],
तात्त्विकी = [illegible] इदम् इति = [illegible] -

[illegible] परामर्श = [illegible] भेदमाज = [illegible]

जन्मना = [illegible] तु = [illegible]

नाना नाम = [illegible] रूप = [illegible] विभक्ता =
[illegible]
भावभेदेन = [illegible] अवभासमाना [illegible]
सती = [illegible]

९/

बहुत्वेन = بہت ہونے سے   व्यपदिष्टा = نام دی گئی ہے

[illegible] "शक्तीनां चक्रम्" = شکتیوں کا چکر   इति = کرکے

शक्तिशब्देन च = اور شکتی شبد سے   ~~भवक~~ भावव्यक्तीनां = [illegible]

व्यपदेश्य = نام دیئے

परमेश्वरात् = پرمیشور سے   शक्तिमतो = شکتی والے [illegible]

भेदाभाव = بھید نہ ہونا   प्रतिपादनमेव = [illegible]

प्रयोजनम् = غرض ہے (مطلب).

ताभिरेव = انہی سے   तस्य = اس ایشور کا   यथा = جیسے

विभव = [illegible]   शीलत्वात् = [illegible] (دیکھنا)

= اس کے پرمیشور شنکر [illegible]
ہے

[illegible] "शक्तिश्च शक्तिमांश्चैव पदार्थद्वयमुच्यते।
शक्तयोऽस्य जगत्कृत्स्नं शक्तिमांश्च महेश्वरः॥"

[illegible]

10/

एवं च [illegible] स्वप्राक्तिभूतस्य

[illegible]

एतस्य विभवस्य [illegible] एषां = [illegible]

"प्रभवः" = [illegible] उत्पत्ति = [illegible]

कारण

× | न तु = [illegible] स्वरूप = [illegible] व्यतिरिक्तस्य = [illegible]

कुतश्चित्

पश्यतः = [illegible] = [illegible] लक्ष्यते- मनः

एतच्च = [illegible] 'यस्य' = [illegible]

इत्यादिना = [illegible] 3. प्रथम श्लोकपूर्वार्धेन

[illegible]

प्रकरस्य = [illegible] जगत्कारणत्वेन [illegible]

प्रतिपादितेऽपि = [illegible] प्राक्तिचक्रात्मक

[illegible] =

स्वैश्वर्य = [illegible]

भूत जगत = [illegible]

प्रभवत्व = [illegible] लक्षणा = [illegible]

10/

(ن) ؟ विशेष = خاص معروف प्रत्यायन परम = [illegible]

इदम् = इसको [illegible]

[illegible] तम् ؟ [illegible] = इत्यादिना = [illegible]

श्लोकापराधेन = شلوک کے قصور سے विशेषणं
معروف

न = ~ = نہیں पुनरुक्तम् = [illegible]

[illegible] एतदेव = یہی वृत्तिकृता = [illegible]

व्याख्यातम् = [illegible]

" विज्ञान देहात्मकस्य प्राकृि चक्रैश्वर्यस्य
उत्पत्ति हेतुत्वम् ...... "

[illegible] " विज्ञान = [illegible] देहात्मकस्य = [illegible]

प्राकृि चक्र ऐश्वर्यस्य = [illegible] [illegible] उत्पत्ति हेतुत्वम्

[illegible]

([illegible]) [illegible] =

10/ इत्यादिना = [illegible] "विज्ञानदेहो"

विशुद्धसंविन्मात्रमूर्तिः = [illegible]
[illegible]

महेश्वरः = [illegible] सः = [illegible]

"प्रात्मा" = [illegible] → स्वभावो = [illegible]

[illegible] यस्य = جس کا शक्तिचक्रात्मन = [illegible]

[illegible] "ऐश्वर्यस्य" = [illegible]

इति हि = [illegible] तत् = [illegible]

[illegible] तस्य = اس کا अर्थ = [illegible] अभिमत = [illegible]

किं च = [illegible] यस्य = [illegible]

एवंविधा = [illegible] धर्म = [illegible]

[illegible]

अव्यभिचारः = [illegible]

10

स = وہ परमेश्वरः = پرمیشور व्याख्यास्यमान = جو باتفصیل بیان کرنی ہے

अर्थेन = اس لفظ سے

शंकरशब्देन = شنکر شبد سے इह = یہاں / اس دنیا میں

प्रतिपादितः = سمجھایا گیا ہے

11

[illegible] स = وہ च = اور एव = ہی आत्मैव = آتما ہی ہے ([illegible])

न अन्यः = دوسرا کوئی نہیں

इति = ایسا यत् तत् शब्दः = "یت تت" شبد

"यत्" उपलक्षित = [illegible] वाक्य = اس واکیہ کا

[illegible] उपनिबन्धः = [illegible] सूचयति = [illegible]

यतः = جس سے श्लोक पश्चात = [illegible]

प्रपञ्चित पश्चात् = [illegible] प्रकरणार्थः = [illegible]

= [illegible]

॥

अर्थालोचन = [illegible] तस्यैव = [illegible]

प्रोक्त = [illegible] विशेषण [illegible]

अव्यभिचार: = [illegible] पर्यवस्यति [illegible]

एतदेव वृत्तिकृता = [illegible]

दर्शितम् ॥ [illegible]

"अनेन स्वस्वभावस्यैव शिवात्मकस्य"

अनेन = [illegible] स्वस्वभावस्यैव = [illegible] शिवात्मकस्य

इति = [illegible] व्याचक्षाणेन = [illegible]

"स्वस्य" = [illegible] आत्मनः = [illegible]

"स्वं" = [illegible] आत्मीयो = [illegible] स्वरूपं = [illegible]

"भाव:" = [illegible]

इति हि तस्य = [illegible] तस्य = [illegible] विगाढ = [illegible]

अभिप्रेत = [illegible] — [illegible]

॥

[illegible]

तत् = وہ अस्य = [illegible] प्राप्य [illegible] / श्लोकस्य

अयं तात्पर्यार्थः = [illegible]

प्रकरणा = [illegible] निर्वाह्य [illegible]

वस्तु [illegible] प्रतिज्ञा = [illegible]

बन्धरूपः = [illegible] इति = [illegible]

परमेश्वरः = پرمیشور इच्छामात्रेन [illegible]

जगतः प्रलय = [illegible] विधाति = [illegible]

लब्ध उदयौ = [illegible] स्थितिकर्त्र = [illegible] जगतः = [illegible]

तत शक्ति = [illegible] विभूति [illegible]

एकैव = [illegible] मायावशात् [illegible]

नानात्वेन = [illegible] इदम् इव = [illegible]

अवभासते [illegible]

अर्थद्वयम = [illegible] अत्र प्रकरणे = [illegible]

विस्तार्यते = [illegible]

उपपत्त्य = [illegible] उपलब्ध = [illegible] दर्पीन = [illegible]

क्रमेण = [illegible]

2/

तथा च = [illegible] प्रथमत एव = [illegible]

मायावशात = [illegible] स्वरूपप्रत्यवमर्शस्य = [illegible]

[illegible] अनुल्लासात = [illegible] वेद्यात् = [illegible]

द्रष्टुर्बहि = [illegible] व्यतिरेकेण = [illegible]

प्रतिभासमानस्यैव = [illegible] आत्मनो = [illegible]

व्यतिरेकः = نیارا प्रदर्श्यते = [illegible]

ततो = [illegible] वेद्यस्यैव = [illegible] जगतो = [illegible]

वेदकात = [illegible] → उपलब्धतात्त्विक- [illegible] = स्वभावात्

भ्रान्तिभावेन = [illegible] अव्यतिरिक्तत्वम् [illegible]

इति = [illegible] अस्मिन्नेव अर्थद्वये = [illegible]

उपपत्त्युपलब्धी [illegible] اور [illegible]

ننذ = ادیا

12/

इति वा = یا چتुर्निःष्यन्दः = چار نثند

स्पन्दसिद्धान्तो = سپند سدانت شनेन श्लोकेन = اس شلوک سے

आसूत्रितः = شروع کیا

सिद्धान्तता = سدانت ہونا च अस्य = اسی کی

सिद्धस्यैव = سدھ ہے ही न = نہیں साध्यस्य

ईश्वरतत्त्वस्य = ایشور تتو کا अप्रतीतो

निष्ठा निश्चयः = اسی کا نیچے

इति कृत्वा = ایسا کر کے यदि वा

नानासिद्धान्त = سدانت میں

उदितस्य = اسی سے ادیت ज्ञान-क्रिया-योग चयीत्मकत्वात्

گیان - کریا - یوگ

चतुष्कस्य ... चار का सतत विज्ञान =

संस्कारकत्वात् = سنسکار ... → साफल्यकारणात्

इत्यस्यैव = اسی کی سدانتتا [...]

सिद्धान्तता

شروع کیا ہے

12/ किंचे = اور کیونکہ प्रारब्ध = شروع प्रकरण = پرکرن

ادھوری اس پرکرن کو

विघ्न = وگھن یا رکاوٹ परिसमाप्ति = انتہا
اس کی انتہا یعنی پوری ہو جائے

प्रयोजनेनापि = اس غرض سے بھی प्र.. आदि श्लोकेन
اس آدی شلوک سے

संबन्धाद्योऽपि = سمبندھ وغیرہ بھی (دات) सूच्यन्ते = ظاہر کئے جاتے ہیں

اس آدی شلوک سے اس پرکرن کا سمبندھ بھی بتایا جاتا ہے - سمبندھ سے مراد یہ کہ اس کی سماپتی وگھن کے بغیر ہو جائے

ایسے ہی
इत्यादि ग्रान्ति = وغیرہ गुरव: = گرو آچاریہ کہتے ہیں

तत् च सर्वं = اور وہ سب प्राकरेस्तुम:

इत्यत एव वाक्यात् = اسی واکیہ سے लभ्यते = سب کچھ پایا جاتا ہے
(یہ جاننا چاہئے کہ اس میں یہ ہی پائے جاتے ہیں)

यत: = کیونکہ جس کا उपायलक्षणो = اوپائے کا لکشن - جس سے اوپائے دیکھا جاتا ہے

پیدا ہونا श्रेय (نجات/مکتی) = کلیان प्राप्तरूपं = پانا وغیرہ

मुख्यतया = خاص طور سے (اوپائے کا لکشن ہے ... اس کا لکشن ہو جاتا ہے) دیکھی

उपेयलक्षणं च = اور اپیے کا لکشن

۲۶

13/

प्राप्तैश्वर्ये [illegible] प्रत्यभिज्ञाख्ये = اسی کی دو پہچان [illegible] ہے

तत उभयमपि = وہ دونوں ہی (ادیاے اور [illegible])

کلمہ ← 'प्रत्यभि' = इत्येतेन पदेन اس پد سے उत्ताम = کہا ہے
(ادیاے اور [illegible] اس 'प्रत्यभि' پد نے کہا ہیں)

तस्य कर्ता = اس کا کرنے والا 'प्रकर:' = وہ شنکر ہے
— اس کلمہ کا کرنے والا —

"प्रत्यभि करोति" प्रकर: इत्यन्वर्थी = مطابق معنی = ~~[illegible]~~ इयं संज्ञा = یہ نام
معنی موافق

کا ہے परमेश्वरस्य = پرمیشور کا प्रतः [illegible]

اس شاستر کا کلمہ ← सतत् स शास्त्रात्मक = وہ شاستر ہے
श्रेयसः = اس کلمہ کو साक्षात् कर्ता [illegible]

[illegible] परमेश्वर एव = صرف پرمیشور ہی ہے

तत संप्रदाय = [illegible] इमम् = یہ

निबन्धादिभः : [illegible] — [illegible]

[illegible] कर्तृ व्यपदेशस्तु = [illegible] प्रासङ्गिक: = [illegible]

13/

एवम = ایسے اور ईश्वर प्राप्त्यो = ایشور اور شاستر کی

ایشور اور شاستر کا کرتا اور کریہ کا لکشن ہے [illegible] دکھایا

कर्तृ कार्यलक्षणः = کرتا اور کرم کا لکشن

संबन्धः = یہ ایشور کا کام ہے (ایشور ہی سب کچھ ہے)

प्रतिपाद्यमिह = بتلانے والا یہ ہے اس شاستر میں شنکر स्वरूपमिति [illegible]

اب وشنو کا ہے اس شاستر میں

स्तुमः = ہم ستتی کرتے ہیں [illegible]

स्तुमः = ہم ستتی کرتے ہیں

इति पद्यात् = اس پد سے प्रतीयते = جانا جاتا ہے

उपादेय वस्तु स्वरूप = [illegible]

प्रतिपादनमेव [illegible] اس [illegible] → [illegible]

स्तुत्यर्थः = [illegible] ایسی ہے

इति हि = [illegible] اس निश्चित = [illegible]

विपश्चिद्भिः = عالموں نے

13

एतः = یہ دونوں शास्त्राभिधेययोः = شاستر اور اس میں کہی گئی بات ہے प्रतिपाद्य

سمبندھ — प्रतिपादक = ظاہر کرنے والا (سمجھانے کے قابل) (وہ جو سمجھایا جائے)

अभावलक्षणः = نہیں ہوتا نقش संबन्धः

~~نہیں ہوتا نقش~~ یہ سمبندھ ہے

= نہیں سمبندھ ہے

پرتوجن — प्रयोजनं च = اور پرتوجن آتم ایشوریہ आत्मैश्वर्य = آتم ایشوریہ

प्रत्यभिज्ञात्मकं = کی جو جان لینا ہے — بار بار جان لینا

शंकरपदादेव = یہ شنکر ہی سے अवसीयते = سمجھا جاتا ہے —

وہ ہی شنکر ہے سمجھا جاتا ہے —

परस्यापि = دوسرے کا بھی — اور جو ہے हि = کیونکہ

श्रेयसः = اور کامیابی کی कर्तृत्वेन = کرنے والے کی حیثیت سے

ईश्वर एव व्याख्यातः = ایشور ہی دیا گیا ہے ← اس لئے

इति = اس لئے अभिधेय~~स्य~~ = دونوں

प्रयोजनयोः = دونوں کا پرتوجن

پرتوجن — उपाय उपेय = اپائے (شاستر ہے) उपेय =

संबन्धः = سمبندھ (نقش) ہے

13/

[illegible]

इति = [illegible] व्याख्याता: = [illegible]

संबन्धाद्य = [illegible] त्रय: = [illegible]

परिभिधानमस्य = [illegible] शास्त्रस्य = [illegible]

स्पन्द इति = [illegible]

यत: = [illegible] स्पन्दतत्त्व = [illegible]

[illegible] विविक्तये = [illegible] विविक्तये"

इत्यादौ = [illegible] इत्येवं = [illegible]

व्यवहार: = [illegible]

स्पन्द-शब्दश्च = [illegible] क्रिये = [illegible]

→ स्वभाव [illegible]

परामर्शमात्रस्य = [illegible]

नित्यस्य = [illegible] शून्यता [illegible]

व्यतिरेकेन = [illegible]

कारणभूतस्य = [illegible]

14

जہاں پر کہ وہ اسا / یہ حرکت ہوتی ہے - وہ / اپنا آپ ہی ہے -

तावत् (मात्र) = اتنا ہی تک ‖ संरम्भमात्मनः = اپنے کو شروع / کرنے سے

प्राक्तन्य पराभिधानस्य = شکتی روپ پرماتما کی

पारमेश्वरस्य = پرمیشور کا جو دھرم / ہوتا ہے ‖ धर्मस्य किंचित् चलनात् = اس میں ہلچل ہوتا ہے - اس شکتی / میں کچھ حرکت ہوتی ہے

"स्पन्द" इति = اس سے اس کو سپند کہتے ہیں (حرکت)

پرانے ایرا

प्रथीनुगमात् = اس اعتبار سے کہتے ہیں

वाचकत्वेन = بولنے والا ہونے سے ‖ व्यपदिष्टः = نام لیا ہے

तत्प्रतिपादनहेतुत्वात् = اسی کو سمجھانے کے / سبب سے

شاستر کا نام بھی / سپند شاستر ہی ہے / کہتے ہیں

शास्त्रमपि इदं = یہ شاستر بھی ‖ सपन्द शब्देन = سپند شبد سے

اس شاستر کا نام بھی / سپند ہی رکھا

अभिधीयते = نام لیا جاتا ہے

विषयश्चास्य = اس کا مضمون (غرض) (اپدیش)

विशुद्ध = شدھ ‖ श्रद्धा भक्ति = شردھا اور / بھکتی

14/

प्रकर्ष = اسی کی زیادتی سے । पिशुनित = تشہیر کی ہوا

परमेश्वर = پرمیشور کا । परप्रतिपात = ذی گرہ

प्रोन्मील्यमान = اسی سے اس میں کھولا ہوا

स्वभाव = اپنے سبھاؤ کی । اسی کا । प्रालोक = پرکاش

उस से तिरस्कृत = ترسکار کیا ہوا । مجبور کیا ہوا

सकल = سارا । संदेह = شک । अन्धकारत्वात् = شک کی اندھکار والا پن کی

प्रबुद्ध = پربدھ ... (آپ سے بیدار کیا گیا)

सम्यक = اچھی طرح । उपनत = حاصل کی ہوا

दीक्षादिसंस्कारा = دیکھش وغیرہ سنسکار سے । चोदना मात्र

गुरुवचन = گرو کا کہنا । चोदना मात्र = اسی کا حکم

अवशेष = باقی رہی (بچا ہوا)

स्वात्मैश्वर्यो = اپنی آتما کی ایشوریہ اسی سے

उपलब्धि: پایا جاتا ہے

तादृशस्यैव = ویسے ہی جس کا । इह = یہاں

15

उपदेश्यत्वेन = اپدیش دیئے جانے کے   पुरस्तात् = پہلے ہی

परिगृहीतत्वात् = گرہن کئے ہوئے ہونے سے   इति = اس لیے

अभिधान = نام   विषय = وشے ہے (موضوع)

अवगन्तव्यौ = جاننے چاہئیں   व्याख्यातश्च = اور بیان کیا جا چکا ہے

प्रथम = پہلے   आदिश्लोक = پہلا شلوک

समस्त प्रकरण = یہ شلوک کا ہے سارا گرو

अर्थी उपक्षेपगर्भः پرکرن (پرشن) کا جواب دیا گیا ہے

उपक्षेपः = کہ اس کا تعلق ہے آئندہ
= ویسی گرنتھ ہوتا ہے
— یہ سارا مطلب ہوتا ہے اس کا شلوک میں ہے —

15

ननु = پرنتو सुर-नर-तिर्यगादि भेदेन
= دیوتا-منش-پشو وغیرہ میں بھید سے

फणिमत = دیا گیا ہے तनु = شریر

तनुकरण = شریر मुक्तेः = مکتی आभोगादेः = بھوگ آدی
(جو سب ان میں الگ الگ ہیں)

परिसंख्ये = بے شمار ہیں

व्याअन्तर = [illegible] भेद = بھید ہے

भिन्नस्य = جو بھی ہیں प्राणभृत = [illegible]
[illegible]

प्रच्चस्य = [illegible]

सुख-दुख-क्षुत्तृष्णा-जरा-मरणाद्यनुविद्धस्य
سکھ - دکھ - ترشنا (پیاس) بھوک - بڑھاپا - مرنا - [illegible]

= [illegible] lnyechi [illegible]

ज्ञातृत्व = ذات / اپنا [illegible] स्वच्छिन्नाभिमान [illegible]
भाजः = [illegible]

सतत = ہمیشہ [illegible] संसरतः = سنسار میں آتے ہیں - جاتے ہیں

15 परस्परदूरभिन्नो = آپس میں دور الگ ... جو بن ہے   यः = جو

स्वभावः = سوبھاؤ – یعنی فطرت   स कथं = وہ کیسے

समनन्तर = اس کے بعد   प्रतिपादित = سمجھایا ہوا

अद्भुतो भवथी = آسچریہ [illegible] ہے

प्रकारा = تفصیل سے [illegible]   प्रभेदेन = [illegible] ہونے سے

प्रतिज्ञात: = پرتگیا کیا گیا ہے

येन = جس سے   एवं = اس طرح   व्याख्यातम् = بیان کیا گیا ہے

यस्य = جس کو   सम्यक् एवं प्रतिपादित = سمجھایا گیا ہے

प्रविष्टा = داخل ہو گئے   अव्यभिचारः = نہ ٹلنے والا ہے

स कथं = وہ کیسے   प्रकारो = [illegible]

ममैव = میرا   आत्मा ? = [illegible] آتما ہو سکتا ہے

अतस्मात् = اس ہی لئے ہے

جب اس [illegible] فرقوں سے نام [illegible] لیکن تو [illegible] ہو سکتا ہے [illegible] جب اس [illegible] بعد [illegible] ہوتے ہیں [illegible]

यत्र स्थितमिदं सर्वं कार्यं यस्माच्च निर्गतम् ।
तस्यानावृतरूपत्वान्न निरोधोऽस्ति कुत्रचित् ॥२॥

यत्र = جس جگہ   स्थितम् = ٹھہرا ہوا   इदं   [illegible]

(معلول)   (یہ کارجہان)

कार्य = یہ سارا کاریہ   यस्मात् = جس سے

निर्गतम् = نکلا ہے   तस्य = اسکا (اس پرماتما کا)

अनावृतरूपत्वात् = [illegible]   اس کے سبب

न निरोधोऽस्ति = کہیں رکاوٹ نہیں ہے -

कुत्रचित् = کہیں .

'तस्य' = اسکا   यस्य = جس کا   वक्ष्यमाणस्य = [illegible]

तत्त्वस्य = پرماتما کے   'न क्वचित्' = کہیں نہیں

अवस्था = अवच्छेद = → [illegible] = देश-काले-आकारे

[illegible]

"निरोध:" = رکاوٹ → वा अवच्छेद: [illegible]

15/16

→ इदन्ता = یہ پنا   اور   इयत्ता = اتناپن

व्यपदेश = اس طرح کا   हेतु: = وجہ ہے [illegible] →

یہ واقعہ   वस्तु = وہ ماننے والی چیز ہے   धर्म: = [illegible]

"अस्ति" = ہے یہ   विद्यते = ~~[illegible]~~ ہے

कुतो हेतो = کس وجہ سے ہے
(کیوں ہے)

"अनावृतरूपरूपत्वात्" = [illegible] → जात्यादि

जात्याद्य-अभिमानरूपेण = [illegible]

मलिन [illegible]

अनावृतम् = نہ ڈھکا ہوا   अनाच्छादित = [illegible]

रूपं = [illegible]   यस्य = جس کو

तत् = وہ

तथा = اس طرح   आवृत = ڈھکا ہوا   तस्मात् [illegible]

तत्त्वे [illegible]

तस्य = اس   अनावृतत्व = [illegible]

उपपत्तिप्रतिपादनाय = [illegible]
= [illegible]

16/

विशेषणमाह = [illegible] आह = [illegible]

"यत्र स्थितमिदं सर्वं कार्यं यस्माच्च निर्गतम्" इति

"उक्तम्" = [illegible] वेद्यतया "सर्वं" = [illegible]

अवस्थितं [illegible]

यत्र यत्र = [illegible] दर्शने = [illegible]

यथा यथा परिकल्पिते [illegible]

तत् अशेषं = وہ سارا कार्यं [illegible]

कर्त्रधीन = [illegible] अधीन = [illegible]

स्वभावे = [illegible]

'यत्र' → यस्मिन = اسی میں

कर्तृत्वेन च = [illegible] वेदकत्वेन = [illegible]

अवस्थिते = [illegible]

आधेय = [illegible]

समस्तपदार्थ = [illegible] ([illegible])

आधार = [illegible] सामान्य आधार = [illegible]

[illegible]

[illegible]

16/ आधारभूत एकस्मिन

~~एकस्मिन~~ = ایک میں (آدھار) "स्थितं" = ٹھہرا

तेन तेन = اسی اسی पृथिव्यादिना = پرتھوی وغیرہ سے

घटपट = گھٹ پٹ

गवादिना = گائے وغیرہ روپेन = اس روپ سے

लब्धप्रतिष्ठं = پائی ہوئی پرتشٹھا

यत् अन्तरगतस्य = جو اس میں چھپا ہے

सर्वस्य वस्तुनः = سب اشیاء کی प्रकाशमानत्वात = اس سب پرکاش مان ہونے

स्वरूप = اپنا روپ सत्ता = نیستی ہستی سادن

सादेन

ननु = یعنی आभित्यर्थः

सूर्यादि प्रकाश = سورج چاند وغیرہ کا پرکاش

अन्तरगतं = اسی پرکاش میں } اندر جانے سے

घटपटादि द्रव्यं = گھٹ پٹ وغیرہ سب کچھ یہ گھٹ پٹ ہے

तेन तेन रूपेण = اس اس روپ سے

प्रकाशमानत्वात् = پرکاش ہونے سے

सत्ताम् = ہستی کو आसादयति = حاصل کرتا ہے

(left margin: اسی پرکاش کی اپنی ... ہستی کا سایہ ہے؟)

16

तत्रैव = ادھر ہی سنوائیدہ کار ہے

"यतः" = جس سے، "इदम्" = یہ

इत्युक्तम् = اس پر کہا گیا

उक्त = کہا، अनेन प्रकारेण = اس طرح سے

इत्याह = اس پر کہا گیا

"यस्माद्वा निर्गतम्" इति جس سے نکلا ہے

प्रधानादि कारणान्तर = پرکرت وغیرہ دوسرا سبب

اس کا جواب دیا ہے

कारण अन्तर = دوسرا کارن

परिहारेण = اسکو ہٹانے سے

اس سے "यस्मात्"

→ एक कर्तृभूतात् = ایک کرتا ہونے سے

یہ ایک کارن سے ہوا ہے

उद्भूतम् یہ "निर्गतम्"

तत = وہ, प्रथम = پہلا, अर्थः = اسکا معنی

अत्र = یہاں

17/

यः ॐ पदार्थः = [illegible] सर्वस्य = [illegible]

इदन्तया आपन्नतया = [illegible]

प्रमेयभूतस्य = [illegible]

शास्त्रेषु = شاستروں میں

नाना विभागेन = [illegible]

संगृहीतस्य = [illegible] तत्त्वव्रातस्य = [illegible]

ॐ एकः = ایک ہی प्रकाशकत्वेन [illegible]

स्थितिहेतुत्वात् = [illegible]

आधारभूतः = آدھار [illegible]

कर्तृत्वात् च = [illegible] प्रभवः → कारण [illegible]

स्वयं च = [illegible] वेद्यत्वसंस्पर्श [illegible]

[illegible] { असाधारणत्वात् = [illegible]

17

मायीय प्रमातृ = مایا والے پرماتا

प्रविषयभूतो = [illegible] ہوئے ہیں (بنے ہیں) یعنی [illegible]

ایسے प्रनवच्छिन्न = [illegible] महिमा = مہما [illegible]

निर्मल चिन्मात्रैक रूपः = [illegible]

स इह [illegible]

स्वस्वभाव = [illegible] प्रच्छेदन = [illegible]

प्रभिमतर्नि = [illegible]

न तु = نہیں تو जात्यादि = ذات وغیرہ

प्रवच्छिन्न = [illegible] प्रभिमान = [illegible]

ایسا संकोचितात्मनो = [illegible] = [illegible]

मायाप्राप्त्य अपह्नुतः = [illegible]

सर्वैश्वर्य संविदः = [illegible]

17

कार्यवर्गान्त = کاریہ ورگ انت   पातिन: = گرانے والے

प्राणि = جیو روح   बन्धस्य = بندھن کی   स्वरूपं = (اپنی ذاتی کا)

स्वस्वभाव: = اپنی آتما سروپ

इति युक्ताम् उक्तम् = اس سے ٹھیک کہا گیا

"आत्मैव प्राकर" = آتما ہی شنکر ہے

तत स्तत् वृत्तिकृता = اس لئے اس ورتی کار نے کہا ہے

"कथं पुनः स्वस्वभावस्यैव संसारिणः प्राणिवत्वेन व्यपदेशः"

"کیسے پھر اپنے ہی سبھاؤ کا (آتما کا) سنساری جیو کو شیو کہہ کر نام دیا جاتا ہے"

इति आक्षिप्य = یہ آکشیپ کر کے

"यत्र स्थितम् इदं जगत्, यस्मात् च उत्पन्नम्"

جس میں یہ جگت ٹھہرا ہوا ہے۔ اور جس سے یہ پیدا ہوا ہے۔ [اسے آتما شیو (ایشور) کہا جاتا ہے]

इति विवृणवता = اس کی تشریح کرنے والے نے

प्रतिसमाहितम् = سمادھان کیا ہے

१८

"तस्य संसायि स्थायाम्" = اس سنسار کی حالت میں

वत्तिरेवं = یوں ہی ورتی नोद्धव्या। = نہیں روکنی چاہئے

सम्संसारिणां = سنساریوں کی तथा माया = وہ مایا

अवभासित = ظاہر ہوتا ہے जात्याद्य = جاتی وغیرہ

मायीय अवस्था = مایا کی حالت کی کیفیت میں { अभिमाना (ان سب میں) }

तस्यामपि = اس حالت میں بھی तस्य = اس کا

स्वस्वभावस्य = اپنے سوبھاؤ کا

तत्त्वतो = حقیقت میں निरोधो न = رکاوٹ نہیں

अस्ति = ہے

ननु = کہئے؟ यो अयं = یہ، स्वभावस्य = [illegible] سرشت (اس)

एवं प्रतिपादितत्त्व: = [illegible] पदार्थ: = [illegible]

सः किं = وہ کیا केवलात् = صرف [illegible] आगममात्रात् = [illegible]

ओम् इति = [illegible] अभ्युपगन्तव्यः = [illegible]

उत = یا प्रगुणाभ्याम = [illegible]

उपपत्त्युपलब्धिभ्यां = [illegible] व्युत्पाद्याभ्यां = [illegible]

प्रतिपत्तिगोचरता = [illegible] न तु = [illegible]

प्राक्य: = کیا یقینی ہے ؟

([illegible])

इति = [illegible] संप्रायच्छद्दाय = [illegible]

श्लोकान्तरेण = [illegible] उपपत्ति = [illegible]

यो = جو प्रतिपादयिष्यति = [illegible]

तत् = [illegible] एवतारेण = [illegible] प्रथीम

इदं तावत् उच्यते = [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सकल प्रकरण = [illegible] ، प्रतिपाद्यार्थ, तत्त्व
اس سے جو [illegible] [illegible] =

प्रथीत तत्त्वलब्ध = [illegible] اس سے प्रतिष्ठया
= بنی ہوئی برتری سے

पराया प्रज्ञया = اونچی عقل سے (بُدھی سے) स्व स्वभावस्य
= اپنی ہستی کی جو

परामर्शावसरे = غور کرنے کے وقت پر रवि किरण
= سورج کی کرن سے

چھوئی स्पृष्ट = سپرش کیا ہوا नीहार = کُہر دُھند

ہجوم निकर = زیادتی निस्सार = نکما

ناش ہوتی नश्यता = مٹنے والی स्वरूपया = سروپیا
([illegible]) [illegible]

संप्रति तु = اس وقت ہی द्रुत = دوڑتے ہوئے - تیزی

महामोह = [illegible] (اگیان) [illegible] तिमिरात्मना
= اندھیری شکل سے

विजृम्भमाणया = جو پھیلی ہوئی

मयाशक्त्या = مایا شکتی سے प्राविष्टानां = آویش ہوئے ہوؤں کو

सर्वप्रमातृणां = سب پرماتا

पारमार्थिकात् = حقیقی سے = جو پرمارتھک वेदकात् = ویدک - یعنی پرماتا - (دیکھنے والا)

स्वभावात् = وہی سب کچھ ہوتی ہے प्रच्युत्येव = گر کر (اس سے ہٹ کر)

لینا वेद्य एव = ویدی ہی ہوتا ہے देहादौ = دیہہ (جسم) وغیرہ میں

اس پر वेदकभावेन = ویدک بھاؤ کو (یعنی ...)

ہوتا ہے स्फुटं इति = ظاہر ہے प्रत्ययः = ایسا جاننا

اس परम = بس दुर्भेदस्य = مشکل سے ٹوٹنے کا

ہوتا ہے भेदग्रन्थिमूलम् = بید گانٹھ मूलम् = جڑ ہے
(स्फुटं इति प्रत्ययः)

ततस्तेभ्यो = ان سے देहादिभ्यः = دیہہ وغیرہ سے

तस्य = اُس   अहंप्रत्ययात्मनः = میں پن کی روپ والی

स्वस्वभावस्य = اپنے اپنے سبہاؤ کا   व्यतिरेचनाय = الگ کرنے کے لیے - ان تمام دوسروں سے الگ کرنے کے لیے

समनन्तर = اسکے بعد   प्रतिस्रोतस्य = الٹا ہے

सर्वथा = بالکل   निरोधाभावस्य = نرودھ / آدرش کا ابھاؤ کا جو ہے

उपलब्धये = پانے کے لیے   स्वानुभवप्रमाणाम = اپنے انوبھو کا - جو پرمان ہے اسی کو   उपपत्तिं

प्रस्तावयन् = پرستاو کرتے ہوئے

प्राह - کہتا ہے

19/

जाग्राद्यादि विभेदेऽपि तदभिन्ने प्रसर्पति ।
निवर्तते निजान्नैव स्वभावादुपलब्धृत: ॥३॥

जाग्रादादि = جاگرت آدی کی विभेदेऽपि = اگر ان ۳ میں تبدیلی ہو رہی - اگر ان دو اوستھاؤں میں بھید بھی ہے -

تینوں اوستھائیں ایک دوسرے سے جدا جدا ہیں

तत अभिन्न = لیکن اس سے جدا نہیں प्रसर्पति = یہ پرسرپتی ہے (یہ اوستھائیں) - لیکن اس پرم سروپ کا پرم آنند ساکشی ہے -

निवर्तते = الگ ہو جاتی ہیں निजात = اپنے नैवतं

स्वभावात् = سوبھاؤ سے उपलब्धृत = سمجھنے والا
(لیکن وہ اس سے الگ نہیں ہوتا [illegible] آنند ساکشی ہے) (یہی [illegible])
(یعنی [illegible] اپنے سوبھاؤ سے [illegible])

अत: = اس لئے तस्य स्वभावस्य = اس کے (سوبھاؤ کا)

निरोध: = اس کی [illegible] نہیں ہے अस्ति = ہے

यत: = جس لئے असौ = [illegible]

"निजात" = आत्मीयात अनुपादे =
([illegible]) - [illegible]

"स्वभावात" - [illegible] स्वरूपात [illegible]

اس میں न = نہ 'निवर्तते" = لوٹتا، پیچھے ہٹتا न प्रत्यर्थ भवति

= یعنی کسی پر حاوی نہیں ہوتا ہے

یعنی بدلتا نہیں - دکھتی رہتی ہے -

→ न व्यवेत = نہیں کٹتا ہے अति संबद्धः

بہ سمبندھ ہے -

कीदृशात् स्वभावात् = اس جوہر سے کیسا - ہمیشہ ہر گز نہیں میں

'उपलब्धृतः" = پانے والا - جاننے والا → उपलम्भकात

← یعنی = اوبھوگی

یعنی → ज्ञातृ = جاننے والا

→ अनुभवितुः = اور بھوگنے والا ہے इत्यर्थः بڑا اوبھوگی ہے -

कथं च न = کس وقت بھی निवर्तते

= پیچھے نہیں ہوتا اس اوبھوگی سے ہر وقت

" जाग्रदादि विभेदे प्रसर्पति" جاگرت آدی بھید اگر

अपि" پسرتی ہے

20/

जाग्रदादिना = جاگرت آدک سے   यः : ३. "विभेदो" =

व्यतिरेकः = بنا   अवस्थानाम = [illegible]   بید

→ अन्योन्यव्यभिचारिणि = ایک دوسرے کا ولنگھن کرکے (اسی طرح [illegible])

(یعنی - جاگرت کا مت سپن میں نہ سپن کا سشپتی میں)

तस्मिन = اُن میں جاگرت وغیرہ میں   प्रसर्पति विजृम्भमाणो

(اپنے روپ سے بدلتا نہیں) - [illegible]

آدی شبد سے سپن اور سشپتی بھی لئے گئے ہیں

प्रभृति ग्रहणात् = کو آدی گرہن سے   स्वप्ने सुषुप्तावस्थे

سپن اور سشپتی حالتیں

गृह्येते = گرہن کی جاتی ہے (مطلب ہے)   स्मृत्याद्यवस्थाः
سمرتی آدی دوسری حالتیں

[illegible] ← (یہاں [illegible]) }

स्वप्नेनैव = سپن دشا سے ہی   संगृहीताः =

گرہن کی جاتی ہیں وہ (یعنی سمجھنا چاہئے)

[illegible] तुल्यरूपत्वात् = ایک جیسا روپ ہونے سے → (سپن دشا کا)

मद = [illegible] मूर्छाद्य = مورچھا آدی   अवस्थाश्च = دوسری حالتیں

सुषुप्तेन

(مد - مورچھا [illegible] سشپتی کی جیسی [illegible]) } = سشپتی اوستھا سے
گرہن کی جاتی ہیں }

तत्र = ان دونوں میں سے   जाग्रत् = جاگرت اوستھا یعنی بیداری

जागरावस्थैव शास्त्रेषु प्रसिद्धा = شاستروں میں جاگرت اوستھا ہی مشہور ہے (جاگرت یعنی بیداری)

यस्यां = جس جاگرت اوستھا میں   श्रोत्रादिभिः = کان وغیرہ

इन्द्रियैः = اندریوں سے   शब्दादीन् = آواز وغیرہ

इन्द्रिय अर्थान् = اندریوں کے مضمون

गृह्णन् = لیتے ہوئے   प्रसृतशक्तिः = جس کی طاقت پھیلی ہوئی ہو

पुरुषः = انسان   परिस्पन्दते = حرکت کرتا ہے { جدوجہد کرتا ہے

स्वप्नः = سپنا   स्वापावस्था = نیند کی حالت

यस्यां = جس میں   स्वव्यापारपरिश्रान्तैः = اپنے کاروبار سے

परिश्रान्तः = تھکے ہوئے   श्रोत्रादि = کان وغیرہ [illegible]

हि विहार = [illegible]   विरतावपि = کچھ بھی اگر [illegible] اپنے کاروبار سے

20/

मनसैव प्रसौ = من سے ہی پیدا ہوتی

विषयान परिगृह्णाति = وشیوں کو گرہن کرتی ہے

सुषुप्ते = سوشپت اوستھا गाढनिद्रारूपा = گاڑھی گہری نیند

सुखस्वापावस्था = [illegible]

मनोव्यापारस्यापि = من کے ویاپار کی بھی व्युपरमे सति = [illegible]

यत्र = جس میں व्यतीतम् = [illegible] वेद्य = [illegible]

संवेदने = جاننا तात्कालिकं = اُس وقت

न प्रास्ति = نہیں ہے

स्मृत्यावस्था = سمرتی کی حالت अनुभूत = [illegible]

विषय [illegible]

असंप्रमोषात्मिका = [illegible]

स्वप्नसदृशी = [illegible] मनसैव = من سے ہی

विषय ग्रहण = وشے کا گرہن

साम्यात् = [illegible]

२०/

मद्य: → पानातिप्रायक پینے کی زیادتی अज: = [illegible]

चित = ن हृदय वृत्ति = [illegible]

तत प्रमोषरूपा = [illegible] विकार: = [illegible]

→ नी

मूर्छा → विषाद = غم विषादि = زہر وغیرہ

भोजनादि = کھانے وغیرہ जनित = [illegible]

मोहात्मा = وہ ([illegible]) सवमादिवेदागादर।।

= [illegible] वि = [illegible]

प्रभाव साम्यात = [illegible]

= وہ برابر ہونے سے ([illegible])

सुषुप्त तुल्या = [illegible]

برابر ہیں

अन्या अपि = اور بھی या = ३. काश्चनापि = کوئی بھی

अवस्था = حالت संभवन्ति = ہو سکتی ہیں

[illegible Urdu note]

२१/

ता = [illegible] एतास्‌ एव = [illegible] अन्तर = [illegible]
... भवन्ति

एतत् निमित्तके = [illegible] अविभेदे = [illegible]

प्रवर्तमानेऽपि = [illegible] निजात् = [illegible]

उपलब्धेः स्वभावात् = [illegible] अपरो = [illegible]

न निवर्तते = [illegible] यदि = [illegible]

एक एव
~~अवस्थावत्~~ सोऽपि = [illegible] अपि = [illegible]

उपलब्धा = [illegible] स्यात् = [illegible]

अवस्था
तत् वत् [illegible] सोऽपि = [illegible]

६। विभिद्यते = [illegible] यावत् = [illegible]

तासां [illegible] विभेदे प्रसर्पत्यपि = [illegible]

अपि स्वभावात् = [illegible] अवस्थाव्यतिरिक्तात्

न विवर्तते = [illegible]

इति 'अपि' शब्दस्य अर्थः = [illegible]

21

कथं एतत् प्रतिपाद्यामहे = کیسے یہ بات سمجھائیں

یا यत = جو अवस्थास्वपि = حالتوں میں بھی

सत् = ہوتا अवस्थासु भिन्न रूपासु = مختلف حالتوں میں

परस्परं तीव्रापि = [illegible]

[illegible] स [illegible]

एकस्मात् स्वभावात् = ایک [illegible] न निवर्तते =

وہ اس سے نہیں ہٹتا - [illegible]

स इत्यत्र = اس جگہ हेतुगर्भं = [illegible]

विशेषणम् आह = [illegible] (مقصد) [illegible] (~~[illegible]~~)

आह = کہتا ہے (کہ اس ہر حالت میں [illegible])

कीदृशि = کیسی तस्मिन = وہ ہر حالت میں

प्रसर्पति = پھیلتا ہے - [illegible]

तदभिन्ने " [illegible] →

२१

अभिन्न = ابھن ایک روپो = ایک ہی روپ ہو

निर्विशेषः = فرق رہت उपलब्धृत्वमात्रेण = صرف اُپلبدھی ہونے کے ہی روپ

लक्षणेन युक्तः = اس لکشن سے یکت स्वस्वभावो = اپنا سبھاؤ - سچی ذات

व्यापकत्वेन = ویاپک ہونے سے स्वयम् = آپ ہی

अनुभूयमानो = انوبھو ہوتا ہوا यत्र = جس میں

स तथा = وہ ویسا ہی तस्मिन = اس حالت میں

(جس حالت میں سب کچھ انوبھو کیا جاتا ہے)

अवस्थाभेदेऽपि = اوستھا بھید میں بھی

उपलब्धृलक्षणस्य = اُپلبدھی لکشن کے अवस्थातु = اوستھا میں تو فرق ہے

अभेद = ابھید ہے

इति = اس طرح सर्वस्य = ہر ایک پرانی کا अत्र = یہاں

स्वानुभवः = اپنا انوبھو प्रमाणम् = پرمان ہے = ثبوت ہے योऽ = جو

तथाहि = جیسا کہ योऽहम् = جو میں سوتا تھا

स जागर्मि इति = وہی جاگتا ہوں اسی طرح आस्वापसं

22/

एक = ایک अनुसंधातृ = انوبھو کرنیوالا सूत्र = سوتر

निबद्धत्वेन = باندھنے سے स्वयम् = آپ ہی

अनुभूयमाना = انوبھو کی ہوئی जागरादयो = جاگرادیک

ऽवस्थाः = اوستھائیں

प्रसर्पन्ति = پرسر کرتی ہیں

एताभ्यश्च = اور ان سے अन्यद् अवस्थान्तरम्

اور اوستھائیں ہیں.

आनन्त्येऽपि = بے شمار ہونے پر بھی संसारिणां = جو سنساری ہیں ان کی

जन्तूनां न संभवति = جانداروں کی نہیں ہوتی (دوسری اوستھائیں مخلوقوں میں

نہیں ہیں)

अतो = اس کارن سے यथा = جیسے کہ

एकस्मिन् देहे = ایک شریر میں

अवस्थाव्यतिरिक्त = اوستھاؤں کے علاوہ کوئی نہیں

रूप

उपलब्धा = جاننے والا - انوبھو کرنے والا

व्यापकः सिद्धः = یہی سب میں وہ پایا ہے - یہ بات سدھ ہے

= ہوتی ہیں देहभेदेऽपि = وہ سبھی دیہوں میں بھی

तस्य = اس کی ویسی ہی ہر اوستھا میں उपलब्धृमात्र = ایک ہی سے

व्यतिरिक्त = الگ شریر میں نہیں اگر شریر بدل جائیں مگر

लक्षणान्तराभावात्

रूप = اس پرنچ کے = وہ اسکا روپ ہے
جو سنسار ہو رہا ہے
= بنا = وہ دیکھنے اندر ہو رہا ہے
ہو رہا ہے

प्रति प्राणि = ہر ایک پرانی کو पृथकत्वेन = بنا ہی الگ ہے

अहमिति तु = میں ہوں ایسا معلوم مायीयो = مایا کا ہوا
प्रत्ययो ہے ہے

न तात्त्विक = اصل میں نہیں

तत् = اس لئے کو व्युदासार्थमेव = ہٹانے کے لیے

प्रकरणारम्भः = اس پرکرن آرمبھ
اسے کیا ہے

सोऽपि च = اور وہ بھی उपलब्धृत्वमात्रम् = وہ اپلبدھی ہی ہے

एकं = ایک ہی स्वलक्षणं = وہ اپنی شکل سے ہے

न = نہیں व्यभिचरत्येव کبھی بدلتا نہیں
وہ کبھی بدلتا نہیں ہے

इति = ایسا स्वस्वभाव एव = اپنی سوبھاؤ ہے
प्रकार = ویسی شکل ہے
ہوتا ہے

22

इति सम्यक् = اچھی طرح । उपपादितं = سدھ کیا گیا

स्वानुभवानपह्नविनः = اپنے تجربے کو نہ چھپانے والے ہیں

प्रबुद्धान् प्रति = بُدھوں کی طرف

एताभिरेव = انہی । अवस्थाभिः = اوستھاؤں سے

योगशास्त्रेषु = یوگ شاستروں میں । प्रसिद्धास्वपि = مشہور ہوتے ہوئے بھی

जाग्राद्यवस्थासु = جاگرت وغیرہ اوستھاؤں میں

तस्य = اس اوستھا کا । प्रभेदः = بھید

प्रतिपादितो = سدھ کیا گیا । वेदितव्यः = جاننا چاہیے

[illegible] तास्वपि = ان اوستھاؤں میں بھی । संक्षेपतो = مختصر سے । लक्ष्यन्ते = [illegible]

तत्र = وہاں । ध्येये = [illegible]

चेतसा = من سے । झगिति = جلدی । प्रवृत्तिमात्रं = پرورتی (لگنا) ہی

जाग्रदवस्था = جاگنے کی حالت

23

धारना इति = دھارنا = [illegible] = कवित्प्रसिद्धा

(یعنی [illegible] دھارنا [illegible]) [illegible] =

तत्रैव = اسی [illegible] . विसदृश = [illegible] - [illegible]

प्रत्य

{ परिहारेण = اسی [illegible] ([illegible]) जान = [illegible]

समान = اسی برابر प्रत्यय = جان प्रवाह =

اسی پرواہ کی

{ एकतान तनुसंधाने = [illegible]

[illegible] स्वप्नावस्था = [illegible]

ध्यानम = [illegible] यत = [illegible]

([illegible]) [illegible] = स्याह

क्रमेण = کرم سے एकाग्र्यतिप्रायात् = [illegible]

प्रत्ययान्तरा = اور [illegible]

प्रसंकीर्ण

= [illegible]

सूक्ष्म = [illegible] ध्येयाभास = [illegible]

मात्र = [illegible] विशेषता = [illegible]

चित्तस्य = چت کی संवेद्य = جانی

सुषुप्तावस्था = [illegible]

[illegible]

دھارنا
جاگرت

دھیان
سوپن

سمادھی
سوشپتی

23 یہ سم پرگیات سمادھی

جہاں تک وترک - وچار - آنند - اسمتا [illegible] کا تعلق ہے -

या = جو वितर्क = وترک [illegible] - विचार = وچار

आनन्द = آنند अस्मिता = اسمتا - خودی

अनुरूप = [illegible] अनुगम = پیچھے جانے سے

लक्षणस्य = لکشن ہوتا ہے

संप्रज्ञातस्य (समाधि) = سم پرگیات سمادھی

आनन्द = آنند अस्मिता = اسمتا

अनुगतम् = پیچھے گیا अवस्थाविशेषम्

[illegible]

आचक्षते = کہتے ہیں (لوگ)

यस्तु =

"विराम प्रत्ययाभ्यास पूर्वः संस्कार शेषो अन्यः"

[illegible]

[illegible]

→ اسم پرگیات سمادھی

23/24

इति = اس لیے कृतलक्षणः = لکشن کیے ہوئے

असंप्रज्ञात समाधि = اسمپرگیات سمادھی ، अपवेद्य

ततः = اُس کا = [illegible]

सुषुप्तम् = سوشپتم

سوا सर्वासु = سب میں सतासु = ہوتے ہوئے अनुभवितृरूपस्य

व्यापकस्य = [illegible] सकस्य = ایک کا

स्वभावस्य = سبھاو کا सत्ता = ہستی

स्थिरैव = ٹھہری ہوئی

यतः = [illegible] सालम्बने = [illegible]

तावत् = تا ہنوز समाधौ = سمادھی میں

व्यतिरिक्त = [illegible] वेद्य = [illegible]

सद्भावात् = [illegible] लौकिकावस्थावत् = [illegible]

वेद्यकस्य = [illegible] उपलब्धुः = [illegible]

सत्वे = [illegible]

स्फुटम् एव = [illegible]

यत्र तु = جہاں پر निरालम्बनत्वम् = کسی چیز کے بغیر

अभावरूपत्वे = وہ ابھاو روپ ہونے میں

तत्र = وہاں तत्कालमेव = اسی وقت میں

वद्यासंवेदनमात्र = وہاں کا ویدن = صرف جاننا ہی ہے

न तु = نہیں ہے वेदकस्य = جاننے والے کا

दیکھو جھگڑوں میں اگر ویدن میں ہے

वेदकत्वा अभावः = جاننے والا اس کا ابھاو (جھگڑوں کا)

सुषुप्तादिवत् = سشپتی کی طرح

ततो निःसृतस्य = اس سشپتی سے نکلے کا

सा अवस्था = وہ اوستھا समतिव्यतया

دیکھا ہوا ویدن ہے = سمرتی کا وشے

वैद्यत्वम् = ویدیا کا جاننا आपन्ना = پہنچی

سدا व्यापकस्य = اس میں ویاپک کی सद्भावम् ستا ہے

अभिव्यञ्जयत् त्येन = ظاہر کرتی ہے

ये पुनः = [illegible] वेद्यसंवेदनः = [illegible]

[illegible] सामर्थ्या = [illegible] अभावमात्र = [illegible]

[illegible] व्यामोहिता = [illegible] उपलब्धारम् [illegible]

आत्मानमेव = [illegible] असत्ये = [illegible]

तान = [illegible] पुरस्तात् = [illegible] मन्यन्ते

[illegible] प्रतिबोधयिष्यति [illegible] एतत् = [illegible]

सर्वं = [illegible] वृत्तिकृता = [illegible]

जाग्रदादिनामपि भेदे प्रवर्तमाने न तस्य स्वरूपमा क्रियते।

[illegible]

इत्यादिना ग्रन्थेन = [illegible] सूचयित्वा [illegible]

विषयासक्तिदृष्टान्तेन = [illegible]

प्रमाणीकृतम् ॥ [illegible]

25/

ननु = پر بھی जागरादिषु = جاگرت وغیرہ کی अवस्थाविशेषु
خاص خاص حالتوں (وقتوں) میں بھی

स्वभावात् = اپنے سوبھاؤ کے । उपलब्धुः = اُپلبدھ

اس کے । असौ = یہ न निवर्तते = نہیں مٹتا

→ "स्वस्य" → आत्मन = اپنا (اُپلبدھ)

उपलब्धु = اپنا → ज्ञानस्य = گیان رُوپ भावात् = ہونے سے

سوبھاؤ کے اور → स्वानुभवरूपात् = اپنے انوبھو روپ سے एकरूपतया = ایک ہی روپ سے

अवस्थानात् = ایک جیسا رہنے سے = ان تینوں اوستھاؤں میں ایک طرح (انوبھو سے)

इति = ایسا । यत् = یہ بات प्रतिपादितम् = سدھ ہوا

तत कथं = وہ کیسے ہے यतः = جس سے

तासु अवस्थासु = ان حالتوں میں । 3 अनुभवितुः
= انوبھو کرنے والے کو میں

एवं विधाः प्रत्ययाः प्रादुर्भवन्ति = اس طرح کے خیال پیدا ہوتے ہیں

तत् यथा = وہ ایسے ہے جیسے

मनुष्योऽहं = میں منش ہوں ब्राह्मणोऽहं = میں برہمن ہوں

۲۵/

देवदत्तोऽहं = میں دیودت ہوں   युवाऽहं = میں جوان

वृद्धोऽहं = میں بوڑھا ہوں   कृशोऽहं = میں کمزور ہوں   स्थूलोऽहम् = موٹا ہوں

इत्यादयो = اس جیسے   देहालम्बना: = یہ دیہہ کو سہارا کر
پرتیت ہوتی ہیں

सुखितोऽहं = میں سکھی ہوں   दुखितोऽहम् = میں دکھی ہوں

इत्यादयो बुद्ध्यालम्बना: = اس جیسے بدھی کے سہارے ہوتی ہیں

क्षुधितोऽहं = بھوکا ہوں   तृषितोऽहम् = پیاسا ہوں

इत्यादय: प्राणालम्बना: = اس جیسے پران کے سہارے ہوتی ہیں

शून्यता प्रमातृ = شونیا پر آدھار والی میں   प्रत्ययश्च
= دل اور اسی قسم کی چیز ہے

کیا کیا ہے
گہری نیند میں

"नाहं किंचित् प्रवेदिषम्" = میں نے کچھ نہ جانا کچھ بھی نہیں

इति = २५/।   प्रत्यमर्श प्रत्यय = پرامرش ہو جاتا ہے
کہ میں سویا تھا

सुषुप्त्याद्यवस्थात: = سوشپتی آدی اوستھا سے
میں وغیرہ سے

प्रतिबुद्धस्य — جب بیدار ہوگی
प्रत्यवमर्शी = برایک باتنی دیکھو शून्यालम्बन: = شونیہ کشف ہوست
प्रत्यय:
प्रादुर्भवति = پادربھیس آتی ہی
त एत = وہ دہ देहादय: = دیہا دیک
सर्व एव = سار अनित्या: = انت میں
तदालम्बनश्च = اُن پر جو کشف ہے
अहं प्रत्ययोऽपि = وہ ابہم پرتی
अनित्य एव = وہ بھی پر انت ہے
इति कथं उक्तम् = اس میں کہا ہے کہ
उपलब्धुः → اپلبد وہ سوبھ کی ہے ہے
स्वभावात् असौ न = نکلی نہیں پاتی | نہیں ہٹتی
निवर्तते
इत्यत आह = اس پر کہا ہے

26/

अहं सुखी च दुखी च रक्तश्चेत्यादिसंविदः।
सुखाद्यवस्थानुस्यूते वर्तन्तेऽन्यत्र ताःस्फुटम् ॥४॥

अहं सुखी च = میں سکھی ہوں दुखी च = دکھی ہوں

रक्तः च = راگی بھی ہوں इत्यादिसंविदः = یہ اور ایسی اور جانکاریاں

सुखाद्यवस्थ = سکھ آدی اوستھاؤں ان میں अनुस्यूते = ڈوری آپ سے پرویا

वर्तन्ते = برتاؤ میں آتی ہیں ہے = ہوتی ہیں

अन्यत्र = دوسری جگہ ता = وہ स्फुटम् =
- صاف ظاہر ہے

" अहं सुखी इत्यादयो " याः संविदः
= جو جانکاریاں

ता = وہ جانکاریاں अन्यत्र वर्तन्ते = دوسری جگہ برتاؤ میں آتی ہیں

ततः = اس کارن असौ = یہ स्वभावात् = اپنے سوبھاؤ سے

एकस्मात् = ایک न निवर्तते = نہیں ہٹتا

इति = اس سوتر کا سمبندھ ہے संबन्धः

अन्तरङ्गत्वात् = اندر ہونے سے مुख्या = بڑی

बुद्ध्यालम्बनाः = بدھی کا آسرا لینے والی سمویتیں संविदोऽत्र = یہاں سمویت
निर्दिष्टाः = بتائی گئی ہیں

ग्राहिग्रहणात् तु = لیکن گرہن کرنے والے کے گرہن سے देहाद्यालम्बनाः
دیہہ وغیرہ کا آسرا لینے والی

संगृहीताः = سمجھنی چاہئیں وہ گرہن کی ہوئی

ताश्च = اور وہ पूर्वं = پہلے प्रतिपादिताः
= بیان کر دی ہیں

तेन = اس لئے सर्वा एताः संविदः = یہ سب سمویتیں

अन्यत्र = دوسری جگہ پر یہ گرہن کی ہیں यथा प्रतिपादिताभ्यः
= جیسے بیان کی گئی ہیں ان

सुखादिभ्यः अवस्थाभ्यो = سکھ آدی اوستھاؤں سے

व्यतिरिक्ते = الگ ہیں اور سکھ آدی سے सुखाद्युपलक्षधारि
= سکھ آدی کی اوستھا کو جان کر دھارن کرنے والی ہیں = वर्तन्ते

= ایلد =   ایسی ہی یہ کھڑے ہیں =

مثال
جب سمندر میں ندیاں
ملتی ہیں تو ندیاں کا
اثر ان ندیوں کا سمندر
میں سما کر وہ ایک ہو
جاتی ہیں

सरित: = ندیاں   सागरे इव = سمندر میں جیسے

तत्र = وہاں (سمندر میں)   विगलित = گھُل کر

अन्योन्यभेदा = آپس میں بھید (رنگ)   ऐक्येन = جو سمندر میں ان کا کوئی بھید نہیں رہتا

आवि: अवतिष्ठन्ते = ٹھہرے ہیں   तादात्म्यम् = ایکتا سے   आपद्यन्ते

इत्य अर्थ: —

एतत च = یہ بات   स्फुटं = ظاہر [illegible] → یہ بات ظاہر ہے

स्वानुभव = اپنے انوبھو سے   संविद्यत्वात = جاننے سے

सुप्रकटमेव = ظاہر ہے → اپنے ہی انوبھو سے صاف ظاہر بات ہوتی ہے +

अतश्च = اور اس لئے   एकैव = ایک ہی   संवित = یہ سمجھ

उपलब्ध्रूपा = جو انوبھو ہے   अहमिति =

स्फुरन्ती   [illegible]

पारमार्थिकी = [illegible]

मायाशक्ति = [illegible]   जनित = [illegible]

तथाविध = ویسی   स्वभाव = [illegible]

26/27

परामर्श अभावात = اس پر غور نہ (کرنا) کی بنیوں — ان چیزوں کی نسبت غور نہ کرنا

बलात् = پیدا اس بات سے

सुखाद्य = جو سکھ آدی دکھائی دیں

अर्थत्वं = چیز ہونے ، वस्तु = وستو وستیں

वेदकत्वेन = جاننے والے (اسکو اپنے پرجانا) معلوم کرنے والے جانتا ہے

[illegible] 3 'अहं सुखी = میں سکھی ہوں दुःखी च' = میں دکھی ہوں

इत्यादिना = وغیرہ وغیرہ سے बुध्याद्य अवस्था = بدھی آدی کی جو اوستھائیں

सामान्य अधिकरण (समान) = وشیشن = ان کی اکٹھی ہستی

उपगता = حاصل کی ہوئی 'सति = آتما ہوتی

'संविद् इति' → جو شبد ہیں बहुवचनेन Plural

निर्दिष्टा = دکھلایا گیا سے

यदि पुनः = اگر پھر سکھ سُکھادی वेद्यवस्तु संबन्धात्

= سکھ آدیک جو ہیں ویدی وستو ہیں ان کے سمبندھ سے

27/

सुखादिवत् = سکھ آدی کی طرح   संविदोऽपि = سموت بھی

अहं प्रत्ययरूपाः = او اہم پرتیہ کی شکل میں

परमार्थिता एव = حقیقی ہوں   नह्येवं = نہیں (ہے) ایسا   (۵)

اگر ایسا ہو تو [illegible]

स्युः = ہوں   यदि = اگر .

तदा = تب   स्मृति = یاد کا   प्रत्यभिज्ञाय

Then memory would not be there. ([illegible]) - [illegible]

अनुसंधानेन न स्यात् = [illegible] [[illegible]]

असति च तस्मिन् = [illegible] ([illegible])

सर्वव्यवहारोच्छेदः प्रसक्तः = [illegible]

स च = [illegible]   नेष्टः = [illegible]   नेष्टः = [illegible]

ततः = اسی ‘अन्यत्र’ [illegible]

इति निर्दिष्टस्य = [illegible]   अयस्य = [illegible]

विशेषणम् = اسی وصف [illegible]

आह = [illegible]

27

एतः संविदः = یہ سمویت कीदृशि = کیسی ہے

अन्यत्र वर्तन्ते دوسری جگہ = برتتی ہیں دوسری میں

" सुखाद्यवस्थानुस्यूते " "
سکھادیک اوستھاؤں میں ایک ساتھ جو دھاگے کی طرح ہے - پرویا ہوا ہے

सर्वेषु = سب میں सुखादिषु = سکھ آدی جو اوستھاؤں

सुख-दुख-मोह रूपेषु = جو سکھ - دکھ - موہ روپ

अवस्थाविशेषेषु = اوستھا وشیشوں میں

ہونے والی उत्पाद = پیدا ہونے (اور) विनाश = ناش ہونے کی

धर्मकत्वात् = یہ دونوں دھرم رکھنے والی (ہونے سے)

अनित्येषु = آنی جانی انت میں

वेद्यत = جانا جاتا - جانی گئی सामान्यात् = ایک جیسا ہونے سے

शब्दादि विषय شبدادی وشے دوسرے میں समान वृत्तिषु ایک سمان ورتنے والوں میں

آتما میں ایک جیسا आत्मामिति = آتما (ہے)

उपलब्धात्मकेन = پائے ہوئے روپ سے۔ एकेन रूपेन

ایک روپ سے =

व्यापकतया स्थिते = پھیلا ہوا ہو کر

سمایا ہوا

= ٹھہرا ہوا (रहता है)

यतः جو अहं सुखी = میں سکھی ہوں

दुःखी च اور دکھی

इत्येवमादिषु प्रत्ययेषु = یہ اور اس طرح کے دوسرے تجربوں میں

उल्लसत्सु = چمکتے ہوئے۔ द्वौ अर्थौ =

دو ارتھ

स्फुरतः = ابھرتے ہیں۔

एकः सुखाद्यात्मा = ایک سکھ وغیرہ روپ۔

वेद्यरूपः = دوسرا جاننے کے قابل

जो स ~~वेद्य~~ جو वेद्यत्वादेव جاننے کے قابل ہونے سے ہی

घटादिवत् = گھڑے وغیرہ کی طرح अनित्यत्वेन

نہ نت ہونے سے

नानात्वेन च = اور کئی ہونے سے۔

प्रतिपद्यते سمجھا جاتا ہے

प्रादि = بہت سے - (؟)

۲۱/۱/۷۰ प्रमामिति = علم प्रपरे: دوسرا

वेद्यकरूप: وہ جاننے والا (روپ) सच = وہی دیکھنے والا ہے

पूर्वापरावस्था پہلی والی - بعد والی حالتوں میں (ان دونوں حالتوں میں)

व्यापकत्वेन = پایا جاتا ہے (ان میں) لہذا

समस्त प्रमातृ प्रसिद्धः = یہ ان میں وہ سارے پرماتا یہ پرسدھ ہے

सकल = سارے کے अनुसंधानस्य جو ملاتا ہے
व्यवहारहेतो:
कर्ता = وہ انوسندھان ہے (پرمیشور)

कर्ता = کرنے والا

لہذا وہی नित्य = ہے उपलब्धिमात्र
[illegible] = रूपत्वात्

एकस्व = وہ ایک प्रकाशते = چمکتا ہے

तत् स्वयम् = وہ اس سے यथा = جیسے

जाग्रदादिना = جاگرت وغیرہ हेतुना = سبب سے
विभेदे

प्रसर्पत्यपि = پھیلتا ہوا بھی

अयम = یہ جو ایک अभिन्न = نہ ہی جدا

स्वलक्षणा = اپنی شکل سے (… [illegible])

एकएव यतः = ہو ایک ہی [illegible]

तथा = ویسا ہی जाग्रदाद्यवस्थ = [illegible]

प्रस्तरगत = [illegible]

सुखित्वादि = سکھی وغیرہ [illegible]

प्रत्यय [illegible] संतानेन = [illegible]

हेतुना = اسی کارن سے विभेदे = بھید سے

प्रवर्तमानोऽपि = [illegible] अभिन्न = نہ ہی

स्वलक्षणा = اپنی شکل سے एकएव = ایک ہی ہے

यतः = [illegible] इदापि = [illegible] योऽहं सुखी = جو میں سکھی

जातः = ہوا تھا स = وہ इदानीं = اب

दुःखी = دکھی स्तो = [illegible]

अवस्थ स्थिता = [illegible] इति = [illegible]

९८/

इति = ایسا एक = ایک

अनुसंधातृषि = ... کو جاننے والا اس کا

विवद्ध एव = گندھن میں آئی ہوئی - بندھی ہوئی

अवस्था = (حالت) प्रतीयन्ते = معلوم ہوتی ہیں

तस्मात = اس لئے अनन्त = بے حد जन्तु = جاندار

संतान = اولاد वार्तिभिः = زمانوں میں آئی =

अशेषैः अवस्था विशेषैः = سب حالتوں سے

ईषदपि = ذرا بھی अनउपजनितो = نہ پیدا ہوئی

५ | उपलब्धृमात्र स्वभाव = جانے والی کی طرح

अन्यथा भावः = (تبدیلی) دوسری طرح

جو نہ تبدیل ہونے والی ہو = غیر متغیر، بے تبدیل

سدا۔ स्वयंसिद्धो = سدا ہی آپ سے ہی موجود

ابدی نित्य निरावरणा रूपत्वात् - ننگے، ازلی ابدی - اسی لئے

सर्वत्र = ہر طرف अनिरुद्धः = بغیر رکاوٹ کے

तात्त्विकः = حقیقی ہوئی : ہوئی

स्वस्वभाव एव = اپنا سوبھاؤ ہی प्रकर = شکر ہے

اسی سے یہ کہا : तत् एतत् :

"स च अनुस्यूत एव सर्वासु अवस्थासु"

"یہی گنوں سب میں سمایا ہوا ہے سب حالتوں میں"

इत्यादिना व्याख्याय = اس سے کہہ کر بیان کرکے

'........ स स्वभावः परः स्मृतः' ॥

وہ سوبھاؤ ہے پرم کہا گیا ہے –

३

489 244
279
44

एव स्वस्वभावस्य = اپنے ہی سوبھاؤ کا शिवत्वेन = شو پن سے

व्यपदेशो = نام युक्तः = ہو گا इति یہاں

उपाद्य = سمجھا کر इदानीं = اب تو तस्य = اس کے سوبھاؤ کا

संग्रहेण = مختصر کر لکشणम् = نشان

अनुवदन = دہرا کر. परमार्थसत्तो = حقیقی سچائی

प्रतिपादयितुम = [illegible] प्राह = [illegible]

न दुखं न सुखं यत्र न ग्राह्यं ग्राहको न च ।
न चास्ति मूढभौऽपि तदस्ति परमार्थतः॥ ५॥
वो

न = [illegible] दुखं = [illegible] न = [illegible] सुखं = [illegible] यत्र = [illegible]
न = [illegible] ग्राह्यं = [illegible] ग्राहको = [illegible]
न च = [illegible] नचास्ति = [illegible] मूढभावोऽपि = [illegible]
तदस्ति = [illegible] परमार्थतः = [illegible]

"तत" = [illegible] → वक्ष्यमाण विशेषणं = [illegible]
वस्तु = [illegible] स्व स्वभाव [illegible]
शब्द वाच्यं = [illegible]
"परमार्थतः" = [illegible] तत्त्वतः = [illegible] परस्ति = [illegible]
तद्व्यतिरिक्तं = [illegible] सर्वम = [illegible]
असत्य सद्भावम् [illegible] इत्यर्थः = [illegible]

29/30.

किं तत् ? = وہ کیا ہے यत्र = جہاں न = نہ

दुःखं = دکھ ہے न सुखं = نہ سکھ ہے न च ग्राह्यं = نہ گرہن جوگ ہے

न ग्राहको = نہ گراہک ہے न सद्भावोऽपि = نہ ہستی کا ہونا ہی परास्ति

परं न = پرے نہیں سुखादिरूपता = سکھ دکھ روپتا (سکھ دکھ وغیرہ کی صورت)

प्रतिषेधेन = نشیدھ سے वेद्यत्वम् = ویدیہ ہونا अस्य = اس کو ویدیہ ہونا

प्रतिषिध्यते = نشیدھ کیا جاتا ہے (یعنی ویدیہ نہیں ہے)

30

ویدیہ اشیا دو قسم کی ہیں

क्षिति द्विविधं = دو طرح کا ہے हि = کیونکہ वेद्यम् = ویدیہ

बाह्यम् आभ्यन्तरं च = اندر کی اور باہر کی ویدیہ یعنی باہر اور اندر ویدیہ ہے तत्र = ان میں

आभ्यन्तरं = اندر کی ویدیہ ہے सुखादि = سکھ دکھ

وہ جو من سے ویدیہ ہے अन्तःकरण = انتہکرن سے वेद्यत्वात् = ویدیہ ہونے سے

तत् = وہ यत्र = جہاں नास्ति = نہیں ہے

(جہاں تو انتہکرن سے ہی لین رہتا ہے اور وہ ویدیہ کچھ نہیں ہے)

प्रतिपादित = ثابت کیا विविक्त = الگ वेदकैक = ویدک ہی (ودیا ہی)

स्वभावत्वात् = سبھاؤ ہونے سے (صرف ودیا ہونے سے) तस्य = اس کا

30/

बाह्यं तु = باہر کا [illegible] तु = بھی

शब्दादि वेद्यं = شبدادی کو وید [illegible] میں तत = وہ

وہ اندر کا / جو گراہیہ شبد سے

ग्राह्य शब्देन = اس وہ گراہیہ شبد سے निर्दिष्टं = نام لیا گیا ہے

श्रोत्रादि = شروتر آدی کان [illegible] बाह्य इन्द्रियै باہر کی اندریوں

गृहीते = گرہن کیا ہوا ہے हि = کیونکہ

तत = وہ अन्तः करणेन = اندر کرن سے – من سے / بدھی سے

सुखाद्यात्मके = سکھ آدی والے

वेद्यते = وید کیا جاتا ہے तदपि = وہ بھی

यत्र = جہاں नास्ति = نہیں ہے

न हि तस्य रूप = نہ اس کا روپ [illegible] ہے

शब्दादि विषयात्मकत्वेन = شبد آدی وشیوں [illegible] نہیں ہے ग्राह्यताम = گراہیت کو [illegible]

आपद्यते = ہوتی ہے

ग्राहकोऽपि = گراہک بھی وہ मायीयः प्रमाता =

مایا والا جو پرماتا ہے (وہ [illegible]) [illegible]

جس میں پایا جاوے ~~ग्राह्य~~ = جہاں विवक्षित: = بیان کرنا چاہتے ہیں

न तु = نہیں ہے مگر پایا تात्त्विक = سچے ہے

उपलब्धिमात्र स्वरूप: = جو صرف جاننا ہی ہے (وہ حقیقت میں)

तस्य .... (وہ تو اس وقت میں ہے جس نے صرف جانا پہچانا گیا)

~~तस्य~~ एव मायीयो = اسی طرح کا پایا देहाद्य हंकारमयो

وہ دیہہ یک آتما اہنکار سے ہوئے

ग्राहकोऽपि = وہاں بھی گراہک بھی यत्र = جہاں

नास्ति نہیں ہے

ग्राहकाभिमानी ~~हंकारमयो~~ گراہک ہونے کا اگر ابھیمان

وہاں ग्राहकोऽपि = گراہک इन्द्रियम = بیرونی

इति व्याचक्षते = اس طرح کہتے ہیں

तदपि وہ بھی (جس) وہ گراہک यत्र नास्ति = جہاں نہیں ہے

सर्वग्राह्य-ग्रहणस्वरूप व्यतिरिक्तो = اس گراہیہ گراہن سروپ سے

- اس سے الگ ہے

جہاں ग्रहीतृमात्रस्वभावं = صرف گراہک ہی ہونے والا

यत

तत्त्व = وہ تو ہے جس کو ... तत: = وہ अस्ति इति: = ہے کہ

243 486
267
243 43

31

ननु च = [illegible] एवं सति = [illegible]

[illegible] मूढावस्थैव = [illegible] असौ = وہ

प्रतिपादिते = [illegible] भवति = ہوتی ہے

तस्यां हि = [illegible] सुखादिरूपता ~~भाव:~~ = [illegible]

अभाव: = [illegible]

एतत् = یہ بات निराकर्तुम = [illegible]

आह = کہا

"न चास्ति मूढभावोऽपि" = [illegible] मूढस्य = [illegible]

[illegible] भावो = [illegible]

→ मूढत्वे = [illegible]

वेद्यवेदनसामर्थ्या अभाव: = [illegible]

सोऽपि = [illegible] यत्र = جہاں

न अस्ति = [illegible] न विद्यते =

یہ سب کچھ جانتا ہوں [illegible]

यतः = چونکہ तस्यापि = اس کا بھی अवस्थान्तरे = دوسری حالت میں

मूढोऽहमासम = میں بیوقوف تھا (بیہوش تھا) (دوسری حالت میں)

इति प्रत्यवमृष्यमानत्वात् = اس طرح پرامرش ہوتے ہوئے

वेद्यत्वे स्थितमेव = اس کو بھی جاننے والا ہونا ثابت ہی ہے — اس کو بھی جاننے والا ہونا ثابت ہے۔

केवलं = صرف तत्कालम् = اس وقت میں (یعنی اسی وقت) = (بیہوشی)

अनुपलम्भः = نہ ملنا ؟

वेद्यत्वसद्भावे = جو جاننے والا ہونا ثابت ہو — ہونے پر

मा दशावस्थायाः = اس حالت کو कथं = کیسے

वेदकैकस्वभाव = ایک جاننے والا ہو

वस्तुरूपत्वे = جاننے والا ہو स्यात्. — کیسے ہو سکتا ہے

३।

यदेयवं = [illegible] ~~मूर्द्धन्यस्थान~~: मूर्द्धभावोऽपि [illegible]

नास्ति = [illegible] ([illegible])

तत्प्रतिपत्ति [illegible] गोचर [illegible] समस्त वेद्य वस्तु रूपता = [illegible]

[illegible] रू प्रतिषेधात् = [illegible]

अभावमात्रं तत् = ([illegible]) [illegible]

इति प्रतिपादितं स्यात् = [illegible] तत = [illegible]

प्रतिक्षेपार्थम = [illegible] आह = [illegible]

तदस्ति परमार्थः = [illegible]

यत = इ एवं = [illegible] विशिवृत्त्या = [illegible]

व्याख्यातं = [illegible] तत = [illegible] वस्तु = [illegible]

परमार्थतः = [illegible] अस्ति = [illegible]

[illegible] स्ततम = [illegible] अविलुप्तो = [illegible]

उपलब्धमात्र = [illegible] लक्षणा = [illegible]

31

स्वभावत्वात = سوبھاؤ کی وجہ سے (ان کو ودیہ سے الگ نہیں کیا جا سکتا ہے - یہجان نہیں)

यत्र पुनः = جو پھر اور सुखादि = سکھ وغیرہ

तत = وہ कल्पनामात्र= کلپنا ماتر लब्धात्मकं = میں بنے ہوئے سروپ سے

क्षणभङ्गुरः = کچھ ہی لمحوں میں ٹوٹ جانے والا सर्वदा = ہمیشہ वेद्यमेव = ویدیہ ہی (جو ہمیشہ جاننے میں آنے والا ہی ہے)

वेदकैकस्वभावात् = ویدک ایک سوبھاؤ والا ہونے سے

आत्मनो = آتما کا नो दूरभिन्नम्

نہیں ہے - کہ جو ویدیہ ہے وہ آتما سے الگ نہیں - نہیں = नो (یہ ویدیہ وستو) ... = नो

एतो = اس طرح यत यत = جو جو

वेद्यभूमिकायां = ویدیہ بھومی میں वर्तते میں آتا ہے तत् सर्वम् असत् = وہ سب اسَت ہے

لیکن अनित्यत्वात् = نہ نِتّیہ ہونے سے

यस्तु वेदकः = جو ویدک ہے स एक एव = وہ ایک ہی ہے

परमार्थसन् = پرمارتھ ست ہے इत्यर्थः = یہ اس کا ارتھ ہے

"तस्य चायं स्वभाव": = اس کا یہ سوبھاؤ ہے

इत्यादिना ग्रन्थेन = اس کی شرح ورتی کار نے کی ہے
वृत्तिकृता व्याख्यातम् ॥

इदानीम् = اب । अस्य = اس । परमार्थसत = سچ وست ہے

आत्मन = آتما کا एवंविधस्य = یعنی شو کا

समस्तवस्तुसंपादन स्वतन्त्र = سب وستوں کا سدھ کرنا اور پیدا کرنا

शक्तित्व प्रति = اسی اندر وہ ہو سکتی ہے

प्रतिपादन पूर्वम् = اسی کا جو سدھ کرنا ہے

उपादेयतमत्वम् = یہی رکھنے والا ہے

उपदेष्टृ युगलक्रम = یہی اس کا ... आह = یہ سوتر کہتا ہے

यतः करणवर्गोऽयं विमूढोऽमूढवत्स्वयम् ।
सहान्तरेण चक्रेण प्रवृत्तिस्थितिसंहृतीः ॥
लभते तत्प्रयत्नेन परीक्ष्यं तत्त्वमादरात् ।
यतः स्वतन्त्रता तस्य सर्वत्रेयमकृत्रिमा ॥
॥६॥ ॥७॥

यत: [illegible] करणावर्गो = [illegible] अपि = [illegible]

विमूढो = بیوقوف [illegible] मूढवत् = بیوقوف کی طرح

स्वयम् = آپ ہی [illegible] - साक्षात = سامنے अन्तरेण = [illegible]

चक्रोन = [illegible] प्रवृत्ति - स्थिति - संहृती = [illegible]

(margin) [illegible]

लभते = پاتا ہے तत = وہ

प्रयत्नेन = کوشش سے परीक्ष्यं = پرکھنا چاہیے

तत्त्वम = [illegible] , पादरात = [illegible]

यत: = [illegible] स्वतन्त्रता = [illegible] तस्य = اس کی

सर्वत्र = ہر جگہ इत्थम अकृत्रिम = [illegible]

"तत तत्त्वे" = [illegible] स्वस्वभावाख्यं [illegible]

वस्तु परमार्थ सत्त्वेन = [illegible]

अवस्थितं = [illegible] 'प्रयत्नेन' = کوشش سے

→ प्रकृष्टेन = [illegible] यत्नेन = کوشش سے सततम् = [illegible]

अविलुप्तेन = [illegible] उद्योगेन = [illegible]

33/

(ا) "आदरात्" = آدر سے → श्रद्धातिशयात् = (اسکی بہت شردھا کی زیادتی ہونے کی وجہ سے.

(ب) "परीक्ष्यते" → = بڑی تحقیق کیا جائے ٹھوک بجا کے

'सर्वासु अनुभवदशासु = سب حالتوں جو انوبھو کی ہیں - جاگرت سپن سشپتی

वक्ष्यमाण उपदेशानुसारेण = جو آگے اُپدیش کئے جائیں گے اُن کے مطابق سے

क्रमेण = اُسی کرم سے

वेद्यवेदकलक्षण = ویدیہ اور ویدک کی لکشن

राशि द्वय ڈھیر جو دو ہیں - یہ دو

विभज्यमान = بانٹی جاتی ہیں   परतया = اس طرح ہونے سے

वेदकस्वरूपपरामर्शात् جب سے ویدک کے اسکے سروپ کا پرامرش کرنے سے

आत्मत्वेन = اُسی کو آتم روپ سے

स्फुटीकार्यम् = صاف پرکٹ کیا جاوے.

"यतः तस्य इयम्" جس سے اُس کی یہ

→ अधुनैव = ابھی ابھی   प्रस्तुत = پرستُت میں

व्याख्याना (under discussion) جو زیر بحث ہو

३९/

" "स्वतन्त्रता" " = سوتنترتا →

[illegible] کی اچھا کرنا ۔ سب کام اپنی [illegible] یعنی = स्वेच्छामात्राधीन

= سروکرتا → सकलकार्यकर्तृत्वरूपा

"सर्वत्र सर्वस्मिन् [illegible] = ہمارے سب میں ۔

देहे दशाविशेषे वा अवस्थितस्यापि = [illegible] "अकृत्रिमा" = → نہ کہ بنائی

सहजैव = [illegible]

[illegible] न तु = [illegible] उपादान सह = [illegible] [illegible]

कार्यादिकारणान्तर = [illegible]

अपेक्षिणी = اسطرح کی والی यतः - [illegible]

संसारिणामपि [illegible]

तत्स्वातन्त्र्यमहिम्नैव = [illegible]

समस्तव्यवहार = [illegible]

संपत्तिः [illegible]

मायाव्यामोहवशात् = [illegible] तु = [illegible]

सत्य = [illegible] स्वभावपरामर्श [illegible]
[illegible] अभावात् [illegible]

۱ سا सर्वः संसारी परतन्त्र इव व्यवहरति = سب سنساری پرتنتر کی طرح [illegible]
اور دوسروں کے [illegible]

सर्वक्रियासु = سب کاموں میں व्यतिरिक्त = بغیر

कारण = کی وجہ अपेक्षा = احتیاج کرنا

۱ سیر सर्वार्थी = سب ارادوں کا سिद्धिकत्वात् =
[illegible]

तस्मात = اس لئے स्वाभाविक = قدرتی

स्वतन्त्र्ये = [illegible] प्राप्तये = [illegible]

तत् तत्त्वं परीक्ष्यम् = اس کی [illegible]
[illegible]

न तु = نہیں [illegible] सुख - दुःख - मोह = [illegible]

ग्राह्यग्राहक = [illegible]

रूप = [illegible] प्रतिषेधात

तत = [illegible] [illegible] =

अवस्तुभूतम = [illegible]

अवगन्तव्यम् इति [illegible] उपदिष्टम् = [illegible]

33/34

इदानीम् = اب "इयम" = یہ

इति निर्दिष्टां स्वतन्त्रतां = اس طرح بتائی ہوئی آزادی کو ثابت کرنے کے لیے =

प्रतिपादयितु = ثابت کرنے کو [illegible] यद्दुकद विशिष्ट =
'यत्' سے شروع ہونے والے

विशेषणां = وشیشن سے व्याख्यायते = واضح کیا جاتا ہے

कि = کیا तत् तत्त्व = وہ عنصر
परीक्ष्यं ? جس کی پرکھ کی جانی ہے =

'यतो: جس → यस्मात = جس سے

'प्रत्यं कारणवर्गः" = [illegible] → करणानां = श्रोत्रादीनां آلات کا

बाह्यानां = بیرونی [illegible] मनः प्रभृतीनाम् من وغیرہ کا

आभ्यान्तरणाम् = اندرونی [illegible] = وغیرہ

→ इन्द्रियाणां वर्गः = اندریوں کا مجموعہ ۱۳ त्रयोदशाकरणसमूहः

४५ 'प्रवृत्तिस्थिति संहृतीः = شروع ہونا قائم رہنا اور ختم ہونا
लभते [illegible] -
- [illegible]

34/

→ 'प्रवृत्ति:' = (ظاہر → जिघृक्षिता ~~थों स्थिति~~ ताथों विश्रान्त्यव
[illegible] =

— उन्मुखतासम = [illegible] उन्मुखावस्था
[illegible] =

'प्रवृत्ति' = [illegible]

ظہور = उ: — = [illegible]

जिघृक्षितार्थोन्मुखता
समुपगृही — = اس پر قرار [illegible]
[illegible] — 'संहृति'

سمٹاؤ 'संहृति' = कृतकृत्यत्वात्
[illegible] =

बाह्यार्थ परित्यागे = [illegible]
- [illegible]

स्वव्यापारोपरम: = [illegible] उपरम: = [illegible]

ظہور प्रत्यस्तमयावस्था = [illegible]

35/

प्राप्नोति

एता = یہ سب — [illegible] "लभते" = پاتی ہے

कीदृशः कारणावली: = کیسی ہے یہ سلسلۂ اسباب

"विमूढः" = موڑھ प्रायशः — زیادہ تر

जडतयैव = مورکھتا سے ہی प्रसिद्धः = مشہور ہے

कथं लभते ? = کیسے پاتا ہے

"प्रबुद्धवत्" = پربدھ کی طرح चेतनवत् → چیتن کی طرح

सतत् उक्तं भवति = کہا گیا ہے

प्राकृत = معمولی لوگ जडमपि = جڑ کو بھی

बाह्याभ्यन्तरम् इन्द्रियचक्रं = باہر اندر کا اندریوں کا چکر

سرس प्रवृत्त्यादि = پرورتی وغیرہ चेतनव्यापार = چیتن ویاپار ہے

समर्थ = اس کام کی طاقت رکھتا ہے

جیسا यत् = جس کے संस्पर्शबलात् سپرش سے

भवति = اس کو سپرش سے ہوتا ہے

तत् तत्त्वम् = وہی تتو ہے आत्मत्वेन = وہی آتما کی صورت میں ہے

ایسا स्फुटीकृत सत् = واضح کیا گیا — ظاہر کیا ہوا

34/35

सत् = [illegible]

इन्द्रिय = [illegible] चैतन्य . [illegible] ज्ञापादन

[illegible]

स्वातन्त्र्यवत् = سواتنتری والا सर्वविषय

= سب وشے

१ स्वातन्त्र्यलाभाय سواتنتریہ لابھ کے لیے कल्पते स्व

= [illegible]

एतः = [illegible] परीक्ष्यं = [illegible]

येन = جس سے अभ्यासदशायामेव

= ابھیاس دشا میں ہی - [illegible]

अभिव्यज्यमान = [illegible] स्वातन्त्र्ये

= [illegible]

१ परशरीर = دوسرا = شریر

(دوسرے جسم پر)

आवेशादि = آویش آدی क्रीडा [illegible]

35

उपपद्यते = ہو سکتی ہے   तत् = وہ

इदम् = یہ

' न च सुखादिरूपो यदा नासौ '

نہ سکھ وغیرہ شکل ہے جب یہ نہیں ہے

'तस्मात् तत्त्वे यत्नेन परीक्षितव्यम्"

तत तत्त्व = اصلیت   तस्मात् = اس لئے   यत्नेन = کوشش سے

परीक्षितव्यम् = پرکھی جانی چاہئے

इत्यादिनाच = وغیرہ سے بھی   पृथक = الگ

व्याख्याते = بیان کئے گئے   वृत्तौ — شرح میں

ननु किमिदमुच्यते = یہ کیا بات کہی جاتی ہے तत् = وہ

किंचित् = کچھ تھوڑا سا तत्त्वं = [illegible]

परीक्ष्यते = پرکھا جاتا ہے यस्मात् = جس سے

इन्द्रियाणि = اندریاں चेतनीभवन्ति = چیتن ہوتی ہیں

[illegible] किल = [illegible] एवं = اسی طرح व्यवहारो = [illegible]

व्यवस्थितः = [illegible] सर्वैः = سب

कश्चित् = کوئی चेतनः = چیتن प्रमाता = پرماتا

धर्माधर्म = دھرم ادھرم सम्बन्धात् = سمبندھ سے
(اچھا یا برا کام کرنے سے)

इच्छाख्येन गुणेन = اچھا نام گن سے संयुज्यमानो = اس سے ملا ہوا

हेय = [illegible] उपादेय = [illegible] एवा [illegible]

विषयभूते = [illegible] प्रयत्नवान् = اس پر یتن والا

भूतो = ہوا तेन च इच्छाख्येन गुणेन = اس اچھا نام گن سے

35

कृषीवर्गो = [illegible] जडमेव = [illegible]

तत् तत्र विषय = [illegible] ज्ञानोपादाना[दि] [illegible]

प्रेरयति = [illegible]

स च = وہ तत्प्रेरितो = [illegible]

जड एव = [illegible] दात्रादिवत = [illegible]

स्वकार्य = [illegible] करोति = کرتا ہے

तत = وہ कथम = کیسے उत्तम = [illegible] यतः = [illegible]

कारणभूतात = [illegible] ,पमूढवत [illegible]

प्रवृत्त्यादि = [illegible] लभते = پاتا ہے

इति व्याख्यातं च = [illegible]

यत्संस्पर्शनलाभात = [illegible] हेतोः = [illegible]

प्रवृत्त्यादि [illegible] चेतनव्यापार = [illegible]

संपादन = [illegible] समर्थो = [illegible]

भवति = ہوتا ہے

इत्याद्याऽऽव्य = [illegible] यथा = [illegible]

स्वस्वकारस्या वंशः = [illegible] चेतनीभवति [illegible]

तथा = [illegible] संसारि पुरुषस्य = [illegible]

व्यवहार प्रदर्शीनेन = [illegible]

स्फुटीकृतुम = [illegible] प्राह = [illegible]

नह्रीच्छानोदनस्यायं प्रेरकत्वेन वर्तते ।
अपि त्वात्मबल स्पर्शात् पुरुषस्तत्समो भवेत ॥८॥

नहि = [illegible] इच्छा = [illegible] नोदनस्य = [illegible]

अयं = [illegible] प्रेरकत्वेन = [illegible] वर्तते = [illegible]

अपितु = [illegible] आत्मबल = [illegible]

स्पर्श = [illegible] पुरुषः तत समो भवेत = [illegible]

36/

"नहि" = [illegible] → न खलु = [illegible] "इच्छा नोदनस्य"
[illegible] =

→ इच्छैव नोदने = [illegible] । नद्यते = [illegible]

,प्रेरणे इति = [illegible] → प्रतोदि करणं [illegible]

तस्य = [illegible] प्रेरकत्वेन = [illegible] ([illegible])

इन्द्रियवर्गं प्रति = [illegible] . नोदकत्वेन [illegible]

,प्रसौ = [illegible] → संसारी प्रमाता =
[illegible]

"वर्तते" → ,प्रवर्तिष्यते = [illegible] यथा = [illegible]

कश्चित = [illegible] देवदत्तादि = [illegible]

केनचित = [illegible] कारणभूतेन = [illegible]

हस्तादिना = [illegible] उष्ट्र = [illegible]

प्रतोदादि = [illegible] प्रेरयति = [illegible]

न एवम् = [illegible] "परं" = [illegible]

स्वान्तरः [illegible]

36/

'पुरुष' = پُرُش کو 'इदभ्या' = [illegible]

अङ्ग करवावेंगे = جُز و [illegible]

स्वविषये = اپنے [illegible] प्रवर्तयति = پرتش میں لاتا

एति तु = تو پھر आत्मवलम्बन स्पर्शाति = [illegible]

→ आत्मा: = آتما परस्य = دوسرے کی

प्रमाता: = [illegible] सर्वकर्तुं = سب کچھ کرنے کی

ईश्वरस्येव = ایشور کی طرح

स्वस्वभावस्थैव = اپنے سبھاؤ میں यतवले = جو

→ सामर्थ्य = طاقت कारणान्तरैः = دوسرے کارنوں سے

निरपेक्ष्येण = [illegible] अखिल = سب

वस्तु = وستوؤں संपादन = پیدا کرنا

ज्ञातता = اس پر ظاہر ہوتا

तत् स्पर्शात → = اسکے سپرش سے → तत्

तत सेपकीत = [illegible]

37/

४ "तत्समो भवेत्" = وہ اس کے مثل بنتا ہے

तेन = اس آتما سے یعنی आत्म = [illegible] शब्दो तेन

[illegible] = परेशा कर्त्री

तुल्य: = اس کے مثل برابر संपद्यते = بنتا ہے

इदम = یہ سب = مطلب ہے

यत्रैव = جس میں स्वस्वभावे = اپنے اپنے سبھاؤ میں स्थित्वा = ٹھہر کر

आत्मशब्दोक्ता प्रतिपादितं = جو آتما شبد سے بیان کیا گیا ہے

जगादिदं = یہ جگت परमेश्वरो प्रवृत्तिस्थितिसंहृती = پیدائش - قائم رہنا - اور برباد ہونا

यथेष्टं = اپنی اچھا سے लम्भयितुं = حاصل کرنے کو

४ स्वतन्त्र: = سوتنتر خود مختار ہے

तत्रैव = اسی میں स्थित्वा = ٹھہر کر पुरुषोऽपि = پرش بھی

अपि = بھی संसारी करणार्थं اس سنسار کے

स्वविषये = اپنے وشے پر

प्रवृत्त्यादि = پرورتی - قائم رکھنا

37

लम्भयितुं = سمجھانے کے لئے स्वतन्त्रः = سوتنتر ہے (خود مختار)

तेन = اس لئے तत्समो भवेत् = اس کے سمان بنے گا

इति उक्तम् = ایسا کہا ہے

ततो = اس سے यथा = جیسا کہ ईश्वरः = ایشور

सर्वव्यापिकाभ्यां = ساری میں ویاپک

ज्ञान क्रिया ख्या (दो) = گیان اور کریا نام

शक्तिभ्यां = شکتیوں سے विश्वं = دنیا کو

प्रवृत्त्यादि = پرورتی آدی میں
سنسار کو
प्रापयन् = پہنچاتا ہوا

सर्वं जानाति च = سب کچھ جانتا بھی करोति च
سب کچھ کرتا بھی ہے

(گیان اور کریا شکتی سے) ہے

तथा = اسی طرح पुरुषः = پرش

तत नलस्पर्शादिव = آہن پر مس سے

उपजात सत्वकर्तृत्व = اُسے ہو جانے والے
ادر کرتا ہونا ہے

सामर्थ्यो سمرتھیوں سے

مایا مایا के वश से
मायावशात् = مایا کے وش سے

नियत विषयाभ्यां = [illegible] ज्ञान-क्रिया-शक्तिभ्यां = گیان - کرم

([illegible])

अन्तर बहिरूप करणावगतया = [illegible] प्रसृताभ्यां = [illegible]

[illegible]

स्वविषयं = [illegible] जानाति च = [illegible]

([illegible]) करोति च = [illegible]

([illegible])

इति = [illegible] । तत् साम्यम् = [illegible] उत्तमं = [illegible]

पुरुषस्य ([illegible])

'न च इटश्चाप्रेरणेन करणानि प्रेरयति'

[illegible]

इत्यादि = [illegible] विवृतम् [illegible]

उक्तं = [illegible] वृत्तौ = [illegible]

ननु = [illegible] स्वव्यापारे [illegible]

करणवर्गं = [illegible] प्रवर्तयन् [illegible]

पुरुषः = [illegible] ईश्वरभूमिकां [illegible]

प्रासादनात् = [illegible] तद्वत् [illegible]

स्वातन्त्र्यम् = [illegible] प्राप्नोति = [illegible]

इति तयो = [illegible] ईश्वरपुरुषयोः [illegible]

प्रभेदः एव = [illegible] प्रतिपादितः [illegible]

([illegible]) स्यात्

१ कथं = [illegible] भेदनिबन्धनम् [illegible]

ईश्वरसाम्ये = [illegible] पुरुषस्य = [illegible]

प्रतिपादिते = [illegible] तस्यां दशायाम् = [illegible]

प्राह = [illegible]

निजाशुद्ध्यासमर्थस्य कर्तव्येष्वभिलाषिणः

यदा क्षोभः प्रलीयेत तदा स्यात्परमं पदम्

॥ ९ ॥

निज = [illegible] । अशुद्धि = [illegible] । असमर्थस्य = [illegible]

[illegible] कर्तव्योऽपि = [illegible] अभिलाषिणः = [illegible]

[illegible] यदा = جب क्षोभः = [illegible] प्रलीयेत = مٹ جائے

तदा = [illegible] स्यात = [illegible] परम पदम् = [illegible]

सत्यम् = [illegible] अभेदः = [illegible] तस्याम अवस्थायाम = [illegible]

अस्ति अन्यो

अन्यो = [illegible] किन्तु = [illegible]

अयं = [illegible] निजयो = [illegible] सहजया = [illegible]

पुरुषो

देहाद्यात्म = [illegible] प्रतिपत्ति = [illegible]

[illegible] मूल = [illegible] रागादिरूपया = [illegible]

[illegible] 'अशुद्ध्या' = [illegible] मलेन = [illegible]

हेतुना = [illegible] 'अभिलाषी'

→ धारिकस्य = [illegible] सुखलव = [illegible] [illegible] = लुब्धः

[illegible] लुब्धः = [illegible] तथैव च = [illegible]

तत्साधन = ان کے حصول کے وسائل   विषया = شے

अप्राप्ति हेतुषु = نہ پانے میں   'कर्तव्येषु' = کرنے کے کاموں میں

'क्रियासु' = کاموں میں ← کریا ← क्रि

"असमर्थः" = سمجھنے میں ناکارہ   प्राप्तिदरिद्रो

यतः = جس سے   इदन्धन = جو ایندھن ہے   अभिमते = پسندیدہ

अपि

एवं विधस्य = ایسے جیسے   अस्य = اس کی

'यदा' (यस्मिन् काले) = جس وقت   "क्षोभः" = کھلبلی

→ प्रतिनियत = مقرر شدہ، ایک ہی   शरीराद्य = شریر آدی پر (یعنی سر پر - مرا منہ پر - کھل شریر پر)

آلمبن = سہارا   अपेहे, प्रत्यात्मा = اسم پر ہی ہے

مایا مایीय उपप्लव = آفت، ایک ماہا

"प्लीयते" — چھپ جاتے   कृत्ति = کھوٹی جگہ

आलम्बन = سہارا   उत्कीरन = کھود کر بنا - جب ...

39

स्वाभाविक ... प्रत्यय ... (اسم ہرنی)

प्रभाकर = ... प्रकाश = ... संपकित

प्रालेय ... पटलवत् = ...

विगलेत = ... विनश्येत = ...

तदा = ... परमं = ... → निरन्तरं

'पदे' = ... → स्थाने 'स्यात' = ...

→ स्द्भावेन = ... प्रकाशेत = ...

अभेद: = ... अपात्म पुरुष = ...

प्रतिपादितयो = ... शब्द

पर- अपरयो = ...
संविदो :

तस्यामेव दशायाम् = ... उपलभ्यतया

प्रथेत = ... इत्यर्थ: = ...

तदेतत् = ... स्वस्वभावे = ... प्रतिष्ठानम्

इदम् इति (...) ... =

39

अनेन श्लोकेन प्रतिपादितम् = اس طرح اس شلوک سے بتایا گیا

उपलभ्यते = سمجھ پڑتا ہے नाम = یعنی

दर्शनान्तरेषु = دوسرے درشنوں میں तैस्तैः = ان ان

प्रकारैः = طرحوں سے

ان آتموں کو مختلف درشنوں نے مختلف سمجھ رکھا ہے۔

अस्मद्बुद्धिः अस्य पुंसः = اس پرش کی [illegible]

उक्तं तु = اس شاستر میں تو

एतावत्येव = اتنے پر ہی موقوف ([illegible])

असौ = یہ ہے (اتنی ہی بات پر)

([illegible])

यत = جو अचित्स्वरूपेषु = جو نہ چیت سروپ ہیں

अनित्येषु = جو نہ نت ہیں परतन्त्रेषु = جو ماتحت ہیں

देहादिषु = دیہ وغیرہ تک तत्विलक्षणार्थी

= اُس سے جو مختلف [illegible]

निरूपतया = اس طرح پر مقرر ہے

उपपन्नो = ٹھیک ہے سمجھ अहं प्रत्ययः = میں کا گیان

पर्वतते = پرورتن میں آیا

39/40.

तावत् मात्र = [illegible] निबन्धना = [illegible]

हि = [illegible] सर्वी संसारित्व [illegible]

प्रतिपत्तयः = [illegible] तस्मिन्नेव विगलिते

= [illegible]

1/2 स्वस्वभाव [illegible] अभिव्यक्ति लक्षणा =

[illegible] .

परा प्रबुद्धिरिति = [illegible]

यदुक्तम् = [illegible]

"जाते देह प्रत्यक्षयद्दीपभङ्गे,
प्राप्तैकध्ये निर्मल बोधसिन्धौ।
अव्यावर्त्ये ~~[illegible]~~ वेन्द्रियग्राममन्त-
विश्वात्मा त्वे नित्यमेकोऽवभासि॥"

[illegible]

जाते = [illegible], देह = [illegible] प्रत्य = [illegible]

द्वीप = [illegible] भङ्गे = [illegible]

प्राप्ते = [illegible] एकध्ये = [illegible] निर्मल = [illegible]

बोधसिन्धौ = [illegible] = [illegible] .

۴۷

وہ کوئی دوسرا گر
صف ہے۔ جو عکس نور رہا
تو بیند ہر گام تمھی نور رہا۔
کوئی اندر ہیں میں پرورش
رہ کے تم ایک ہی رہے
سب کا جیو ہو

پرورش میں پا کر۔

प्रत्यावर्त्यैव = ~~واپس لا کر~~ نے विदय ग्रामम् = سب کو

अन्तः = اندر विश्वात्मा = دنیا کا روپ

त्वं = تم नित्यमेको = ایک ہی بنے ہو
अवभासि

तथा = اسی طرح

"नात्माधीनत्वेऽपि विश्वं नियोक्तु
सर्वो हस्तादी निवेष्टु यथेष्टम्
बालो राजेवात्म प्रात्यय प्रबोधात
त्वय्यन्तःस्थे सर्वशक्तिस्तु सर्वैः ॥"

न = نہ आत्म आधीन त्वेऽपि = اپنے اندر ہونے پر بھی विश्वं = دنیا کو
नियोक्तु = لگانے کو सर्वो = سب हस्तादी = ہاتھ وغیرہ کو
निवेष्टु = لگانے کو
यथेष्टम् = اپنی خواہش کے बालो = بچہ राजेवात्म = راجہ کی طرح
आत्म प्रात्यय = آتم کی شکتی اسکو प्रबोधात् = جاننے سے
त्वय्य = تم میں अन्तः = اندر स्थे = ٹھہرے
सर्वशक्ति = سب شکتی सर्वैः = سب کو (جانتا ہے)

40/

अतिशय चास्य = وہی ہے مثل اسکو

इत्यादिना वृत्तौ व्याख्यातम् = وغیرہ سے ورتیوں میں دیا گیا ہے

ननु = سوال ہے प्रलीन = ختم ہوئے

देहादि अहं प्रत्यय = دیہہ وغیرہ اہم بدھی लक्षणया क्षोभो = وہی تلکش سوست کھلبلی (وہ شانتی)

निवात ہوا رہت निश्चल = نشچل जलधिवत् = سمندر کی طرح

सुप्रशान्तस्थिति = بڑی شانتی سے رہنا نے توڑی کھلبلی ہوئی आत्मैव = آتما ہی

परमार्थदर्शिभिः प्रतिपादितः = پرمارتھ دیکھنے والوں سے بیان کیا گیا तत कथं = وہ کیسے ہے

तत् बलस्पर्शात् = اس بل سپرش سے पुरुषः = پرش

तद्विलक्षणो = اس سے ولکشن ہے क्षोभात्मकमेव کھلبلی سپنی ہوئے

धर्मम् = دھرم کو आसादयेत = حاصل کرے پراپت کرے

येन = جس سے युक्त = جڑ کر इन्द्रियवर्ग = اندری ورگ

प्रवृत्यादि = پرورتی وغیرہ کو लम्भयन् = حاصل کرتا

پَ سं करोमि = سنکر کرتا ہوں अहं जानामि = میں جانتا ہوں

स्वविषयं = [illegible] प्रतिपाद्यमानः = [illegible]

क्षुभित = [illegible] भवति एव = [illegible] भवति

इति अनात्म ज्ञानी = [illegible]

मति = [illegible] विभ्रम = [illegible] भङ्गाय = [illegible]

ग्राह्य = [illegible]

तदास्याकृत्रिमो धर्मो ज्ञत्वकर्तृत्वलक्षणः।
यतस्तदीप्सितं सर्वं जानाति च करोति च ॥२०॥

"तदा" = [illegible] ([illegible]) तस्य = [illegible]

अकृत्रिमो = [illegible] धर्म = [illegible]

ज्ञत्व = [illegible] कर्तृत्व = [illegible]

लक्षण = [illegible] यतः = [illegible]

ईप्सितं = [illegible] सर्वं जानाति = [illegible]

करोति च = [illegible]

५/

"तदा" → तस्मिन = اس وقت، यथोक्त = جیسا کہا

क्षोभ परिक्षय = جوش کا ختم ہونا

उपलक्षित = اس سے [illegible] ہوا

काले = وقت میں आत्मनः = اپنا

"रूपस्य" = [illegible] (شکل) अकृत्रिमः = [illegible] اصلی

सहज सिद्धः = [illegible] सततम = ہمیشہ

व्यतिरिक्तो = جدا "सत्वकर्तृत्वात्वलक्षणो धर्मः" →

[illegible] = गुणोऽसत्येवेति हि

प्रवेति = [illegible] प्रोक्तः = کہا گیا ہے

"यतः" → यस्मात = جس سے अव्यभिचारिणो = [illegible]

गुणात् = گنوں سے कारण भूतात = [illegible]

"सर्वम" → परिखलम् = سارا

"ईप्सितं" = چاہا ہوا →

[illegible] = ज्ञेयतया कार्यतया

41

"प्राप्तुमिष्टं" = پانے کے لئے عزیز وستو = جو چیز پیاری ہو

स पुरुषः = وہ شخص   तदा = تب →

तस्यां दशायां = اس وقت

सत्य स्वभाव संबन्ध लक्षणा योगात्मिकायां

یعنی جو سوبھاؤ کی اس سمبندھ و جوڑ ہے۔ وہ لکشن سروپ ہو

न तु = نہ   "यदा" = جس وقت

देहादि लम्बना हं प्रतीति सार

دیہادی لمبنا ہم پرتیتی سار = ...

- ہے اس وقت جیوتوں کی وہ سنسار پرکھ دشایاں ससार पुरुष दशायां

"जानाति च करोति च" "جانتا ہے اور کرتا ہے"

(یہ صرف الفاظ وشا میں ہے اس صورت میں نہیں)

किं उक्तं भवति = کیا کہا گیا ہے

ज्ञात्वमुपलब्धृत्वं = جاننا اور حاصل کرنا

नाम = نام

५२

अस्यात्मनो = آتما کا   अव्यतिरिक्तो गुणः
ملے ہوئے

स च = وہ   यदंता सेयस्य = جیسا جو ہے
ویسا ہی

अस्य वस्तुनो = اس شئے کا   ज्ञायतया = جانے جانے سے
कार्यतया च = کرنے جانے سے   द्वैविध्यात = دو طرح
उपचर्यते = مشہور کیا جاتا ہے   द्विलैन = دو سے
वस्तुत = دراصل   एकैव = ایک
ईश्वरस्य = ایشور کا   स्वभाव प्रत्यवमर्श रूपा
سوبھاؤ کا خود پرکاش ہے

प्रीतिः = شکتی   सा = وہ

संवेदनरूपत्वात् = جاننے والی ہونے سے   ज्ञान शब्देन उद्यते
جاننے کا سبب سے کہی گئی

तावत् मात्र = سے نہیں ہے   स्वस्वभावरूपत्वात्
= خود سب کرنے سے - دیکھ رہا ہے - دیکھنے ہی سے

क्रिया शब्देन च = کرنے سے
उद्घोष्यते = کہا جاتا ہے

५२/

स च = وہ   एवं विधो धर्मः = ایسا گن   प्रत्यक्ष = [illegible]

वेद्यत्व = ویدکی یعنی جاننے کی   प्रतीत्य = جان کے

उपप्लवा = [illegible]   संस्पृष्टे = [illegible]

९५ वेदकैकलक्षणे = صرف ویدک کی

स्वभावे = ایک ہی نشان والے سوبھاؤ میں

स्थितस्य = ٹھہرے ہوئے   सर्वज्ञतया = سب کچھ جاننے سے

सर्वकर्तृतया च = سب کچھ کرنے سے

विजृम्भते = [illegible]

यत् पुनः = جو پھر   तादृक स्वभाव प्रत्य

[illegible]

कर्मप्राभवात् = [illegible]

[illegible]

९५ नद्य एव = [illegible]   देहाद्यौ वेदकप्रत्यया = [illegible] निबन्धना

[illegible]

तत् शैत्वे कर्तृत्वं च = [illegible]

[illegible]

[illegible]

42/

तत = [illegible] कृत्रिमं = [illegible] परिमितविषयं च [illegible]

तस्मात् = [illegible] आत्मनेः [illegible]

च्चात्व कर्तृत्व लक्षा [illegible] =

अव्यतिरिक्त = [illegible] धर्मता = [illegible]

→ स्वभाव एव = [illegible] न तु = [illegible]

क्षोभावस्था = [illegible]

तादृशो चआत्मकर्ता = [illegible] स्वरूप = [illegible]

संसारि पुरुषः = [illegible] करणावेगी प्रवेतमादिना = [illegible]

स्वविषये = [illegible]

च्चा च्चात्वकर्तृत्वाभ्यां [illegible] =

पुज्यमानस्तत्समो = [illegible]

भवेत् [illegible] =

इति यत् उक्तं तदेव = [illegible]

उपपन्नम् – [illegible]

"यतस्तस्मिन्प्रलीनक्षोभात्मके काले"

جس سے وہ نیستی ہوا لطیف آتم کال ہے ۔

इत्यादिना वृत्तिकृत याचष्टे: اس سے ورتی کار نے ویاکھیان کیا ہے

इत्थम् = اس طرح आत्मस्वरूपम् = آتم سروپ

उपपत्त्या = دلیل سے व्यवस्थाप्य = ٹھہرا کر

तत्प्रतिपत्तिफलं = اس آتم روپ کی پراپتی کا پھل =

= جو ملتا ہے اس کو प्रदर्शयितुम् = دکھانے کے لیے

आह = کہتے ہیں

तमधिष्ठातृभावेन स्वभावमवलोकयन्
स्मयमान इवास्ते यस्तस्येयं कुस्मृतिः कुतः॥२१॥

तम = اُس آتم سروپ کو   अधिष्ठातृभावेन = ادھشٹاتا بھاؤ سے

स्वभावम = سوبھاؤ کو (اپنے)   अवलोकयन् = اس کو دیکھتا ہوا جو

स्मयमान = مسکراتا سا   इव = مثل   आस्ते = ہوتا ہے

यः = جو شخص کہ   तस्य = اُس پُرش کو

इयं = یہ   कुस्मृति = دُرگتی — سنسار میں

कुतः = = کیسے ہو سکتی ہے

"तम" لفظ → इति सर्वनाम्ना = سرونام (सः ...)

(جو کہ شلوکا ...)

श्लोकद्वयाक = دو شلوکوں سے   प्रतिपादितं = بیان کیا گیا

आत्मतत्त्वं = آتم سروپ کا

प्रत्यवमृश्यते = پرامرش کرتا ہے

"तम्" → اس کو → एवंलक्षणम् = ایسی نشانی والے

"स्वभावम्" = سوبھاو → आत्मानम् = آتما (خود)

"अधिष्ठातृभावेन" = مالک ہونے کے بھاؤ سے → सर्वशरीरेषु

सर्वावस्थासु सर्वदा सर्वत्र = سارے شریروں میں

ساری اوستھاؤں میں - ہر وقت - ہر ایک جگہ میں -

अनुभवितृमात्रेण = انوبھو کرنے والے سے सर्वम् आक्रम्य

سب گھیر = سارے کو گھیر کر अवस्थितत्वात्

= ٹھہرے ہوئے ہونے سے (بسا ہوا ہونے سے)

अनन्य = نہ دوسرا अधिष्ठेयः = ٹھہرنے کے لائق

یوں → अहमेव एकः स्वतन्त्रः = میں ہی اکیلا آزاد परमेश्वरः

अधिष्ठाता = اس میں ٹھہرا ہوا } ایسے بڑا ایشور ہے

इत्येवंरूपतया = اس طرح سے

'अवलोकन' = دیکھا ہوا

उक्तया = [illegible]   उपपत्ति = [illegible]

दृशा = [illegible]   वक्ष्यमाणया च [illegible]

उपलब्धय = [illegible]   उपदेश = [illegible]

दृशा = [illegible]   पश्यत = [illegible]

→ प्रत्यभिज्ञानं = [illegible]   स्मर्यमाण इव = [illegible]

[illegible] विस्मृत = [illegible]   परप्रमातृरूप = [illegible]

[illegible] स्वप्रात्मा- तत्त्व = [illegible]   प्रत्यभिज्ञानात् = [illegible]

मायीय प्रमातृस्वरूपम् = [illegible]

[illegible] असत्यमपि = [illegible]   इत्थं प्रथमानं = [illegible]

विमृशन् = [illegible]

विस्मयमिव = حیرت میں آ   आपन्नो = ہو گیا

'य = جو   उपास्ते" = کرتا ہے

→ निर्विप्लवां = بے رکاوٹ   स्थितिम् = کیفیت

अनुभवति = محسوس کرتا ہے

'तस्य' = اُس سادھک کو   एवं लक्षणस्य योगिनः

= ایسے لکشن والے یوگی کو

इयं = یہ کون   सुप्रसिद्धा = بہت مشہور ہے

देहाद्यात्म = دیہہ آدک   अहंप्रतीति = میں پن کی پرتیتی

मात्र = صرف ماتر   मूला = جڑ والی

→ "कुसृति" = درگتی (بُری چال) →

जन्म जरा मरणादि द्वन्द्वयोगात्

= جنم - بڑھاپا - موت - آدک دُکھوں کی جوڑی سے

ہونے سے

47

ے و कुत्सिता = فنگی गर्हिता = نیندیت - نیندھیہ

स्तुति सुरत्यां - بلی → नानायोन्यन्तर भ्रमरां

कुत = ٹھ کے سوتاساں انسو प्रतिपादित = سمجھائی

क्षोभरूपाया = جو کھیو روپ ہے ص و جو دکھ = دکھ انہی ہے

हेतुभूताया = وجہ رشتہ از روگی ٹانہی ہے

اس کے अभावात = ابھاؤ سے - نہ ہونے سے =

प्रसीनस्य = بیٹھے ہوئے کو گتیرو = گتی

नास्त्येव = ہے ہی نہیں इत्यर्थः = یہ اشتر ہے

वक्तिकृता = دیکھی کا شتکسی رنگ کرنی

च

"एवं यतः सर्वानुस्यूत एव आत्मा" = ہس کا ہم ہے تو سب

(سیاپ ہے یہ آتما (یہی دیکھنا ہے کہ ہر جگہ میں روشنی ہے یہی بات سمجھو)

इदानीं = اب समस्त वेद्य = [illegible] ہے

धर्म विरहित = اس دھرموں سے رہت ([illegible])

स्वरूपस्य = کے سروپ کو आत्मतत्त्व = جو آتم سروپ ہے

उपादेयतया = اسے گرہن کرنے کے لئے प्रतिपादना = سمجھ کرنے

अभाव = اس شونیہ وادی کے

एव प्राप्यतया = یہ پراپت کرنی ہے

उपादिष्टो भाति = جو اپدیش دیا ہے

इति मन्यमानान् = اس طرح جو ماننے والے ہیں

प्रतिबोधयितुम् - ان کو سمجھانے کے لئے ([illegible])

आह = کہا ہے

नाभावो भाव्यतामेति न च तत्रास्त्यमूढता।
यतोऽभियोगसंस्पर्शात्तदासीदिति निश्चयः
॥१२॥

45/45

न = نہ अभावो = ہستی (وجود) भाव्यतामेति = وہ ہستی کا ہونا

न च = اور نہیں جاتا (وہ تجھ میں وہ کیفیت ہستی نہیں)

न च = اور نہیں तत्र = وہاں अस्य = اس ... ہونا جانا

अस्फुटता = نہ ہونا

अपेतो = دور अभियोग संस्पर्शः = [illegible]

तेन = اس आसीद् = ہے इति निश्चयः = یہ طے کیا
([illegible] - [illegible])

"अभावः" → वस्तुशून्यता = ہستی کا نہ ہونا

'भाव्यता' = ہستی کا ہونا भावनीयत्वं = ہستی ہونا

→ समाधान = جواب अवलम्बनमावं = یقین کی ہستی

"नैति" = نہیں آتا नगच्छति = نہیں جاتا

[illegible]
[illegible]

४५/

अभाव = نہ ہونا   भाव = ہونا
नया

= اور اس کی وجہ سے ہے

परस्परविरोधात् = آپس میں ایک
دوسرے سے ضد رکھنے کی

جو دو چیزیں
ایک دوسرے کی ضد ہیں
وہ ایک جا
رہ سکتی ہیں
نہیں

भावो हि = ہونا ہی → संविद्विषतायोग्यः
تو ہے

پدارتھوں = کو ٹھیک طور سے جاننے کے قابل بنا دیتا ہے

३. ध्येयतव = دھیان دینے کے لائق
چننے کے

प्रालम्बनी भवितु = سہارا بننے کے   प्रहीति =
ترک کرنا / دیتا ہے

न तु = نہ کہ   न किंचित् "اور کچھ نہیں"

यथा काचित् उपादिष्टम् = جیسا کہ کسی نے اور کہا ہے

" प्रभावं भाये त्तवा द्यावत्त म्मयतां व्रजेत्॥"

"ہر چیز کو اس وقت تک دھیان میں لانا چاہئے کہ جب تک اس میں ہی"

کہا

इति = اسواسطے । भवतु = ہو [illegible] प्रसौ = [illegible]

ध्यात् = دھیان کرنا [illegible] ध्यान = دھیان

[illegible] =

ध्येयाविकल्पो जہاں پر ایک ہی ہوتا [illegible] समाध्यावस्था
उ ध्येयरूपा = سمادھی کی حالت

याम = جس کو । अभाव = ابھاو । इति = اسواسطے

मन्यन्ते = مانتے ہیں [illegible] विस्मृतात्मानः
= [illegible] (آتما سوستے جو ہیں (اپنے [illegible])

न च = نہ "तत्र" = وہاں । तस्मिन् अवस्था
(اس حالت وسمادھی میں (جہاں [illegible]) विशेषे

अमूढता = نہ مورکھتا → मूढत्वाभावो । विद्यते
= جہاں [illegible]

यत = جو । अभियोगसंस्पृ = [illegible]
प्राप्त" Touch سے

व्युत्थानावसरे = [illegible] रूपान्तरानुसंधान
तादृश = اس [illegible] ۔ = [illegible]

विषयेराभियोगेन = [illegible]

[illegible]

५६/

तत्काल = اُسی وقت। प्रत्युदितेन = اُٹھ آیا ہوا

प्रभिलपेन = بات کرنا - "[illegible]"

संस्पर्शात् = مس کرنے سے संपर्कात् = ملنے سے [illegible]

[illegible]

"तत" = وہ दशान्तरम् = [illegible] "प्रासीत" [illegible]

→ प्रभूदत = تھی प्रतीतम् [illegible]

"इति निश्चयः" [illegible] प्रध्यवसायः [illegible]

स्यात् = ہے

स्यात् = ہووے किम् उक्तं भवति?

= اس سے کیا مطلب پایا گیا -

प्रभावसमाधि = [illegible]

लब्धप्रतिष्ठो = [illegible] योगी = یوگی

तत = اس سے व्युत्थितः = [illegible]

सन् = ہوکر

45

यदि = اگر तामेव अवस्थां = اسی اوستھا کو

न अनुसंदध्यात् = [illegible] तत = وہ

कथं = کیسے लब्धप्रतिष्ठोऽस्मि = [illegible]

[illegible] इति प्रत्ययो स्यात् = [illegible] —— [illegible]

अपसति च = [illegible] तस्मिन् = اس میں

समाधिव्युत्थानयोः = سمادھی اور [illegible] व्यतिरेकाग्रहणाम् = [illegible]

तस्मात् = اس لئے तदानीं = اس وقت

[illegible] तादृशी दशाम् ~~समा-~~ ~~ध्यवस्थां~~ = [illegible] अहम् अनुभवम् = میں [illegible]

इति अवश्यं स्मर्यते = [illegible]

तच्च = وہ प्रतीतत्वेन = [illegible]

स्मर्यमाणत्वाच्च = [illegible] अनित्यं = [illegible]

46/ सुखादिवत्:

अनात्मनः स्व (سروپ) रूप = (اپنا آپ)   न भवति = نہیں ہے

(حصے کے سوجھنے میں وہ کسی طرح سے اپنے آپ کو بھی نہیں ہو سکتا ہے [illegible])

(तस्य चितरूपस्य

مگر   = جو تجربہ ہے (اس)   अनुभवितृत्वेन

انوبھو سے

सर्वदा   = ہر وقت   वर्तमानत्वात् ہر وقت میں موجود ہے

स्मर्त्रन्तरेण   = دوسرے سمرن کرنے والے   न   = نہ

स्मर्यमाणत्वे   = ہونا ہے   (دوسرا یہ سمرن کرنے والا اس کو نہیں کر سکتا ہے - رہا ہے - تو وہی انوبھو کرتا ہے)

न संभवति

= (نہیں) اس کا اسمرن ہو سکتا

ہیں   व्याख्यातम् एतत्   = ویاکھیان کیا گیا ہے

वृत्तौ   وِرتّی میں

" نہ ہونا اس کا بھاونا کرنے والا ہے "

न त्वभावो भावनीयः

46/
51

तत् स्फुटीकर्तुम् आह = [illegible]

अतस्तत्कृत्रिमं ज्ञेयं सौषुप्त पदवत्सदा
न त्वेवं स्मर्यमाणत्वं तत्त्वं प्रति पद्यते ॥२३॥

यतः = [illegible] तत = وہ [illegible] कृत्रिम = بناوٹی

ज्ञेयं = جاننا چاہئے सौषुप्त पदवत् = [illegible]

सदा = ہمیشہ न तु = نہ

इव = جیسا स्मर्यमाणत्वं = [illegible] तत = وہ

तत्त्वं = [illegible] प्रतिपद्यते = [illegible]

[illegible]

"अपतः" [illegible] अप्रसीत = [illegible] तत = وہ

इति = ایسا भूतत्वेन = [illegible] अप्रभिभुज्यमानत्वात् = [illegible]

"तत्" = وہ अप्रभावसमाधि = [illegible]

संज्ञितं वस्तु [illegible]

[illegible]

57

"कृत्रिमं ज्ञेयं" = یہ بھی کچھ بناوٹی جاننا چاہیے

भावाभावदशायोगित्वात् = کبھی ہونا کبھی نہ ہونے کی حالت
اس کے ساتھ ملی ہونے سے

कल्पनाकृतम् = یہ کلپنا سے بنی ہوئی ہے (یہ حالت)

अनित्यं = یہ انت ہی   बोद्धव्यं = جانی جائے

सदा = ہمیشہ   न काचिदसौ = نہ کوئی یہ

कालकला = کال کلا ہے   यस्यां = جس میں

सा = وہ   विद्यते = ہوتی   तादृशी = ایسی

समाध्यवस्था = سمادھی اوستھا → سمجھ بیٹھنے والے لوگ   नित्यत्वेन = نت جیسی

अवतिष्ठते = ٹھہری ہوئی ہے (یہ کوئی نت نہیں رہتی) ہے

कथं कृत्रिमं ज्ञेये? = کیسے یہ بناوٹی جانی جائے یہ
- ٹھہری ہوئی

47

"सौषुप्तपदवत्" = سوشپت پد کی طرح

सुषुप्तमेव = سوشپتی ہی — सौषुप्त → یعنی گہری نیند سویا ہو

→ सुखस्वापावस्था = سکھ سے سونے کی حالت ہے

तदेव पदं = وہی پد संविदधिकरणांतेन

= سموت کے آخر تک برابر ہے = तुल्यम् ।

।किमुक्तं भवति = کہنے کا مطلب یہ ہے

यथा लौकिकी सुषुप्तावस्था

= جیسے لوکک سوشپتی اوستھا = निबिडमोहात्मकत्वात्

ہوا ہے = گہرے موہ سے بھری ہونے کے = ~~सतो~~

सतोऽति = ہوتی ہوئی بھی । वेद्यवेदकविभागस्य

ویدیہ اور ویدک کے بھاگ کو

اس وقت نہیں سمجھنے سے — ہے

तत् कालम् = اس وقت کے । अग्रहणे सति

= نہ رہنے سے ہے

अभावरूपा इव सती = ابھاو روپ جیسی ہوتی ہوئی +

٦٦/

प्रबोधकाल = جب جاگا

प्रत्युदितासु [illegible] अनुसंधान = [illegible]

विषयताम् = [illegible]

[illegible] प्रतीतत्वेन = [illegible] = आपाद्यमाना

प्र → = [illegible] स्मर्यमाणत्वात

[illegible] } [illegible] =

[illegible]

अनित्या = [illegible]

तद्भूत = [illegible] प्र

[illegible] = अभावसमाध्यवस्थादि

अनित्या = [illegible] व्युत्थानसमय

[illegible]

भूतत्वेन = [illegible] स्मर्यमाणत्वसामर्थ्यात

= [illegible]

[illegible]

([illegible])

47

एतेन = اس سے سर्वे सर्वे प्रायाः = [illegible]

= [illegible] समाधय: = [illegible]

सुषुप्तावस्थायामेव = سوشپتی اوستھا میں ہی क्रान्तं भवन्ति = [illegible]

इति प्रतिपादितम् = ایسا بیان کیا گیا

"ननु" = کیوں ، पुनः = پھر "तत तत्त्वम् = [illegible]

इह = یہاں उपादेयतमतया = [illegible]

उपदिष्टे = [illegible]

स्वस्वभावलक्षणं वस्तु = [illegible] "एवम्" = اسی طرح

एतेन उक्त = [illegible] प्रकारेण = [illegible]

"स्मर्यमाणत्वे" , [illegible]

प्रतिपद्यते = [illegible]

तस्य हि = [illegible] नित्योदितत्वात् = [illegible]

48/

सदा वतमानत्वमेव = ہر وقت حال میں موجود ہونے سے

तदेतत् = وہی یہ ~~इदम् =~~

"अतोऽभावभावनया समाधिलब्धभूमिकस्यापि"

اس کارن سے ابھاؤ کی بھاونا سے سمادھی کی بھومی [illegible]

اپنا [illegible] کا اور [illegible] دیکھنے والا ہے+

अथ इवम = [illegible] नित्युदितत्वात् = ہمیشہ ظاہر رہنے سے

सदा = ہمیشہ प्रकाशमानमपि = روشن ہونے پر بھی तत तत्त्वम् = وہ پرمارتھک تتو

کی अप्रत्यभिज्ञायमानत्वात् = نہ پہچانا جانے سے तु = تو बन्धहेतुः = بندھ کا کارن ہے

रूपतः = روپ کا لبدھपदप्रान = [illegible]

सर्वास्थासु = سب حالتوں میں वेद्यवेदकरूपतत्त्वद्वय

वेद्यवेद संगृहीत = [illegible]

विश्वप्रपञ्चाः = [illegible]

विभजनपरतया = بانٹ دینے پر تلے ہوئے | वेदकांडत्रयम् = ویدک کانڈ [illegible] ہے

त्रयीमिति = وہ 'ترییم' ہے

सर्वे वेद्यस्वरूप = سب جاننے والے سروپ | उत्तीर्णमेव = ان سے وہ اوپر ہے

प्रत्यक्ष प्रातारम् = اسکے برابر [illegible] دکھانے کو

आत्मीकार्यम् = سمجھا جانا چاہئے کہ یہ من میں بولو | इति उपदेष्टुं = [illegible]

तस्य तत्त्वस्य = اس تتو کو

स्वमायावैभवोद्भासितं = اپنی مایا کی وبھو سے [illegible]

द्वैरूप्यं = اسی سے دو باتیں ہیں آیا ہے [illegible]

प्रतिपादयितुमाह = [illegible] کہا ہے

५८/५९

अवस्थायुगलं चात्र कायिकर्तृत्वशाब्दितम्
कायिता क्षयिणी तत्र कर्तृत्वं पुनरक्षयम् ॥२४॥

अवस्थायुगले च = اوستھائیں دو   अत्र = یہاں پہ
कायि कर्तृत्व = کام اور کرنے والا پن (دیہی اور دیہک)
शाब्दितम् = بیان کی گئی ہے
ہو رہا ہے اوستھا دو

कायिता (یعنی کام) = جو کرنے والا پن ہے وہ   तत्र = مگر وہاں
क्षयिणी = کھشیہ ہونے والی ہے

कर्तृत्वं = کرنے والا پن جو ہے — یعنی کرنے والا

पुनर् अक्षयम् = پھر وہ ناش رہت ہے

"अत्र" → अस्मिन् = یہاں   इह = یہاں
प्रतिपादिते = کہے گئے   आत्माख्ये = آتما نامی
परस्मिन् तत्त्वे = پرم تت میں ; अवस्था युगले "

द्वे अवस्थे संभवतः = دو اوستھائیں ہوتی ہیں (یعنی دو حالتیں)

५१

अनेन = [illegible] विविधदर्शन [illegible]

[illegible] प्रक्रिया = [illegible] प्रबन्ध

[illegible] व्यवस्थापित = [illegible] = پربندھ

तत्त्वादि = [illegible] भेदात् = بھید سے

अपर्यन्तमपि = [illegible] हेयोपादेयरूपं वस्तु

लक्षण योगात् [illegible]

= [illegible] द्वित्वेनैव

[illegible] = संगृह्य

[illegible]

प्रतिपादितम् = [illegible]

[illegible] प्राधान्येऽपि = [illegible] विश्ववैचित्र्यस्य [illegible]

[illegible] द्वे एव तत्त्वे = [illegible] इत्यर्थः = [illegible]

([illegible])

एक एव तु = [illegible]

परमार्थसत् = [illegible] परमेश्वर = پرمیشور

आत्मा = [illegible]

५७

निरुपम = بے مثال نظیر حیثیت = نिरुपमौपात

निरुपादान = بلا مادی کے نجی نیرو निजैश्वर्य شکتی والا

द्वित्वेन = دوئی سے आत्मानम् = اپنے کو

अवभासयन = ظاہر کرتا ہوا

कीउति = کرتا ہوا

इति = ایسا प्रतिपादयितुम् = ثابت کرنے

अवस्थापञ्चकेन = پانچ حالتوں سے

निर्देशः = بیان कृतः = کیا

एकमेव = ایک ہی

तत् तत्त्वं = وہ حقیقت द्वित्वेन = دوئی سے

इत्यर्थः = یہ مطلب ہے अवतिष्ठते

कीदृशम् अवस्था युगलं ? = کیسے ہیں دو اوستھا یعنی حالتیں

"कार्य कर्तृत्व शब्दितं کاریہ کرتریتا شبد سے شبدت — कर्तृत्वेन - भोक्तृत्वेन

क — کرتاپن سے بھوگتا ہے → = بھوگنا [illegible]

वेदकत्वेन = جاننے والا [illegible] ہے — کرتا ہونے سے

चैतन भावेन = چیتن ہونے سے — دونوں ہیں अस्तम् = इति اسم

एका अवस्था ایک اوستھا — स्वतन्त्रा = سوتنتر ہے

द्वितीया = دوسری — तु = تو پھر ہے

तद्विपरीता = اس کے الٹی ہے (دوسری) कार्यरूपा = دو کاریہ روپ ہے

→ भोग्या = بھوگنی → वेद्या = جاننی →

جڑ ہے जडा = جڑ (بے جان) परतन्त्रा = پرتنتر

ताभ्यां = ان دونوں "शब्दितं"

कथितम् = کہا گیا ہے = شبدت

शब्दित - शब्देन = شبد سے کہا گیا ہے — अन्यो = ان دونوں کو (جاننے والا)

संज्ञामात्रा भेदो دونوں میں نام کا فرق ہے

न वास्तवः = حقیقی نہیں ہے इति प्रतिपादितम्॥ کہا گیا ہے

80/ [illegible] = कार्यरूपया

~~[illegible]~~ = [illegible]   इयम = یہ (مؤنث)

सा = वह   प्रकाशमानत्वमात्रलक्षणात्मकत्वात्

= پرکاش مان ہونے کا لکشن - یعنی ظاہر [illegible] - اس سے [illegible]

[illegible]

परमकारणात्
प्रात्मनः = آتم و پرماتما - اس سے

कर्तृशब्देन = کرتا شبد سے (بولا)

व्यपदिष्टात् = بیان کیا ہے

प्रकाशैकस्वभावात् = پرکاش ہی ہے صرف جس کا سوبھاو (طبع) ہے

اسی

न भिद्यते = جدا نہیں ہے - (اس سے پہلے)

यतः = کیونکہ   प्रीतिचक्रात्मकस्य = [illegible]

स्वविभवस्य = اپنے وبھو (شان) کا ہے

प्रभवत्वेन

एतत् तत्त्वं = یہ تتو - [illegible]

प्रतिपादितम् = بیان کیا ہے   प्रागेव = پہلے ہی

तत्र = وہاں   तस्मिन् = اس   इत्थंभूते =

अवस्थायुगले = [illegible] حالتوں میں

50/

"कार्यता क्षयिणी" = [illegible] → — [illegible]

क्षण भङ्गिनी = [illegible]

यत् यत् इदं = [illegible] मुकुलित तत्व-

[illegible] = परामर्शीतया

= [illegible] कार्य रूपत्वे नैव

[illegible] =

अवसीयते = [illegible] तत सर्वम् =

[illegible]

उदय व्यय = [illegible] संबन्धात्

[illegible]

प्रतिक्षणविनश्वरम् = [illegible]

"कर्तृत्वं" " = [illegible]

"पुनर अक्षयं" [illegible] =

कर्तृरूपावस्था = [illegible]

[illegible] = नित्या

नित्योदित = [illegible]

सर्वावस्था व्यापक [illegible]

उपलब्धृत्व मात्र = [illegible]

80/-

धर्मिकत्वात् = دھرم والا ہونے کی وجہ سے [illegible]

अविनाशी = لافانی ہے

तदेवम = اس طرح سے وہ एकमेव = ایک ہی کو

कर्तारं = کرنے والے کو → ज्ञातारं = جاننے والے کو
सर्वाधिष्ठातारं سب کا آدھار

सततम् = ہمیشہ

आत्मत्वेन = آتما کر کے

अनुसंदधानो = انوسندھان کرتا ہوا

यस्तिष्ठति = جو ایسے برتاؤ میں [illegible] तस्य = اسی پرش کو

बन्धानुपपत्तिः = بندھن کی [illegible] نہ ہونی

इति पूर्वश्लोकेन संबन्धः = اس کا پہلے شلوک کے ساتھ تعلق ہے

तदेतत् = وہ یہ

"अवस्थाद्वयमेव" = [illegible]

८/

इत्यादिना वृत्तौ व्याख्यातम् = [illegible]

ननु = [illegible] यत् = جو उपलब्धिरूपं = [illegible]

तत् = وہ अक्षयम् = [illegible] इत्युक्तम् (तत्त्वे) = [illegible]

तच्च = [illegible] न = نہ उपपद्यते एव = [illegible]

کیونکہ प्रभावसमाध्य = [illegible] उपलभ्य = [illegible]

अवस्थासु = [illegible] स्वरूपाभाव =

अभावात् = [illegible]

कथं तस्य अक्षयत्वम् = [illegible]

इत्याक्षेपे = [illegible] प्राक्प्रतिज्ञात = [illegible]

समाधानत्वम् = [illegible]

कार्योन्मुखः प्रयत्नो यः केवलं सोऽत्र लुप्यते
तस्मिंल्लुप्ते विलुप्तोऽस्मीत्यबुधः प्रतिपद्यते॥१५॥

51

कार्योन्मुख: = کسی کام میں مصروف ہو۔ प्रयत्न: = کوشش (اجماس)

य: = جو केवलं = صرف सा = وہ, प्रयत्न = بیان

लुप्यते = لوپ ہو جاتی ہے (وہ کوشش) — لوپ ہو جاتی ہے

तस्मिन्नलुप्ते = وہ جب لوپ ہو گی

विलुप्तोऽस्मि = لوپ ہو گیا ہے یہ میں بھی لوپ ہو گیا۔

इति = ایسا, प्रबुध: = جو بودھ ہے

प्रतिपद्यते = اس کی پاس پہنچ جاتا ہے — وہ اس کے پاس پہنچ جاتا ہے

कार्ये = کام میں, निर्मेये = بنانے والے کی جو بنانا ہے

→ वेद्ये = جاننے, वा वस्तुनि = اس چیز پر

"उन्मुख:" = مستعد → तस्य = اس کام کو

तथासंपादने = اس طور پر پورا کر لینا, "य: प्रयत्न:",

प्रवणो = جو اس کام پر لگا ہے

→ "कर्तृत्वेरणा = کرنے والی کوشش → सहज उत्साह: = سوبھاوک اتساہ

" स केवलं " وہ کیول

51

स सव = وہ روح بھی پরे कारणां = زیادہ دوہرے

तस्यां दशायां = اُس دشا میں (حالت) व्यापारहेतु:
कार्यस्य स्थूलरूपस्य = دوہرے کے سبب
अभावात् = اُسکا ابھاؤ ہونے سے "लुप्यते" = لوپ ہو جاتا ہے

→ अनभिव्यक्ततया = نہ پرکٹ ہونے سے

आत्मन्येव (آتما ہی) = اپنے آپ میں यस्मूयेव = اُسی طرح ہی پایا

अवतिष्ठते = ٹھہرا رہتا ہے 'तस्मिन' = اُس میں

प्रयत्ने = پریتن میں तत्कालमेव = اُس وقت میں

"लप्ते" सति = لوپ ہو جانے میں "अनबुध:" = جو بے وقوف
ہوتا ہے

→ तत्त्वावबोधशून्यो = اُس تتو کے گیان سے
جو خالی ہو

"विलुप्तोऽस्मि इति" = میں لوپ ہو گیا ہوں ایسا प्रतिपद्यते
"کہ میں لوپ ہو گیا"

→ न अहं अस्मि इति = نہ میں یہاں نہیں رہا
(یعنی میں ہوں ہی نہیں (ایسا مانتا ہے)) ا سطر 2

52

भाव विलक्षणतया = ہستی سے مختلف ہونے سے

वस्तु = شے परिच्छिन्दतः = تمیز کرتا ہے

एवं विधः = اس طرح کا प्रत्यय = گیان

उपपन्नः = ثابت کرتا ہے (مطلب اس کا سمجھ) کرتا ہے

परिच्छिनत्ति = تمیز کرتا ہے चेत = اگر

कर्तृत्वेन = کرتر ہونے سے प्रथमतरं = پہلے ہی

सन् इव असौ सिद्धः = ہوتا ہوا جیسے وہ ثابت

कथं निषेधस्य = کیسے निषिद्धस्य = نشیدا

विषयः = شے स्यात = ہوگا

तत = وہ इदम = یہ आयात = آیا

جیسے यथा = جیسے कश्चित = کوئی देवदत्तो = دیودت

गृहाद्यवस्थितः گھر وغیرہ میں موجود تھا

केनापि = کسی نے आहूतो = بلایا ہوا

भो देवदत्त = اے دیودت इति = ایسا । स आत्मानम् = وہ اپنے آپ کو

अपह्नोतुकामः = چھپانے کا خواہشمند प्रत्याह = جواب دیتا ہے

न अत्र अस्मीति = نہیں ہوں میں یہاں

एवमुक्तो = ایسا جب کہا ہو प्रत्युत = بلکہ اب

स्थितोऽहमस्मि = کھڑا ہوا ہوں میں इति प्रतिपादित भवति = ثابت ہو جاتا ہے

(اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ یہاں میں ہی ہوں)

न तु = نہ کہ संनिधानम् = نزدیک

तस्मात् = اس لئے अप्रमाव समाध्यवस्थासु = (بیداری اور سمادھی کی حالتوں میں)

कार्याभावात् = کام نہ رہنے سے

52

करणव्यापार = عمل کا جو چلنا ہے

विरतिमात्रेणात्म = اس کی ورتی رکنی (یعنی وہ سمجھ لی) اس کا نشہ

आत्म प्रभाव = اس سے جو آتم کا اثر ہے

प्रत्ययो = اس قسم کی جو جان ہے اور ہو

भ्रान्तिरेवेति = وہ بھرانتی ہی ہے

व्याख्यातमेतत = دکھایا گیا ہے وہ ورتی

वृत्तौ = اس ورتی کا ہے

" कार्य संपादन सामर्थ्यम् "

"کام کو جو سر انجام دینے کی سامرتھ ہے ۔ (جیسے [illegible]

نہ ہو تو وہ کام نہیں کر سکتا)"

तस्मैवार्थं = اسی ارتھ کو

विशेषयितुम = مخصوص کرنے کے لئے

आह = کہا ہے

52/53

न तु योऽन्तर्मुखो भावः सर्वज्ञत्वगुणास्पदम्
तस्य लोपः कदाचित्स्यादन्यस्यानुपलम्भनात् ॥२६॥

न तु = لیکن نہیں   यः = جو   अन्तर्मुख भावः = اندرمکھ بھاؤ   सर्वज्ञत्व गुणास्पदम् = جو سروگیتا گن کا ٹھکانہ ہے (یعنی اندرونی کیفیت)

तस्य = اس کو   लोपः = لوپ   कदाचित् = کبھی بھی ہو سکتا ہے

अन्यस्य = دوسرے کا   अनुपलम्भनात् = نہ دکھائی دینے سے [دوسرے کو نہ دیکھنے سے]

[illegible]

न तु पुनः = نہ پھر   "तस्य" = اس کا   परमार्थसतः = سچے پرمارتھ

परस्य तत्त्वस्य = پرم تتو کا   कदाचिदपि = کبھی بھی

= کسی وقت

समाधयाद्युपलक्षिता = [illegible]

यां = [illegible]

कालकलायां

"लोपः" = لوپ   स्वरूपोच्छेदः = سروپ کا [illegible]

53

"स्यात" → " उपपद्येत: = ہو جائیگا

"अप्रत्ययस्य" = [illegible] → तद्व्यतिरिक्तस्य
= اس سے جو بھن ہے

वेद्यरूपस्य = ویدی روپ جو ہے - وید کا

अनित्यस्य वस्तुन: = جو انت وستو ہے

"अनुपलम्भनात्" = جب اس کا (انوبھو نہیں ہوتا)

دوسرا → अनुभवाभावात् = (انوبھو کا ابھاو ہے) [illegible]

नहि = نہیں ہے वेद्यं = ویدی

नास्ति = نہیں ہے (جب جاگرت میں سپنا ہو) سپن نہیں

वेदकोऽपि = اس کا ویدک بھی نہیں ہے

नास्ति इति
वक्तुं अशक्यम् = نہیں ہے یہ بات کہنے کے لائق نہیں ہے

कस्य = کس کو तस्य = اس کو

लोपो न स्यात् = لوپ نہیں ہے

کسی کو دو [illegible] य: = 1. "अन्तरमुखं" اندر مکھ ہے

व्यतिरिक्त = علاوہ वाह्यवेद्य = باہر دیدی ہے

अभावात् = ابھاو ہونے سے यہی अन्तः = اندر ہی ہے

کیا مطلب स्वात्मन्येव اپنے آپ سوامی کے ملکھ میں मुखे = ملکھ میں ہے

च अप्राप्तिर्यस्य کی پراپتی ہے (یعنی نہیں ہوتی)

यस्य = جس کی

स = وہ तादृशो = ویسا ہی ہے "भाव" आत्मास्वरूप तत्त्व = یعنی آتما سروپ ہی ہے

यतः = کیونکہ "सर्वज्ञत्व = سروگیتا کا

गुणास्य گنوں کا

पदं = مقام ہے

جو ہے सकलवेद्यवर्गवेदकतारूपस्य

= سارا جو دیکھنے والا ہے اسکو پہچاننے والا ہے

गुणास्य धर्म = اس گن سے ہوتا ہے { سب کچھ جاننا

पदम् کا مقام ہے { مقام ہے

۵۳/

अनन्यसाधारणम् = نہ دوسرے میں – (بہت نرالی شے)

अधिकरणम् = [illegible] ٹھکانا

इदमत्र तात्पर्यम् = یہ یہاں مطلب ہے

आत्मनो = آتما کی   ज्ञानक्रियाभेदेन = گیان اور کریا سے

द्विविधा = دو طرح سے   या प्राप्तिः = ایک ملنی

सा पुरुषावस्थायाम् = انسانوں کی حالت میں   अन्तःकरण = انتہ کرن

बहिष्करण = باہر [illegible] کرنوں   व्यापारे + = جب اپنے کاموں میں لگے ہوتے ہیں

परमे सति = ٹھہرنے پر

केवल = صرف   स्वात्ममात्र = سوائے آتما کے

८, आभिमुख = سامنے   ज्ञप्राप्ति = جاننے کی ملنی

53/54

मात्रत्वेन = اسی بات سے अपदिश्यते

یہ کہا جاتا ہے - یعنی صرف گنے سکھی ہی باقی رہتی ہے -

तेन = اسی سے "अनन्त मुखो" भान: = انتہا سکھ کا

इति = ایسا کہا उक्तम् = کہا

मुख प्रसादेन च = سکھ سے پرکاش

کیا گیا کہا प्राक्त: व्यवहारो

سکھی کا دوسرا دیکھا ہو = दृष्टो

यथा परमेश्वरे جیسا کہ ایشور میں

"..... शैवी मुखविमोच्यते"

شیوی سکھ (یعنی شکتی کو سکھ پتہ ہے) بیان کیا ہے -

एवं च = ایسا ہی = व्युत्थानावसरे = دنیا کا کاروبار کے وقت

तादृग्दशान्य = ان کی دشا کے دوسری اور अन्यथात =

उपात्ति सद्भाव: = نہ ہو سکے ہونا چاہئے = دوسری طرح ہو

(اگر یہ مانی ہو وہ ابھاؤ کی حالت میں نہیں ہوتا)

स = وہ भावो = وہ ابھاؤ کی بات बाह्यविषयाग्रहणमात्र

= وہ باہر کے وشیوں کا گرہن صرف اسی بات سے

۵۴/

اُوپیا

व्यामोहे: = موہ میں گئے ہیں ۲

अभाव इति = اسی کو ابھاو مانتے ہیں (ابھاو کی) ते योगिभिः = ان یوگیوں نے

प्रतिपद्यते = سمجھا جاتا ہے

न तु = نہیں ۲ सततम् = ۳ ہمیشہ

نہ دور ہونے والی شکتی

अविलुप्तप्रज्ञप्राप्तेः = نہ لوپ ہونے والی گیان شکتی ۲

तस्य भावस्य اُس بھاؤ کی ۳ आत्मविलक्षण वस्तु अनुपलम्भात् = آتم سے بلکشن وستو کے نہ ملنے سے

कथंचित् = کسی طرح लोप = لوپ

उपपद्यते = سِدھ نہیں ۲

तदा हि = تب ہی असौ = یہ

स्वभावमेव = سوبھاو کو ہی ۲

अमलगगनतलवत् = نرمل آکاش کی طرح

सवितो व्यतिरिक्तं = [illegible] = ایک ہی حصول کے (لیکن [illegible])

८५/

सर्वव्यापकं = سب کو محیط ہونیوالا لہذا चित्मात्ररूप-तया अनु-भवति = صرف علم ذات سے سب کی ذات محسوس کرتا ہے

केवलं = صرف मोक्षपरवशतया

मोक्षपरवशतया = موکش ادھین ہونے سے =

विस्मृता = بھولی ہوئی अनुसंधायक = سلسلہ ملانیوالا

स्वात्मरूपः = اپنا روپ तथा = ویسے ہی

उपायं पुरस्तात् = آگے उपदेक्ष्यति = سکھائیگا

= جواب آگے ہوگا

व्याख्यातमेतत् = اس کی شرح کر دی گئی ہے

तथा = ویسے ہی ادھر = آگے

= اندرونی روپ

= دیا کشمانی ہے

" न तु योऽन्तरमुखोऽन्तश्चमत्कारः "
نہ جو اندر مکھ ہے اندر کا چمتکار ہوا ہے

इत्यादिना वृत्तौ = فقرہ = درتی میں کہا ہے

द्वितीयो निःष्यन्दः

55/

एवं = ایسا   यथाप्रतिज्ञातं = مطابق پرتگیا کے - جانا
देहादिव्यतिरिक्तम = دیہہ وغیرہ سے الگ   आत्मतत्त्वं = آتم تتو
स्वानुभव = اپنے انوبھو   सिद्धय उपपत्त्या = سدھی اور اپپتی سے
व्यवस्थाप्य
~~उपपत्त्या~~ = قائم کر کے   इदानीं = اب وقت
तत = اس   उपलब्धय = اس کے جاننے کے   उपाये = اپائے میں
उपदेशावसरे = اپدیش کے موقع پر   सुप्रबुद्ध = سو پربدھ
प्रबुद्ध = پربدھ   अप्रबुद्ध = اپربدھ
भेदेन = [illegible]   त्रिविधे लोकतन्त्रे = تین طرح کے لوک تنتر میں
कस्तत्र का: = [illegible]   तावत = اس لوک تنتر میں
प्रस्तु तोपदेश = [illegible]   पात्रम्? = پاتر
[illegible] (اس میں پربادھ)
इति विषयव्यवस्थापनाय = [illegible]
आह = [illegible]

८८

तस्योपलब्धिः सततं त्रिपदाव्यभिचारिणी ।
नित्यं स्यात्सुप्रबुद्धस्य तदाद्यन्तेऽपरस्य तु ॥१॥

'तस्य' = اس کی (اس کا) उपलब्धि = اپلبدی - پہچان

सतत = ہمیشہ त्रिपदा = تین پد (جاگرت، سپن، سشپتی میں)

अव्यभिचारि(णी) = جو ان میں دونوں نہ بدلے نित्यं = ہمیشہ

स्यात् = ہے ... → सुप्रबुद्धस्य = جو بیدار ہو

तत् [illegible] आद्य अन्तस्य = آدی اور انت میں

अपरस्य = [illegible] तु = لیکن

"तस्य" = اس کی یا اس کا यथा प्रतिपादितस्य = [illegible]

१

स्वात्मन एव परमेश्वरस्य = [illegible]

"उपलब्धिः" = پہچان اس کی → अनुभवो = [illegible]

→ निर्विकल्पा प्रतिपत्ति = [illegible]

'नित्यं' → [illegible] → सर्वदा = [illegible] सर्वासु = [illegible]

58/

अनुभवदशासु = انوبھو دشاؤں میں "सुप्रबुद्धस्य" =

→ सुष्ठु प्रबुद्धस्य = اچھی طرح جو ہوشیار ہو گیا ہو سوپربدھ

→ देहाद्यहं प्रत्यय = دیہہ وغیرہ پر جو اہم بھاؤ ہے

[illegible] ← दीर्घ दुःख स्वप्नमया = جو لمبی دکھ کے خواب سے بھری ہے

→ मोहमयी निद्रया = وہ موہ بھری نیند

मनागपि = تھوڑا سا بھی

अनावृत संविदः = نہ ڈھکے ہوئے سموت سوبھاؤ کو

क्षिप्तसाध्यस्य = سدھ جو ہے اور سادھن

सम्यग्दृशि = اس پرکاش اچھی طرح دیکھنے والا سورش

"स्यात" → उपपद्येत = ہو

कीदृशी? کیسی ہے "सततम्" → نت प्रवाह

धानेन = جو نہ کبھی تیاگ ہو

'त्रिपदा' = تین پدوں میں 'व्यभिचारिणी' نہ ٹلنے والی

→ त्रिषु = تینوں میں जागरस्वप्नसुषुप्तेषु = جاگرت سپن

पदेषु = الگ الگ حالتوں संवेदनभूमिकासु = یعنی گیان کی بھومکا میں

80/

अव्यभिचारिणी = ان میں نہ ٹلنے والی

→ अविसंवादिनी = نہ اُلٹا بولنے والی ہوشت
(نفی شناسی قسم کی)

कयाचिदपि = کسی بھی   अवस्थया = اوستھا سے

अनभिभूतत्वत = نہ دبنے سے (ہر ایک اوستھا میں نہ دبے ہونے سے)

अव्यवहितसंनिधि = نہ ڈھکنے میں آئی ہوئی نزدیکی
(ہر ایک اوستھا میں رکی گئی ڈھکی کی نزدیکی سے ہوشت)

एवम् = اسی طرح   एतस्य = اسی سوپربدھ کی
सुप्रबुद्धस्य

स्वीकृत = اختیار کیا ہوا   स्वात्मैश्वर्य = سوا آتم ایشور

लक्षणा = ہی لکش

परसिद्धि = دوسروں کی سدھی جو نہ ہونا ہوا حاصل   उदय = ہوا

उपदेशविषयत्वं = اپدیش کا وشے ہونا

नास्त्येव = ہے ہی نہیں (اوسکی اپدیش ہونے کی)

70/

कृतकृत्यत्वात् = اب ہی کرت کرتی ہو گئے

"प्रपरस्य" → तत्समनन्तरस्य اس کے بعد →

द्वितीयस्य دوسرے کو =

प्रबुद्धस्य = بدھ ہوئے کو / परशक्तिपात

परशक्तिपात پر شکتی کے انوگرہ سے =

→ प्रभातालोक = پرکاش کا دن کا پرکاش پرکاش

विलुप्यमानस्य اس کے لوپ ہوتے ہوئے ہوا

मायातमिस्रतया = مایا کی اندھیری رات سے

समुन्मिषद्‌ शद کھلتے ہوئے विशद = صاف

विवेकचक्षुषः = وچار آنکھوں سے क्षीयमान

کم ہوتے ہوئے =

मोहवशात् = موہ وش

प्रविजृम्भमान = پھیلتے ہوئے موہ मोह = موہ

साहसंपदः = ساہس کی سمپتی اور ... →

* آدی ہوش = یعنی لو سمجھا یعنی جاگرت اُسکا انت یعنی اخت۔ پد دو سپن اور سوشپتی میں

اُپ بنی ہوتا ہے → पद = پد — یعنی پڑاؤ

"तदाद्यन्ते" = اُسکے آدی اور انت پر

تیاگرت سمجھا ہے ×

तेषां जागरादीनां = اُن جاگرت آدی تینوں میں

त्रयाणां पदानाम्

अपारिभूत यत पदं = جو بنیاد بنا ہوا ہے

जाग्रदवस्थात्मकं = جاگرت لو سمجھا یعنی

तस्य अन्तभूते = اُس کا جو انت ہے

جو دو

यत्पदद्वयं = جو دو پد

स्वप्नसुषुप्ताख्ये = سپن اور سوشپتی तत्र = وہاں

तस्य आत्मतत्त्वस्य = اُس آتما UPALABDHI: =

رہتی ہے

स्यात = ہوتا ہے

वृत्तिकृद अभिप्राय = وِرتی کار کو ابھپرائے

अनुसारेण = اُس کے مطابق

तत = आद्यन्तपदस्य = آدی اور انت کے دو

एवं = ایسے ہی विग्रहः — سماس

कृत = کیا (کرت)

[illegible] " स्वप्नसुषुप्तादौ " سپن اور سوشپتی وغیرہ میں

इति = [illegible] तेन = اس نے

एतत्पदं व्याख्यातम् = یہ پد واضح کیا اس پد نے

अत्र च = اور یہاں आदि ग्रहणेन = آدی شبد سے

اس سے مطلب لیا گیا

[illegible] स्वप्नसुषुप्तावस्था = سپن - سوشپتی اوستھا

संगृहीतम् = سنگرہ کی گئی ہے (اس کا مطلب ہے) اور स्मृति = سمرتی

मोहाद्यवस्था = [illegible] परिग्रहः = [illegible]

[illegible] ← तस्याभिप्रेतः = کا مطلب سمجھا جاتا ہے

[illegible] एवं च व्याख्यानस्य اسی طرح وضاحت کو [illegible]
अयमाशयः کہ - اس کا یہی غرض ہے

इह = یہاں द्विविधि = دو قسم کے

आत्मतत्त्वस्य = آتما تتو کا

उपलब्ध्य = [illegible] उपदेशः = اپدیش

उपक्रान्तो = [illegible] → निर्वीत्थांश्च [illegible] =

ایک سب تو یہ ہے جہاں سب کچھ ہی ہے ہر طرف ایک ماشر ایک کی اپلبندی ہے
دوسرے ، ، جہاں یہ سارا دنیا ایک پر شو ہے - یہ شکتی پرستوں کا مسئلہ نہیں ہے -

اتما

एकः = ایک सर्वव्यतिरिक्तः سے بدل ہے وہ ہیں →

ایک ہے بے دوسرے ہیں
دور دنیا ہے

صرف चिन्मात्र स्वस्वरूप = ہے ایک روپ صرف چین ماتر ہی ایک روپ
विषयः : ان ہی ہو رہے | شکتی میں ہے

प्रपरा = 1 دوسرا विश्वात्मक = وشو روپ ہو तत शक्तिचक्र
विषयः = وہ اس دنیا میں [شکتی کا اس]

उभयरूपोपि = ہو وہ ہو رہی ہے
یہ دو روپ ہی

प्रथम उपदेशः
اڑتے ہے
= یہ اندر ہی

प्रस्मिन् = اس सुषुप्त स्वप्नरूपपद = سوتی میں سپ
द्वयापि
وہ دونوں اس میں ہی

प्रबुद्धस्य = اس پر بود کی

प्रपदो = زیادہ ہی ہے न = نہ उपयुज्यते =
وہ استعمال ہوتا ہے - یہیں ہیں جو ملتا ہے (اس)

اس

पदत्रय इव = تینوں کی طرح ہی सुप्रबुद्धस्य وہ پر بود ہے

तत्त्व उपलब्ध = تو شکتی جو ہیں ہے پایا प्रप्रयत्न सिद्धत्वात्
= اور وہ بحث کا کام نہیں سے ہو کر ہے

यतत
यतः = جس سے पदद्वय یہ دو پد ہیں

वर्ति संवित्प्रत्य = ہے ہی ان کا جو تی ہے دو پد ہیں
वमश

56

(۱۰) वमर्शमात्रादेव = [illegible]

यथा प्रतिपादित = [illegible] परतत्त्व उपलब्धिः

[illegible]

स्वयमेव = [illegible] तस्य = اس کو [illegible]

पृथ्वीय

रूप = روپ तथा हि = [illegible]

यदा = جب विगलितं = [illegible] सकल = [illegible]

वेद्य [illegible]

विकल्पत्वात् = وکلپ निष्केवला परा मृशति

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तदा = تب सर्वोपराग = [illegible] रहित = [illegible]

स्वरूपमात्र = [illegible] विश्रान्ति = قرار

नित्य = [illegible] प्रविलुप्त = [illegible] चेतयितृ मात्रे = [illegible]

आत्मतत्त्वं = آتم روپ کو   स्वयमेव = آپ ہی

उपलभते = پاتا ہے   यदा च = جب بھی

तत् तत् = وہ وہ   विभिन्न = [illegible]   स्वकारणा

विश्लेषेऽपि = [illegible]   स्फुरत्तरा = [illegible]   [illegible] =

अवभास = اوبھاس   चेतन अचेतन = چیتن یا اچیتن

विचित्र = نانا پرکار   भावचक्र = [illegible]

[illegible] } निर्माणमयीं = [illegible]

विनिद्रः = نیند کے بغیر   सन् = ہو

आत्मनः स्वप्नावस्थां = جب اپنی سپن اوستھا کو

परामृशति = پرامرش کرتا ہے   तदा = تب

तेनैव दृष्टान्तेन = اسی درشٹانت سے   प्रबोधबलात

= [illegible]

परमकारणस्य = [illegible]   स्वस्वभावस्यैव

परमेश्वरस्य [illegible]

58/

स्वेच्छामात्रस्य = صرف اپنی ہی خواہش व्यतिरिक्तकालान्तर = بن دو میں کا زمانہ

निरपेक्षा = کسی اپیکشا بغیر

सविकृतितारूपे = [illegible] (بدلیا)

तत्तु मुपलभते = اس پر حقیقت کو پاتا ہے

अप्रबुद्धस्य = اپربودھ کو पुनरतत् = کو نہ

प्रयत्नशतैरपि = سیکڑوں کوششوں سے

~~स्वच्छीकरोति~~ समर्थ्यमाणां = [illegible] तुम्बकतोयद्रववत्

तद्रवम् = [illegible]

नान्तः = نہ اندر स्पष्टीकरोति = [illegible]

तदेवम् = [illegible] अस्मिन् पदद्वये = اس دو پدوں میں (یعنی [illegible])

अप्रबुद्धस्य = اپربودھ کو उपलब्धि

स्यात् = نہ حاصل ہوتا ہے

इति प्रतिपाद्यते = یہ سمجھایا گیا ہے

परिशिष्टे = جو باقی رہ گئے   जाग्रत्तुर्ययोः

جاگرت (یعنی بیداری کی حالت)

पदद्वये = دو درجوں میں   सा अस्य नास्ति = اس کو نہیں ہے

इति अर्थात् उक्तं भवति = اس ارتھ سے کہا ہے

अपि तु = اس لئے   जागरावस्थायां = اسی جاگرت اوستھا میں

शब्दादिविषयग्रहणरा = شبد وغیرہ وشیوں کو گرہن کرنے والا

बहिर्व्यग्रहृदय व्यापार = جس کا دل باہر کے بیوپار میں لگا ہو

अपि व्यवस्थितं = وہ ٹکا ہوا رہتا ہے

तुर्यावस्थायां च = اور تریا اوستھا میں   लोकोत्तरत्वात् = لوک سے اوپر جانے سے (یعنی لوگوں سے اوپر ملنے میں)

अत्यन्त = زیادتی سے   अपि अपरिचितं = جو نہ کبھی دیکھنے میں آیا

स्वयं = آپ   दुर्लक्ष्यं = جو مشکل سے دکھائی دینے والا

परं तत्त्वम् = پرم تتو   इति तत् उपलब्धौ = اس کے اوپر بعد ملنے پر

तत्र = اُس پر प्रबुद्धोऽपि = پربدھ بھی

उपदेशमपेक्षत एव - = اُپدیش کی اپیکشا ضرور کرتا ہے

यत आह वृत्तिकारः = ورتی کار نے اسکو کہا ہے

" जाग्रत्तुर्यौ त्वागममात्रसम्यौ "

" جاگرت تریہ تو رہے ہے لیکن صرف شاستر ماتر ہی جانی "

इति :

" तस्य चिद्रूपस्य सर्वगतस्य "

اُس چت روپ کو ورتی میں رہا ہوا ہے

इत्यादिना व्याख्यातवान् वृत्तिकृत् एतत् ॥ وغیرہ سے ویاکھیان کرتا ہے ورتی کار نے

[illegible]

एवम् = ایسا   उपदेशविषयं = [illegible]

व्यवस्थाप्य = قائم کرکے   इदानीं = اب تو

पारमेश्वरस्य = [illegible]   तत्त्वस्य =

सर्वव्यतिरिक्तत्वेन = [illegible]   सार्वरूप्येण च

द्विप्रकारस्य [illegible]

जाग्रदादिषु   चतुर्ष्वपि [illegible]   पदेषु   प्रतिपादनाय

प्रविभाग = [illegible]   = [illegible]

आह = کہتے ہیں

ज्ञान ज्ञेय स्वरूपिण्या शक्त्या परमया युतः ।
पदद्वये विभुर्भाति तदन्यत्र तु चिन्मयः ॥२॥

[illegible]

ज्ञान ज्ञेय = [illegible]   स्वरूपिण्या = [illegible]

शक्त्या = [illegible]   परमया = [illegible]

युतः = [illegible]

२.   पदद्वये = [illegible]

विभुर्भाति = [illegible]   तदन्यत्र तु = [illegible]

चिन्मयः = [illegible]

विभुः → व्यापक = [illegible] ईश्वरत्वः [illegible]

चिन्मात्रमूर्ति आत्मा [illegible]

"पदद्वये" = [illegible] → जागर-स्वप्नाभिधाने

[illegible] =

"प्रमया" → प्रत्ययद्भुतरूपत्वात् = [illegible]

सर्वातिशायिन्या [illegible] 'प्राकट्या'

[illegible] =

→ निजेन सामर्थ्येन [illegible] "युतः" [illegible]

संहितो = [illegible] 'भाति' => [illegible]

चकास्ति - प्रकाशते [illegible] = कीदृश्या प्राकट्या?

[illegible]

"ज्ञान ज्ञेय स्वरूपिण्या" = [illegible]

ज्ञायते अनेन इति ज्ञानं [illegible]

[illegible]

बाह्याभ्यन्तरं करणम् = [illegible] ग्राह्यात्मके

चक्रे [illegible]

[illegible]

٦٠

ज्ञप्तिमात्रं वा = جو جان ماتر ہوتی ہے

ज्ञेयं → ग्राह्यं = گراہی शब्दादि = شبدادی

सुखादि च = سکھادی विषयजातम् = وشے جات سمو ہے

अनन्तविशेषं = بے حد فرق ہوئی तद्वैरूप्ये =

विद्योतते = ہے यस्याः = جس کی

सा = وہ तथा = ویسی तया = اُسی شکتی

किमुक्तं भवति? = اس سے کیا کہا گیا

परमेश्वर एव = پرمیشور ہی स्वमाया वशात् = اپنی مایا کے وش سے

नाना क्षेत्रज्ञरूपतया = نانا کشیتر جن روپ سے

भासमानः = بھاسمان ہوتا ہے (پرمیشور)

स्वामेव = اپنی ہی स्ववितीर्णां =

परां प्राप्तिं = پرا شکتی وہ ज्ञानज्ञेयभावेन

= گیان گیے بھاو سے

अवभासयन् = [illegible] जागर-स्वप्नदशा

= جاگرت۔ سوپن۔ دشا

व्यवहारमुद्भावयति = [illegible]

एतदेव च = اور یہی अपस्या: [illegible]
प्रात्तेः

पराम्यम् = برابری -

यत् स्वस्य = [illegible] वैभवस्वरूपस्य
[illegible]

प्रकाशमानताम् [illegible]
तिरोदधती = [illegible]

ज्ञानज्ञेयमया = [illegible] अभिन्नरूपतया
[illegible] =

स्फुरति = [illegible]

भिन्ने तु = [illegible] → रूपभेदाप्रथनमात्र प्रकारो
[illegible] =

61

मायातमसि = مایا کی تاریکی سے (اندھیرے)

विगलित = گلا ہوا، ज्ञातृ-ज्ञान-ज्ञेय वि

= جاننے والا — جاننا — جانی گئی

विभाग-विभ्रमम = تقسیم کے وہم سے

एकमेव परमार्थसत = ایک ہی پرمارتھ ست

चित प्रकाशैकरूपं = صرف علم کی روشنی کی صورت میں

तादृक स्वभाव = ویسا ہی سبھاؤ

अनुभवितृतामात्र = (تجربہ) کرنے والا

धर्मी लक्षणा = وہی دھرمی لکشنا شक्तिके

[illegible]

ہر حالت میں

तत्त्वम = وہی تو ईप्सित = (خواہش کیا ہوا)

यतः = جس واسطے आह = کہا ہے

तत = وہ تو अन्यत्र तु = دوسری جگہ (illegible)

चिन्मय इति = صرف علم ہی ہے

तस्मात = اس لئے उक्तरूपात = جو کہا گیا

पदद्वयात = دو پد ([illegible])

۸۱

अन्यत्र — अपरत्र = دوسری جگہ → सुषुप्त तुर्याभिधाने
= سوشپت تورو نام سوئٹ وش

पदद्वये = دو ادوپر دولھ चिन्मयो = چیتن

विमर्शभाति = ویاپک

= باشش

دولھ चेतयत इति = چنتی ہوئی چیت = چیت، ہوو

→ उपलब्धृस्वभाव = لبھی اتی کی ہوئی (ہوو دولھ) आत्मा = آتما →

→ ईश्वरः = ایشور तन्मात्र = صرف اتنی प्रकृति = پرکرتی
بوحقائی سوبت

तयो पदयो = اُن دو پدوں پر (پس ادو)

व्यतिरिक्तत्वे = جدا ہونے پر वेदनीय = جاننی

अभावात = نہ ہونے سے اسکے جداپن کے ہونے سے निष्कल
= نشکل - کلا رہت

स्वात्ममात्र
= صرف اپنی آتما ماتر ہی विश्रान्त = قرار پکڑی ہوئی

प्रकाशरीश्वर = ایشور کا پرکاش
एव इत्यर्थः
प्रकाशात = ۔ ایسے ہونے سے ہوو یہ اسکے ہوو

61

ननु = پرنتو ہے ۔ जाग्रगर स्वप्नयो = جاگرت اور سپن میں

ज्ञान - ज्ञेयमत्वेन گیان اور گیئی ہونے سے =

सुषुप्त-तुर्ययो = سوشپتی اور توریہ चिन्मयत्वेनैव

प्रकाशान प्रभेदात وہ صرف چن ماتر ہی ہونے سے

پرکاش میں بھید نہ ہونے سے

पदद्वयमेव = یہ دو ہی پد

तत्कथं पदचतुष्टयम् इति تو کیسے ہے کہ چار پد ہیں (پرکاش میں بھید نہ ہونے سے)

अत्र उच्यते = اس پر کہا ہے

जागरस्वप्नपदार्थानां جاگرت اور سپن میں جو پدارتھ ہیں ان کے - ان کی

स्थैर्य = مضبوطی (ٹھہراؤ) अस्थैर्य = نہ مضبوطی (ہمیشہ) प्रतिपत्ति = جان

विकल्प = اس کا بھید कृता = کیا ہے उपास्ति ۔ भेदे = بھید

इति = یعنی ۔ ततः पदद्वयम् = دو پد ہیں

यतः = کیونکہ ईश्वर = ایشور ۔ परिकल्पितः = کلپنا کی ہے

सर्गो = سرشٹی जाग्रावस्थायां = جاگرت اوستھا میں

پیدا وہ گیان اور گیئی ہیں [illegible]
۲ ہی پد ہیں - چار کیسے ہوئے
لہذا دو ہی پد ہوئے

جاگرت اور سپن
میں جو پدارتھ ہیں
وہ استھر - اور [illegible]
سے دو دو قسم کے
سے یہ چار ہیں
کیونکہ - ایشور [illegible]
[illegible]
[illegible]

दृढत्वेन = مضبوطی سے   प्रतिपद्यते = سوجھ سکتا ہے

स्वप्ने तु = سپنے میں   अदृढत्वेन = نہ مضبوطی سے

अत्र शा परिकल्पित = یہ جیووں نے کی بنائی ہوئی ہے

इत्यन्यो पदयो भेद कारणाम्. = یہ دونوں پدوں میں بھید کا کارن ہے

सुषुप्तावस्थायां तु = اب سوشپت اوستھا میں

सत् अपि चिन्मात्रस्यैव तत्त्वे = آتما چیتن ہی اگرچہ موجود ہے تو بھی

मोहवशात् = موہ کے وش سے

अहम् इति = "اہم" روپ سے

उपलब्धृ चमत्कार = جاننے والا آنند روپ

विरहात् = اس کے رہت ہونے سے

असत् इव भाति = اسَت جیسی بھاستی ہے

तस्यैव च = اسی کی   तु = لیکن   तत्त्वस्य = تتو کی

परमार्थसत्तया = پرمارتھ ستّا سے

جاگرت سپنے دونوں پدارتھ جیووں کی کلپت ہیں اور سپنے میں جاگرت کا بھید کا کارن ہے

سشپتی میں اگرچہ آتما چیتن ہی موجود ہے تو بھی موہ وش سے

आत्मात्वेन = آتما آتم کے روپ سے

उपलब्धिस्तुर्यपदे = (اُپلبدھی) ہے
= تریہ پد میں ہوتی ہے

इत्यर्थ = یہ مطلب ہے۔ सुषुप्ततुर्यौ भेदः = سوشپتی اور توریہ میں فرق

तेन = اس سے۔ चत्वार्येव पदानि = چار ہی پد

(ویدانتی نام) विश्व = وشو तैजस = تیجس

प्राज्ञ = سوشپتی तुर्यादि = توریہ

संज्ञाभिः = ناموں سے

शास्त्रान्तरेष्वपि = دوسرے شاستروں میں

प्रसिद्धानि = مشہور ہیں

'ज्ञान ज्ञेय भेदेन द्विरूपम"

گیان گیہ بید سے دو روپ ہے"

इत्यादिना व्याख्यातमेतद्वदन्तौ ॥

اس طرح وضاحت کی گئی ہے اس کی۔

62

इदानीम् [illegible] (اس وقت) उक्तेन प्रकारेण [illegible] प्रबुद्धस्यैव = [illegible]

उपदेश्यत्वम = [illegible] उपक्रान्ते = [illegible]

द्रढयितुम् [illegible] अप्रबुद्धानां च [illegible]

तत् = [illegible] प्रतिषेद्धुं = [illegible]

श्लोकत्रयम = [illegible]

आह

गुणादिस्पन्दनिःष्यन्दाः सामान्यस्पन्दसंश्रयात्
लब्धात्मलाभाः सततं स्युर्ज्ञस्यापरिपन्थिनः ॥३॥
अप्रबुद्धधियस्त्वेते स्वस्थितिस्थगनोद्यताः
पातयन्ति दुरुत्तारे घोरे संसारवर्त्मनि ॥४॥
अतः सततमुद्युक्तः स्पन्दतत्त्वविविक्तये।
जाग्रदेव निजं भावमचिरेणाधिगच्छति ॥५॥

गुणादि = [illegible] स्पन्द = سپند سوت निष्यन्दाः [illegible]

= [illegible] सामान्यस्पन्द [illegible]

संश्रयात् [illegible] = [illegible]

लब्धआत्म लाभाः = [illegible] सततं = [illegible]

६/

स्यु = [illegible] — शस्य = [illegible] — समरिपन्थिनः [illegible]

[illegible]

धियं

अपप्रबुद्ध = [illegible] — तु = [illegible]

ते स्वस्थिति = [illegible] — भगनोधता

पातयन्ति = [illegible] — दुस्तारे = [illegible]

घोरे = [illegible] — संसारवर्त्मनि = [illegible]

अतः = [illegible] — सततम् = [illegible] — उद्युक्तः = [illegible]

स्पन्दतत्त्व = [illegible] — विविक्तये = [illegible]

जाग्रदेव = [illegible] — निजं भावम् = [illegible]

अचिरेणा = [illegible] — अधिगच्छति = [illegible]

63/ "एतः" اس کا | प्रस्तुत व्याख्यान = جو پہلے دیا گیا ہے میں یعنی

श्लोकत्रय निर्दिष्टात् = پہلے تین سلوک جو بتائے گئے ہیں हेतोः =
اسی کارن سے

"जाग्रदेव" = جاگرت ہی ہوکر → प्रबुद्ध एव = ہوشیار
بیدار رہ کر جو

"निजं भावम्" = اپنا سکھا = आत्मीयां = اپنی جو ہے پرماتھ परमार्थिकी सत्ताम्

"अचिरेण" = نہ بہت دیر تک → अल्पीयसा कालेन = تھوڑے وقت میں

"अधिगच्छति" = حاصل کرتا ہے सम्यग् उपलब्ध्या = اچھی طرح سے جان کر
स्वीकरोति = اختیار کرتا ہے

"एव"
اسی طرح جاگرت ہی ہوکر

एवकारेण = ایو کے ساتھ एव अप्रबुद्धं =
اپر بدھ ہے جو

व्यवच्छिनत्ति = الگ کرتا ہے [یعنی جو ہر طرف پر بدھ ہے نہیں ہے]

कीदृशः सन्नधिगच्छति? کیسا ہوکر حاصل کرتا ہے

"स्पन्द तत्त्वविविक्तये" = سپندتت کی بہتری کے لئے

सततमुद्युक्तः" = ہمیشہ اور لوگ سے ہوشیار ہے

स्पन्दस्य = سپند کا परस्य =
اُتم جو ہے

63/

ज्ञातस्य तत्त्वस्य = [illegible]

[illegible] उपचरित = [illegible] सामान्य = [illegible] (1)

विशेषात्मकतया = [illegible] रूपात्मकतया = [illegible]

[illegible] द्विप्रकारत्वेन = [illegible] ([illegible])

व्याख्यास्यमानस्य = [illegible] यत तत्त्वं = [illegible]

परमार्थः = [illegible] यथाक्रमम = [illegible]

[illegible] उपादेयतया हेयतया च = [illegible]

[illegible] = निश्चितरूप

तस्य = [illegible] विविक्तये विवेकाय = [illegible]

पृथक्करणाय = [illegible] स्व = [illegible]

उपादेयतमः = [illegible] परमकारणभूतस्य [illegible]

सत्यस्य [illegible] आत्मस्वरूपस्य

[illegible] अयमहमस्मि " [illegible]

एतः = [illegible] सर्वैः = [illegible] प्रभवति = [illegible]

64

अत्रैव च प्रलीयते = اُسی میں سب لگ ہو کر ہی ہو جاتا

इति प्रत्यवमर्शात्मको निजो धर्मः = اسی طرح مراد یہ سب جو ہے اپنا سوبھاو ۔

सामान्यस्पन्दः = یہی ہے سامانیہ سپند =

جو ہونی ہی ہے ہی سپند ہے

तथैव = ویسے ہی येते = अप्रत्यन्तहेयाः = زیادہ ہی ہے جو چھوڑنی ہیں

اور विशेषस्पन्दाः = وشیش سپند = فرق دار سپند ۔

جو अनात्मभूतेषु = جو آتما نہیں देहादिषु = دیہہ وغیرہ (یہ سب جڑ ہیں)

(اور) आत्माभिमानम् = آتما ابھیمان उद्भावयन्तः = اُبھارتے ہیں =

کئی الگ الگ परस्परभिन्न मायायी = آپس میں بھن مایا
سچی ... وغیرہ प्रमातृविषयाः = پرماتر وشے

सुखितोऽहं दुःखितोऽहम् = سکھی ہوں - دکھی ہوں (وہ کیا ...) یہ بدھی کا دوسرا

इत्यादियो = وغیرہ

गुणामया = گنوں سے (رجو ستو - تمو گن سے)

= [illegible]

प्रत्यय प्रवाहाः = یہی گیان پرواہ — یہی من جان کا پرواہ

संसारहेतवः = یہی ہیں سنسار کا کارن

इति विभागाद = [illegible] "सतत" [illegible]

सर्वासु अवस्थासु = سب حالتوں میں

अव्यवधानेन = [illegible] उद्यतः [illegible]

उक्त = کہا वक्ष्यमाण = [illegible] उपपत्त्य = [illegible]

उपलब्ध्य = [illegible] उपाय प्रतिपत्त्य [illegible]

[illegible] अभिव्यज्यमान = [illegible] स्वबल = [illegible]

वृहत्त्वात् = [illegible] अव्याहत = [illegible]

उत्साहम् = [illegible] अध्यवसितः = [illegible]

एतेन = اس سے प्रबुद्ध एव = [illegible]

उपायपरिहीन = [illegible]

[illegible] एक तानः सन् [illegible] = [illegible]

65/

सत् = آخرکار جو अचिरेण = نہ دیر بعد

स्वरूपमुपलभते = اپنا سروپ حاصل کرتا ہے

न अन्यः = اور کسی کو یہ نہیں ملتا ہے

इति प्रतिपादितम् = اس سے سدھ ہوا ہے

कुतो हेतोः स = کس کارن سے وہی सवा अधिगच्छति नान्यः?
اور دوسرا نہیں کرے گا - کیوں وہ ہے

इत्याह = اس پر کہا ہے

" गुरवादि स्पन्द-निष्यन्दा" گرو آدی کے دو سپند میں
انکے دو پر لوہ ہیں

यतः = کیونکہ جو " गुरवादि स्पन्द-निष्यन्दा = گرو آدی کے دو پرساد ہیں

तस्य = اس پر دو دھ ہو

अपरिपन्थिनः = نہ رکاوٹ ڈالنے والے ہوں

स्युः

इति संबन्धः = یہ سمبندھ ہے

स्पन्दानां = جنبش کرنے کی श्रोत्रच ज्ञानादि शक्तीनां = جن قوتوں کہ گیان آدی کی ہیں ان کو جو تکلیف ہے - یعنی ہر ایک میں

निष्यन्दा = رکنا جو ہر واقعہ

नानार्थौ = تمام ہر بار ارتھ उन्मुखेन = وہ سمجھ ملاتی ہیں - دشتوں پر جاتی ہیں (یعنی میں سنسید ہیں)

प्रसृता = پھیلے → प्रवाहा = بہاؤ भिन्नाः = الگ

प्रत्ययाः = گیان یعنی स्पन्दनिष्यन्दाः = سنسید شدہ

गुणा आदयः = گن آدی یعنی प्रथमे प्रधाने = یعنی اسی پردھان میں - (یہ تینوں [illegible])

پردھان پر [illegible]

एषां = ان کا یعنی گن آدی وہ [illegible] ते गुणादयः →

सुखाद्यात्मकत्वेन = سکھ - دکھ آدی [illegible] सत्त्वादिमयाः = ستوگن - رجوگن - تموگن وغیرہ

गुणादश्च = [illegible] گن [illegible]

स्पन्दनिष्यन्दा = یعنی میں سند [illegible]

पृष्ठे सुखी - दुःखी = [illegible] سکھی ہوں - دکھی ہوں मूढः = [illegible]

65/

इत्यादयो ज्ञान भेदाः = وغیرہ گیان بید

किं रूपाः ? = یہ کس قسم کے ہیں

सामान्य स्पन्दसंश्रयात् = [illegible] سامانیہ [illegible] سپند [illegible]
سرگرم ہوتے ہیں

[illegible] Touch ار دو

लब्धात्म लाभाः = [illegible]
[illegible]

सामान्यस्य = سامانیہ → सर्वव्यापकस्य = جو سب میں ویاپک ہے

अन्तर लीन → = اپنے ہی میں جو لین ہے

अन्त विशेष स्पन्दस्य = ہے جو وشیش سپند میں

परस्य = جو پر ہے - جو پرم ہے शक्तिस्फुरितस्य = شکتی کا سپھار =

"संश्रयात्" = [illegible] सम्यक्

अनन्यशरणतया = [illegible]

आश्रयणाद् = [illegible] آسرا → भजनात् = سیوا کرنے سے

इतो = اس لئے [illegible]

۶۵

[illegible] "लब्धात्मलाभौ:" [illegible]

→ लब्ध = [illegible] आसादित: [illegible]

तेन तेन = اس اس भिन्नाकारेण = [illegible]

आत्मन: = اپنے آپ کو

स्वस्वरूपस्य लाभ [illegible] → उदयो [illegible]

यै यौ: = جو तै = وہ

तथा विधा = [illegible] गुणादिस्पन्दविषयन्दा: [illegible]

"अस्य" = اس کی परमेश्वर प्रकृतात्मा उदित [illegible]

क्षेयोपादेय = [illegible]

प्रत्यय = [illegible] प्रमातृ [illegible] भावस्य [illegible]

सामान्यस्पन्द एव = [illegible]

एवं परमेश्वर रूप मुख्य शक्तित्वेन = [illegible]

([illegible])

[illegible]

66/

اس سے — प्रतिष्ठित = ٹھہرا ہوا — निर्विकल्प = نرولکپ — प्रतिपत्ति: = جان پہچان کو =

सुखादि = سکھ دکھ وغیرہ — उपादि = زیادتی — उपराग = اثر ڈالنے والا =

जनित = اس سے اٹھا ہوا

येभ्यो = جن سے

अन्योन्य भिन्न रूपेभ्या = ایک دوسرے سے الگ روپ والی [illegible]

विशेषस्पन्देभ्यो = وشیش سپندوں سے

व्यावृत्त = [illegible] — स्वप्रातत्य अभिमानस्य = [illegible]

उक्त = کہی ہوئی — वक्ष्यमाण = [illegible] — युक्त्य = [illegible]

अभ्यास = [illegible] — नित्योद्योगेन = اس پر [illegible]

विजिगीषमाणस्य = [illegible]

[illegible] "परिपन्थिनः स्यु:" = [illegible] →

स्वबलाविर्भावात् = [illegible] — प्रतिहत स्वभाव आवरण = [illegible]

सामर्थ्या: = [illegible]

सन्त: [illegible] अप्रति द्वन्द्विना: = [illegible]
संपद्येरन्

परतत्त्वो = [illegible] उपलब्ध्यु [illegible] उत्साहे
[illegible] =

= [illegible] निकृन्तु = [illegible]

न प्रभवेयुरिति = [illegible] यावत्

इदमत्र तात्पर्यम् = [illegible]

ये केचन = [illegible] यस्य = [illegible]

कस्य चिन्मात्रायी यस्य प्रमातु: [illegible]
= [illegible]

सुखाद्यात्मकत्वात् = [illegible] गुणामया: स्पन्द - निष्पन्दा:
[illegible]

प्रत्ययसंधाना:

→ = [illegible]

प्रसरन्ति = [illegible] ([illegible]) ते सर्वे
= [illegible]

एकमेव = [illegible] सामान्य
स्पन्दम् = [illegible]

आश्रित्य = [illegible] ते तमात्मानं = [illegible]

प्रतिलभन्ते = پاتے ہیں   प्रबुद्ध एव = صرف بیدار ہوکر ہی

तु = لیکن   तत् उदया = اُس کا جو اُدے ہے

अमितप्रज्ञा = اُسکی جو [illegible]

पात्रम् = اُس کا پاتر [illegible]

یہی بیدار جو ہوتی ہے

एत: = یہ اس   तस्य = اُس بیدار ہونے کو

नित्ययोगिन: = نت ادوگ یوگی   सत: = [illegible]

एते = یہ   प्रयोगिनो = جو ہیں یوگی

भवितुं = ہونے کو   न प्रभवन्ति = نہیں ہوسکتے

ये तु अप्रबुद्धा = جو ابھی بیدار نہیں   ते = وہ

येते = یہ   दुर्निवारप्रसरा: = [illegible] اس پھیلنے کو

इत्याह = اس طرح کہا ہے

[illegible] "अप्रबुद्धधियस्तु" جن کی ابھی بیدار نہیں ہوئی [illegible]

وہ اِسے ہر سہ پہر تا جو نہیں پاتے - [illegible] جو اُن کا نہیں ہوتا ہے

67/

अप्रबुद्धा = [illegible] पारमेश्वरमे परानुग्रह विरह्यात्

= [illegible]

विगलित = [illegible] गाढाज्ञान = [illegible]

निद्रा [illegible] धी = [illegible] प्रज्ञा

येषां ते = [illegible] तथा = [illegible]

पुनः [illegible]

तान् = [illegible] अमी = [illegible] यथा = [illegible]

व्यथाव्याख्याता [illegible] गुरवादिस्पन्दविःष्यन्दा

[illegible]

[illegible] "घोर" = [illegible] → विभीषिकाप्रातर

= [illegible]

संकुलत्वाद् [illegible] दारुणा = [illegible]

२

अत एव = [illegible] "दुरुत्तारे" [illegible]

"दुर्लङ्घ्ये" संसारवर्त्मनि [illegible]

जन्मादि प्रबन्धमोधी [illegible]

"पातयन्ति" [illegible] [illegible]

"पश्यन्ति" = دیکھتے ہیں   तत्र = وہاں تک

अनवरतं = ہمیشہ   भ्रामयन्ति = گھماتے ہیں

कीदृशाः सन्तः? کیسے ہوتے ہیں

"स्वस्थितिस्थ" اپنے سروپ میں ٹھیک ٹھیک

"स्थगनोद्यताः" - اور اپنے سروپ کو ڈھکنے کے لئے تیار ہوتے   स्वस्मिन् = اپنے میں

परमात्मनि = پرماتم سروپ کے   و   सामान्यस्पन्दमात्र = कर्मके

سامانیہ سپند ماتر پرکاش سروپ میں ہے

स्थिति = اصلی ٹھیک ٹھیک   निर्विकल्प

نروکلپ جو حالت ٹھیک ٹھیک سمجھنے پر وہ سروپ وہی = प्रतिपत्तिस्वभावा

→ स्वशिर - [illegible]   و   प्रतिष्ठा = پرتشٹھی

तस्याः اس نروکلپ کی ٹھیک ٹھیک   "स्थगने" ڈھکنے کے لئے

→ "सद्य एव" = فوراً ہی   आच्छादने = ڈھکنا

"उद्यता" = [illegible] → गृहीतोद्योगाः :

[illegible]

प्रतिपक्षभूतस्य = [illegible]

[illegible]

ظہور پا प्रबोधस्याभावात् = ظہور پانے کے نہ ہونے سے لہذا लब्धप्रसरत्वात्

- [illegible]

= بے روک ٹوک پھیلنے کی وجہ سے

एवम् उपचरिता: = اور اس طرح بڑھائی ہوئی گویا

= جن کی خاطر خواہ تسکین کی گئی ہیں -

किम् उक्तं भवति = کہنے کا یہ مطلب ہے

[illegible] यथा = جیسے کہ कोश्चिद् = کوئی राजादीन् = راجاؤں کو

प्रमादित्वाद् = غفلت آدی ہونے کی وجہ سے ऽप्रवस्था [illegible]

सत्यपि = ہونے پر بھی सैन्यादि = فوج وغیرہ ہوتے ہوئے स्वसामर्थ्यं

सत्त्वेन = ہونے کی وجہ سے

अप्रतिपद्यमानान् = نہ سمجھتے ہوئے (سمجھنے) لہذا

अन्तर = اندرونی प्रेक्षिणो = [illegible] विपक्षा: = دشمن

کمین स्वपद = اپنا عہدہ [illegible]

[illegible]

"पश्यन्ति" = [illegible] तत्र = [illegible]

अनवरतं = ستت भ्रामयन्ति = [illegible]

कीदृशाः सन्तः ? [illegible]

"स्वास्थितिस्थ" [illegible] स्वस्मिन् = اپنے

"थगनोद्यताः" = [illegible]

परमात्मनि = [illegible] सामान्यस्पन्दमात्र = कर्मके

[illegible]

स्थिति = [illegible] निर्विकल्प

[illegible] = प्रतिपत्तिस्वभावा

→ स्वस्थिर [illegible] प्रतिष्ठा = [illegible]

तस्याः [illegible] "स्थगने" [illegible]

→ "सद्य एव" = [illegible] आच्छादने = [illegible]

"उद्यता" = [illegible] → गृहीतोद्योगाः [illegible]

[illegible]

प्रतिपक्षभूतस्य = [illegible]

[illegible]

[illegible] प्रबोधस्याभावात् = جاگرتی نہ ہونے کی وجہ سے [illegible] لہٰذا लब्धप्रसरत्वात्

= پھیلاؤ پانے کی وجہ سے

इवम उपचरिता: = اس طرح برتی ہوئی [illegible]

= [illegible]

किम् उक्तं भवति = یعنی کہ کیا کہا گیا

[illegible] यथा = جیسے کوئی कोश्चिद् = کوئی राजादीन्

= راجہ وغیرہ کو

प्रमादित्वाद्य = غفلت کرنے والے [illegible] प्रवस्था [illegible]

सदपि = ہوتے ہوئے بھی सैन्यादि = فوج وغیرہ [illegible] स्वसाथ्यं

सत्वेन = ہونے سے

अप्रतिपद्यमानान् = نہ ماننے والے (غفلت [illegible]) لہٰذا

अन्तर = اندر [illegible] प्रक्षिप्तो = [illegible] विपक्षा:

= دشمن

[illegible] स्वपद = اپنا عہدہ [illegible]

= اس کو گرا دیتا ہے

व्यपरोपणबद्धाभियोगा = اس مرتبہ سے گرانے میں مشغول ہیں

महती व्यसने पातयन्ति = بڑی تکلیف اور دکھ میں گراتے ہیں

کب تک جب

अप्रा = ؟ स्वसामर्थ्य = اپنی طاقت

सद्भावप्रतिपत्ते: سے بھاو کا جان تک

एवम् अप्रबुद्धस्य اس طرح نہ جاننے والے کا सर्वकर्तृत्वादि = سب کرتا ہونا وغیرہ

लक्षणं = علامت निजं महिमानं

सामान्यस्पन्दरूपं وہ سامانیہ سپند روپ والا

विद्यमानापि موجود ہوتے بھی

अप्रतिबुद्ध्यमानस्य = نہ جاننے والے کی — یہ جانا نہیں ہے جسے

سدا सर्वकार्यपरतन्त्रं ساری کاموں پر ماتحت کرتا

अप्र— देहादिसर्गमेव شریر وغیرہ کی پیدائش ہی

आत्मत्वेन = روح ہستی کو آتما سمجھ کر

अवगच्छत = گرہن کرنا ہے - سمجھنا چاہئے

एते = یہ लब्धप्रसरा = بنے ہیں پرسر جو

ہوا ہے → सुखितोऽहम् = میں سکھی ہوں دیہ • मुख्य प्रधाना: = گن پردھان

प्रत्यय = (جانتا ہے) प्रवाहा = پرواہ

सत्य स्वात्मनि = سچے آپنے روپ میں स्थितिं = व्यवधाय

ये संसारमेव = سنسار کو ہی आसादन्ति = حاصل کرتے ہیں

تک سک आ प्रबोध अप्राप्तेः = جب تک دکھ دور ہو

گیان ہوا

دن اندریوں پرتیت ہے اور وہ نہیں ہے - इति प्रबुद्धा एवास्योपदेशस्य = اس سے علم کا ہر روپ

विषया = صرف اس اپدیش کا وشے ہیں

न = نہ अप्रबुद्धा = اپر بودھ نہیں ہے

तेषां = ان کے तेषां हि कथंचित् = ان اپر بودھ

= کس طرح

٦٤/

गृहीतमप्युपदेशवचं = [illegible]

निश्चायक = [illegible] प्रपिपत्ति = جان

शिथिल = [illegible] प्रशात्वात = [illegible]

न = نہ अन्तर = اندر निश्चामति = قرار کرنا [illegible]

यथोक्तं केनापि = [illegible]

ज्ञेयत्वमप्युपगता हृदये न रोढुं

शक्ता: प्रमूढमनसामुपदेशवाच:

आर्द्रत्वमादधाति किं नलिनीदलानां। श्लिष्टा निरन्तरतयापि नमोऽम्बुधारा:॥

जान लینا ज्ञेयत्वम = [illegible] उपगता = [illegible] हृदये = دل میں

न = نہ रोढुं = [illegible] शक्ता: = [illegible]

प्रमूढमनसामुपदेशवाच: = [illegible]

= [illegible]

आर्द्रत्वाम = [illegible] आदधाति = [illegible]

नलिनीदलानाम = [illegible] श्लिष्टा = [illegible]

निरन्तरतयापि = [illegible] नमोऽम्बुधारा: = [illegible]

[illegible]

इति तत्र = پتہ

"जाग्रदवस्थायामेव" "جاگرت اوستھا میں ہی"

इति वृत्तिग्रन्थः = اس لیے وِرتی گرنتھ

प्रकृतानुसारेण = [illegible] (کے مطابق)

प्रबुद्धावस्थायाम् = [illegible] इति बोद्धव्यम् = [illegible]

यदि वा = اگر سمجھ सततो = [illegible] उद्युक्तः प्रयत्न [illegible]

प्रबुद्धस्वीकारे सति [illegible] सति सततोद्युक्तः = [illegible]

प्रबुद्धो = [illegible] वक्ष्यमाणो पदेषु क्रमेण [illegible]

जाग्रदवस्थायां = جاگرت اوستھا میں

→ व्यवहारदशायामेव [illegible]

निजंभावम् [illegible] अधिगच्छति [illegible]

इति व्याख्येयम् = [illegible]

व्याख्यातमेतत् = [illegible] श्लोकत्रयं = [illegible]

वृत्तौ = [illegible]

विभागेन = [illegible]

'प्रातः सततं सर्वकालं यः करोति'

صبح ہمیشہ ہر وقت جو کرے

इत्यादिना तथा = اس طرح سے

तथा = اور گुरोः स्पन्दस्य = استاد سپند کو

→ सत्त्वरजस्तमोरूपस्य = ستو رجو تمو روپ کی

इत्यादिना = طرح سے तथा [illegible]

'स्वल्पबोधांस्तु' = [illegible]

इत्यादिना = [illegible] ग्रन्थेन = [illegible]

एवं = ایسا प्रबुद्धस्यैव = [illegible] जागरतुर्यपदयोः = جاگرت تریہ پد کو

उपदेक्ष्यत्वे = [illegible] व्यवस्थापिते = [illegible]

सर्वशरीरि = [illegible] साधारणा = [illegible]

जाग्रत् बृहत्यन्तर = [illegible] नीलीनामेव = [illegible]

यावत् = [illegible] परतत्त्वोपलब्ध = [illegible] उपदेष्टुम् = [illegible]

प्राह = [illegible]

[illegible]

अति क्रुद्धः प्रहृष्टो वा किं करोमीति वा मृशन् ।
धावन्वा यत्पदे गच्छेत्तत्र स्पन्दः प्रतिष्ठितः ॥६॥

अति क्रुद्धः بہت کرودھی ہو یا प्रहृष्टो بہت خوش ہو

या किंकरोमीति = کیا کروں ایسا [illegible] मृशन् = [illegible] کر رہا ہو

या धावन्वा = یا دوڑتا ہوا ہو यत पद गच्छेत = جس پد پر [illegible] جائے

तत्र स्पन्द وہیں سامانیہ سپند ہے

प्रतिष्ठितः ٹھہرا ہوا ہے

سامانیہ - بے فرق دار

सामान्यविशेष = سامانیہ اور وشیش अभेद = [illegible]

प्रतिष्ठित = ٹھہرا ہوا अप्रतिष्ठित نہ ٹھہرا ہوا रूपत्वात

= [illegible]

स्पन्दस्य द्वैविध्ये = سپند کی دو قسم [illegible] स्थित = ٹھہرا ہے

which is to be accepted उपादेयः = گرہن کرنے لائق ہے

प्रतिष्ठितः स्पन्दः = [illegible]

तत्र पदे = اس پد پر उपलभ्यते = [illegible]

[illegible]

व्यपदेश

यः = ३. प्रतिष्ठित = [illegible] अप्रचलत्व = [illegible] ।

हेतुः = [illegible] सुखादित्वाद्यो

= [illegible]

अप्रनित्य विशेष स्पन्द = [illegible] अविषयत्वाद्

= [illegible]

अप्रकम्प स्थिति = [illegible]

स्वभावम [illegible] मात्र =

आधारः [illegible]

सामान्यरूपो = [illegible]

मुख्यः = [illegible] स्पन्दः = [illegible]

[illegible] प्रत्यस्तमित = [illegible]

समस्तविशेषप्रोक्ति चक्र = [illegible]

परमात्मधर्मः = [illegible]

स = [illegible] 'तत्र' → [illegible]

तस्मिन्नस्य प्रवृत्तेव = [illegible]

निर्दिष्यमाने = نامزد ہونا (?) पदे = پر

उपलक्षणीयः = برکت کرنے کو कस्मिन = کون سا ?

यत्पदम् = جس کھاتے پر "प्रतिक्रुद्धो" = سب روٹھنا سے

"गच्छत" = جاتے → प्रलय = تباہی क्षत = زخم

दारुणा = کٹھن उपद्रुत = ستایا द्विषद्दृष्टीनादिना = دشمن کی نظر وغیرہ سے

तीव्रतर = سب تیز कोप = غصہ प्राह्निः = ...

ततजन्य = اس سے پیدا ہوئی विकाराव = ... स्थाया

प्रागवे = پہلے → भटिति = جلد जातमात्र क्रोधो

"यत्पदं" → यां भूमिकां = ... गच्छते = جاتے

→ मनसा = دل سے तथा = ویسے प्रति प्रत्युच्छे = ...
प्रासादयेत

"यत पदं गच्छत" = ...

मृत = مردہ प्रत्युत्थित = ... प्राणसम = برابر ...

= ...

معنی لفظ

प्रमदादि = عورت وغیرہ दर्शनादिना = دیکھنے وغیرہ سے

"प्रहृष्टः" = بہت ہی ہرشی →

प्रकृष्टेन = زیادہ خوشی سے → परमेशा = اعلیٰ

हृष्टः = خوش ہوا → अतिप्रसन्न – प्रमुदित → आनन्दनिर्भरः
آنند سے پر ہوکر

तथैव = ویسا ہی उत्पन्न = ہوا मात्र = بس

त्वर्षौ = [illegible] यत्पदं गच्छते
= جس جگہ جاتا ہے

तथा = ویسا "किंकरोमि इति = میں کیا کروں

मृष्टान्न مزے دار کھانا (لذیذ کھانے [illegible])

यत्पदे = جس جگہ गच्छते = جاتا ہے

क्रुद्धेन = غصے سے राजा = راجہ یا

रिपुराजा = دشمن راجہ बलवता = بلوان کے

अभियुक्त = پکڑا

तत प्रतीकाराय = اس کے علاج کے لیے | कर्तव्य = فرض یا کرنی

In Dialectic — निश्चयम लभमानः = یقینی طور پر نہ سمجھتے ہوئے (کہ کیا کروں)

ارادی طور — केवलं = صرف کیا کیا جائے " किं करोमि "
کہ کیا کروں سمجھ میں نہیں آتا

→ किम उपायमात्र अवलम्बये - کس اپائے کا سہارا لوں

इति प्रतिपत्तिमूढ एव [illegible] (یعنی کچھ سمجھ میں نہیں آتا)

'मृष्णन्' ' [illegible] → विकल्पयन् = دکھائی دیتا ہے کہ کیا کروں

निरालम्बन चित्तवृत्तियों = اس وقت کی بغیر سہارے کی

[illegible] — या भूमिकाम = جس موقع کو | अधितिष्ठेत = بیٹھ جائے | तत्र = وہیں اس جگہ میں

प्रतिष्ठितस्पन्द = [illegible] | उपलब्धि धारयितः = [illegible]

= [illegible]

एतन्न = ان प्रकार त्रयेण = تین پرکار سے

दुख-सुख-मोहात्म = دکھ سکھ موہ — ستوگن رجو تمو گن اس حساب سے

विषयग्रहणरूप = ان وشیوں سے موجود
کا گرہن روپ

अन्तःकरण = انتہ کرن کا व्यापार = ویاپار

मय = والے जाग्रदवस्था विषयेण
= پہلے اس جاگرت اوستھا کے وشے ہونے سے

स्वेविधानि = سب طرح प्रकारान्तरेण
اور پرکار انتر

संगृहीतानी = ملے ہوئے (اور پرکار انتر کا جاگرت)
वेदितव्यानि جاننے چاہئیں

तेन = اس अतिक्रुद्धवत् = جیسے کوئی بہت غصے میں آیا ہوا
اُسکی طرح

आशङ्कितेष्ट = شنکھا کیا ہوا येन जन विनाश
= پیارے من کا جو وناش ہے -

श्रवणादिना = سننا - دیکھنا وغیرہ سے

12

कारणेन = اس کارن سے   अति शोकाविष्टो = بہت شوک کے ادھین [illegible]

शोकव्याकुल = [illegible]

अश्रु = آنسو   प्रलापादि = پرلاپ [illegible]

विकृतेः = [illegible]   प्रागेव = پہلے ہی

समुन्मीलित मात्र = [illegible]   शोको = شوک

यत् पदं गच्छेत = [illegible]   तथा = اسی طرح

अकस्मात् = اچانک   कुपित = [illegible]

कष्टा = [illegible]   उरग = سانپ   व्याघ्रादि = [illegible]

ग्रास = [illegible]   गोचर = [illegible]

गमनादिना = [illegible]   निमित्तेन = [illegible]

अतिभीताः = [illegible]   तथैव = اسی طرح

सद्यः = [illegible]   समुद्भूतमात्र = [illegible]

यत्पदं = [illegible]   गच्छेत = [illegible]

72

तथा = اسی طرح अत्यन्त = بہت - زیادہ जुगुप्सास्पद = نفرت انگیز

पदार्थदर्शनादि = چیزوں کے دیکھنے سے ज्ञातमात्र हेतुना = اپنے ہی =

जुगुप्सो = گھناؤنا پن यत्पदं = جس حالت کو

गच्छेत = جائے तत्रापि = وہاں بھی

प्रतिष्ठितस्पद = اصل - برقرار وجود اپلب्धि = اسٹ اور وجود میں

इति उपदिष्टं = اسطرح بتایا ہے भवति = ہوتا ہے

क्रोध - शोक - भय - जुगुप्सा = غصہ - دکھ - ڈر - گھن

भेदेन = اس فرق چतुर्विधस्य - दुःखराशी = چار قسم کی دکھ راشی

دکھ کی چار قسم

اس لفظ سے "प्रतिक्रुद्ध शब्देन" = لفظ پرتی کرودھ سے

उपलक्षितत्वात् = ہوتا ہے - دکھ کا

तथा = [illegible] प्रह्वष्व = [illegible]

निजवीर्यं = [illegible] बल [illegible] संपत्ति = [illegible]

संभावनादि = [illegible] हेतुना [illegible]

सुदुष्करमपि = [illegible] निर्वर्तयितुं

कार्यं ([illegible]) [illegible] =

निर्विकल्पमेव = [illegible] उत्साहमानो [illegible]

झटिति = جلدی यत्पदं = جس طرف

गच्छेत = جاوے तथा = [illegible]

अप्रदृष्ट = [illegible] पूर्व = [illegible] परम = [illegible]

रमणीयादि [illegible] दर्शनादिना = [illegible]

पदार्थ [illegible]

सपदि = [illegible] प्रीति = [illegible]

तत्रापि = [illegible]

प्रतिक्षुतस्पन्दोपलब्धिः [illegible]

विस्मयाविष्टो = [illegible] यत्पदं = [illegible]

गच्छेत [illegible]

तथा = [illegible] क्रन्दनादिना [illegible]

कारणेन = [illegible] उत्पन्नमात्र [illegible]

प्रीतिह्रासो = [illegible]

यत पदे गच्छेत = [illegible] तत्रापि = [illegible]

प्रतिक्षुतस्पन्दौ = [illegible]

उपलब्धि = [illegible] =

इत्युपादिष्टं भवति = [illegible]

हर्षोत्साह - विस्मय = [illegible]

हास भेदेन [illegible]

च तुरूप सुखरापि इति [illegible] =

तृष्णाशब्देनोपलक्षित [illegible]

त्यात = [illegible]

तथा = [illegible] किंकर्तव्यता [illegible]

मूढवत [illegible]

दूरत्वादिना [illegible] दृष्णार्थी

[illegible] =

निश्चय = [illegible] अवधारणा

[illegible]

अभावात [illegible]

संप्रायाविष्ठो [illegible]

[illegible]

यत्पदं गच्छेत = جس حالت کو پہنچتا ہے तत्रापि = وہاں بھی

पूर्ववद् = پہلے کی طرح उपलब्धिः = [illegible]

इति उपदिष्टं भवति = ایسا اپدیش کیا ہے

विस्मरणादिदशासु = بھولنے - بھول وغیرہ کی حالتوں میں
حالتوں میں

तत्त्वस्य प्रति- پتی لکشنسیہ - کے ثبوت سمجھنے - اصلیت کے جاننے =
पत्ति लक्षणस्य = [illegible] बहुविधस्य =

मोहरूपस्य : - موہ روپی

किंकर्तव्यता = کیا کروں ایسی मूढभाव = ان سمجھی کی حالت

उपलक्षणात् = دیکھنے سے

एवम् = اسی طرح अन्तःकरण اندر کا व्यापाररूप
کاروبار روپ

जाग्रदवस्थाश्रये = جاگرت حالت کے
آسرے

परतत्त्वोलब्ध
उपाय अभिधाय

پرم تتو کے حاصل کرنے کا اپائے بتا کر =

बुद्धीन्द्रिय = گیان اندری " व्यापाररूप जाग्रत
اس کا جو کاروبار روپ جاگرت ہے

راز کی

जाग्रदवस्थाश्रयस्य = جاگرت اوستھا آشرے کے

अस्य = اس کی ; यथा = جیسے

हि = کیونکہ ; अथौ = اور پھر

उपस्फरो = پرکٹ ; इष्टः" = دکھائی دیتا ہے

इति अत्र = اس جگہ میں ; प्रसङ्गाद = پرسنگ سے

वक्ष्यमाणत्वात = آگے کہا جانے والا ہونے سے ; सम्प्रति = اس وقت

कर्मेन्द्रियव्यापार = کرم اندریوں کا ویاپار

रूप जाग्रदवस्थाश्रये = جاگرت اوستھا آشرے

तम परमं = اس پرم کو ; प्रतिपादयितुम = سدھ کرنے کے لئے

आह = کہتے ہیں

"धावन्वा यत्पदे गच्छेत्
तत्र" = دوڑتا ہوا جس کو جاوے
اس پد کو جاتا ہے ـ وہاں

इति = ایسے ; "तत्र" = اس میں
→ तस्मिन्नपि पदे

प्रतिष्ठितस्पन्दोपलब्धि = [illegible]

तत्र हि = [illegible], इच्छा प्रयत्न = اچھا - محنت

ज्ञान-क्रियादि = گیان جیسی کریا کی

वृत्तीनां = ورتیوں کی विभाग = [illegible]

अग्रहणात् (نہ گرہن کرنے سے) [illegible]

آپ کی स्वहृदय ईश्वर रूप = [illegible] अभिव्यक्ति = [illegible]

तथा हि - = [illegible]

[illegible] धावतः = دوڑنے والے کی

प्रतिपदं = ہر ایک قدم پر

पद = پیر उत्क्षिरषा = [illegible]

उद्धार = [illegible] प्रयत्न = محنत इच्छा

[illegible] = [illegible]

= [illegible] वि = [illegible]

क्रियादिषु = [illegible] वृत्तिविशेषेषु

सतस्वेव = [illegible]

73/

जाग्रदवस्थाश्रयस्य = جاگرت اوستھا آشرے کے

अस्य = اس کی यथा = جیسا

हि = کیونکہ अर्थो = معنی

उपस्करो = سامان इष्टः" = خواہش کیا ہوا

इति अत्र = اس طرح یہاں प्रसङ्गाद = پرسنگ سے

वक्ष्यमाणत्वात = کہے جانے والے ہونے سے संप्रति = اس وقت

कर्मेन्द्रियव्यापार = کرم اندریوں کا بیوپار

रूप जाग्रदवस्थाश्रये = جاگرت اوستھا آشرے کا

तमपदम = اس پد کو प्रतिपादयितुम = ثابت کرنے کے لئے

आह = کہا

"धावन्वा यत्पदे गच्छेत्त तत्र" = دوڑتا ہوا جس پد کو جاتا ہے وہاں

इति = ایسے "तत्र" = اس مقام پر
→ तस्मिन्नपि पदे

प्रतिष्ठितस्पन्दोपलब्धि = [illegible]

तत्र हि = [illegible], इच्छाप्रयत्न = اچھا - محنت

ज्ञान-क्रियादि = گیان جیسی کریا کی

वृत्तीनां [illegible] विभाग = [illegible]

अग्रहणाद् (نہ گرہن کرنے سے) [illegible]

अस्फुट ईश्वर रूप = [illegible] अभिव्यक्ति = [illegible]

तथा हि - = [illegible]

धावतः = [illegible] प्रति पदं = ایک ایک قدم پر

पदं = پیر उत्क्षिप्तीरषा = [illegible]

उद्धार = [illegible] प्रयत्न = محنت इच्छा

= [illegible] ([illegible])

= [illegible] वि = [illegible]

क्रियादिषु = [illegible] वृत्तिविशेषेषु

सत्स्वेव = [illegible]

[illegible]

ऽनवधार्यमाणा = نہ پہچانی ہوئی — अविभाग

बात = بانٹا

ऽप्रसृत्स्वव = [illegible]

संवित् = [illegible]

ऽविभाग = نہ وبھاگ ہونا / صرف

परस्वभाव भाग = دوسرے سوبھاؤ کا بھاگ

प्रतिबिंबिता भवति = عکس ہوتی ہے

तदा = ~~[illegible]~~ اُس وقت — परब्रह्म = پربرہم

पुमान् = آپ سے آپ — स्वैश्वर्ये रूपम् = اپنے روپ

ऽप्रविशति = اندر جاتا ہے

एतदपि = یہ بھی — वागादि कर्मेन्द्रिय व्यापार = [illegible]

[illegible]

उपलक्षणार्थं = [illegible] — वेदितव्यम् = جاننا چاہئے

७५

लेन = اُسے ध धावद्वुद = [illegible] دوڑتے ہوئے

अति चतुर = بہت چالاک वशी स्वैर उच्चार = [illegible] جلدی جلدی پڑھنا

व्यग्र = پریشان वाग्वृत्तिरपि = [illegible]

यत्पदं गच्छेत = جس حالت کو پہنچے तथा = ویسا ہی

वीणा = ستار वेणु वादन आदि = بانسری وغیرہ त्वरित तर = تیز تیز

व्यापारयमाणः = [illegible]

करङ्गुलिका = [illegible] कलापौ = [illegible]

यत्पदे गच्छेत = جس پد کو پہنچے तन्त्रादि =

प्रतिष्ठितस्पन्द — [illegible]

उपलब्धिः = [illegible] इत्युपादित्वे उपलक्षणात = [illegible]

यथा हि = [illegible] अथो = [illegible]

अस्फुटो दृष्टे = [illegible] इत्यादि श्लोके [illegible]

बुद्धीन्द्रियव्यापार गताम् = [illegible] इत्याम उपलब्धिं = [illegible]

दर्शयिष्यति = [illegible] यद्यपि च = [illegible]

सर्वस्य प्राणभृतः = [illegible] सर्वासु अवस्थासु = [illegible]

1 सर्वेन्द्रियवृत्तयो = [illegible]

न = [illegible] अन्तरेण = [illegible] निर्योदित

प्रतिषु = [illegible]

स्पन्द = [illegible] प्रकाश [illegible]

परिस्फुरितस्य = [illegible] तस्मादपत्तिम् = [illegible]

उन्मिषितमेव = [illegible]

प्रभवन्ति [illegible]

तथापि = [illegible] माया शक्त्युत्थापित भेदावभास = [illegible]

बलात् = [illegible] नानात्वेन उल्लसद्भिः [illegible]

प्रवर्तते = [illegible] ज्ञान-क्रियाविशेषैः = [illegible]

[illegible] व्यवधीयमान = [illegible]

इवासौ प्रतिष्ठुत [illegible] = [illegible]
स्पन्दः

प्रबुद्धस्यापि = [illegible] उपलब्धिगोचरत्वं = [illegible]

गमयितुम् = [illegible] अशक्य = [illegible]

इति = [illegible] तत् उपलब्धियोग्याः [illegible]

कश्चिदेव [illegible] प्रतिबुद्धत्वादयो दशाः = [illegible]

उपायत्वेन = [illegible] संगृह्य = [illegible]

उपदिष्टाः = [illegible]

सन्ताश्च = [illegible] प्रबुद्धस्य = [illegible]

प्रत्यवमृश्यमानाः = [illegible] स्थिताः [illegible]

प्रतिष्ठितस्पन्द उपलब्धय = پا سکتے ہیں اس کو

उपायतो = اپایوں کو سمجھو

भजन्ते = کرتے ہیں

न तु = نہیں ہے अनुभूयमाना جو تک اوسکو محسوس نہ ہوتی ہے

تب تک اسے حاصل ہے

सा हि अवस्था = وہ (دشا) حالت

दुःखविस्मयेव = وہ دکھ اور وسمے سی ہے

ہی۔ ततो निष्क्रान्तस्तु اس سے نکلا ہوا

لگے سے =

प्रबुद्ध = بیدار ہوا

उपदेशबलाद् اپدیش کے بل سے =

उपजात = اپجا ہوا

तादृशात्म

ویسا ہی =

आत्मस्वरूप विवेचन آتم سروپ کو وچار

क्षण = لمحہ ہ

75

प्रकृतिप्राय: = فطری طور – ابتدائی طور

स्पन्दतत्त्वं अनुभवितुं = سپند تتو کو انوبھو کرنا

यदनुशीलनं = جس کا ابھیاس

सैकाग्र्यात् = اسی لگاتار ابھیاس سے

क्रमेण = کرم کرم سے

सुप्रबुद्धपदवीम् अधिरूढः = سپربدھ کی جگہ پر چڑھا ہوا

सर्वत्र च = ہر وقت ہر ایک جگہ

अनुभविष्यति = انوبھو کرتا ہے

इति विवृतमेतत् = یہ کھول دیا ہے

"तस्य च स्पन्दतत्त्वस्य"

75/

अथ = [illegible] जाग्रद्वृत्त्या = [illegible] लीन = [illegible]

तुर्यदशा = [illegible] गत = [illegible] स्वभाव = [illegible]

उपलब्धये = [illegible] श्लोकत्रयम् = تین شلوک

उपाय उपदेशम् = [illegible] आह = [illegible]

तत्र युगलके तावत् = [illegible]

यामवस्थां समालम्ब्य यदयं मम वक्ष्यति ।
तदवश्यं करिष्येऽहमिति संकल्प्य तिष्ठति ॥
तामाश्रित्योर्ध्वमार्गेण चन्द्रसूर्यावुभावपि
सौषुम्नेऽध्वन्यस्तमितो हित्वा ब्रह्माण्डगोचरम् ॥ 7, 8

यामवस्थां = [illegible] समालम्ब्य = [illegible]

यत = [illegible] यदयं = [illegible] मम = [illegible] वक्ष्यति = [illegible]

तत = [illegible] (?) करिष्य = [illegible] अवश्यं = [illegible]

75/

(صفحہ)

१, पद्म इति = ऐसा संकल्प्य = ایسا ارادہ کر کے

तिष्ठति - ٹھہرتا ہے   ताम् = اسی دشا کو

अपि। क्षिति = زمین   ऊर्ध्वमार्गगं = اوپر کے مارگ کو جانے والے

चन्द्रसूर्यावुभावपि = دونوں چندرما اور سورج (من اور پران)

सौषुम्णे ऽध्वन्यः = سکھمنا نام مارگ میں   अस्तमितौ = اس میں ڈوبے ہوئے (یہ چندرما اور سورج)

क्षितौ = زمین پر   ब्रह्माण्ड गोचरम् = برہمانڈ پر ...

तां = اس دشا کو   यत् शब्द = 'यत्' شبد سے

'यत्' شبد ...

उपलक्षित वाक्य = ... کی ہوئی

निर्दिष्टाम् (اور شبد میں) کہی ہوئی   अवस्थां - दशाम्

"प्राश्रित्य" = آشرے کر کے → प्रासाद्य = حاصل کر کے

पुरुषस्य = اس پرش کے "चन्द्रसूर्यौ" چندرما - سورج

→ मनः प्राणौ = من اور پران   द्वावपि = دونوں

युगपदेव = ایک ہی ساتھ   "प्रस्तमितः"

→ प्रलीयेते = لین ہو جاتے ہیں = اسی میں لین ہوتے ہیں

किं कृत्वा = کیا کر کے   तादृग्दशा = ویسی حالت

आश्चर्यरा = تعجب کی بات ہے [illegible]   सामर्थ्यादेव = سامرتھ سے

" ब्रह्माण्डगोचरं क्षित्वा "   یعنی برہمانڈ شریر سے چھوڑ کر

→ यदन्तस्तद्बहिः = جو اندر ہے وہی باہر ہے
اندر اور باہر کو ایک کرنا

इति = یعنی → "ब्रह्माण्ड" = برہمانڈ → शरीरं شریر

स एव = وہی 'गोचरः' = [illegible] → स्वप्रसरा = اپنی ہی دوڑ سے

Q. अधिकरणं = [illegible]

ते 'क्षित्वा' = اس کو چھوڑ کر → त्यक्त्वा = چھوڑ کر

→ संवेद्यता अभावाद् = [illegible]
[illegible]

अतिक्रम्ये = [illegible]   इत्य आदि = [illegible]

केन पथा अस्तमितः = کس راستے سے [illegible]
ہو جاتے ہیں

76/

"ऊर्ध्वमार्गेण" = اوپر کے راستہ سے → सर्वव्यतिरिक्तेन → अलौकिकेन

[illegible] (سب سے الگ) [illegible]

वर्त्मना = راستہ سے तथा च = اور ایسے

चन्द्रप्रकाशप्रतिपादिता = [illegible] मनः = من

→ प्रसाररूपा ज्ञानशक्ति = [illegible]

[illegible] → ओं हृदयमित्युपाध्येयम = [illegible]

इति द्विधा संसारगो चैव = [illegible]

[illegible] = [illegible]

[illegible] ← आलम्बनीये = [illegible] निजविषयम [illegible]

प्रतीत्य [illegible] तस्यां [illegible]

[illegible] ← मध्यस्थतां [illegible] ([illegible])

प्राप्य = اسکو پا کے

स्वाकारेण एव = [illegible] ([illegible]) अस्तम इति

([illegible]) [illegible]

76/

तथा = ایسا ہی सूर्य प्रादुरोदिता = سورج نکلتے ہی
دھوپ ہوئی ہے

प्राण प्रसाररूपा = [illegible]

क्रिया प्राप्ति = [illegible]

→ नाना नाडी = [illegible] संचार = [illegible]

लक्षणं = [illegible] कृसृतिम = [illegible]

[illegible]

स्रखिलां = ساری [illegible] खिलीकृत्य = [illegible]

सामान्य प्राण रूपताम = [illegible]

स्रापन्ना = [illegible]

लोक अतिरिक्तिन = [illegible] पथा = [illegible]

स्वपद एव = [illegible]

प्राम्याति = [illegible]

77

بعد میں तत: پھر اس سے "सौषुम्नेऽध्वन्यस्मिन्"

= اس سوشمنا مارگ میں پرا سے ہو جاتے ہیں -

इत्याह = ایسا کہتے ہیں

सुषुम्नाभिधा = سوشمنا نام والی

शरीरमध्य = بیچ میں

मध्यासिता = بیچ میں ٹھہر کر   वा = 3. नाडी = ناڑی ہے

तदीये = اس کا "अध्वनि" = راستے میں →

پرے جو ہے اس سے परस्या:= پرے کی पारमेश्वरा = پرمیشور کی प्राप्ति: ملتی ہے

प्रवहण मार्गे = پرواہ مارگ میں سوشمنا مارگ

شانت ہو کر प्रशाम्यत: = اسی میں شانت ہو کر

جاننے والے کے ساتھ } ज्ञेय = جاننے کی कार्य = کام (من وغیرہ کا تعلق)
اندر باہر کا

उपराग = تعلق وغیرہ 3 परित्यागात् = چھوڑ کر

परशक्तिरूपताम् = پرشکتی روپ आपद्यते = پراپت ہوتی ہیں

77

कां तां दशामाश्रित्य ? = کونسی حالت کا سہارا لیکر

इत्याह = اس پر کہتا ہے

"यामवस्थां समालम्ब्य" جس حالت کو پکڑ کر

→ सम्यक = اچھی طرح त्यक्त = چھوڑا ہوا समस्त = سارا

वस्तुव्यापृति وستو کے وِیاپار کو

Contracted روکی तिमित = ٹھہری ہوئی सर्वप्राप्तितया

سب چیزوں کے ملنے سے - سب کچھ پالینے سے

अवलम्ब्य अवष्टभ्य = پکڑ کر = ٹھہر کر

कस्मिंश्चिद् अवसरे = کسی ایک موقع پر पुरुषः = پرش

तिष्ठति = ٹھہرتا ہے (اس وقت)

किं कृत्वा ? = کیا کر ؟

समालम्ब्येति = اچھی طرح پکڑ کر इति

समालम्ब्य = پکڑ کر क्रिया पूर्वी = کرنا پہلے भावे = اسی

क्रियान्तर = دوسرا निष्ठ ... ...

[illegible]

77

वाक्यम = واکیہ आह = کہا

"इति संकल्प्य" = اس طرح سنکلپ کر کے

इत्येवं = اس طرح संकल्पं = سنکلپ कृत्वा = کر

कथं ? = کیونکر यत् अर्थं मम वक्ष्यति

[illegible] =

तदवश्यं करिष्ये अहम्" = وہ میں ضرور کروں گا

? → यस्य = جس کی आज्ञा अतिक्रमात् [illegible]

सद्य एव = فوراً → प्राण त्यागादि =
([illegible]) - [illegible]

अन अर्थः = [illegible] समापतीति
[illegible] ([illegible])

[illegible] सा = وہ कृता = [illegible] राजादि = [illegible]

"उपेये" = [illegible] इति निर्दिष्टः = [illegible]

11 "अयं यद्" ... वस्तु = چیز

"मम" = میرا कर्तव्यतया = ضروری ہے "वक्ष्यति"

→ जल्पिष्यति = کہے گا 'तद्वक्ष्ये' کہوں گا =
وہ کہوں

→ सर्वात्मना = سب طرح سے سب طرح سے

→ परिहृत = دور کیا ہوا چھوڑا ہوا समस्त = سب

ग्रन्थकरणी = کتاب بنانے
اور کام यो ग्रहः = جس

"करिष्ये" = کروں گا → संपादामि
= شروع کروں گا

इति = ایسے ، युगलकस्य = دو شلوکوں کی

वाक्यार्थ واکیارتھ سے संगतिः

= ربط ہے ...

इदं तु तात्पर्यम् اس کا مطلب یہ ہے

केनचित् = کسی कारणेन = وجہ سے

77

अवश्यकरणीय वचसो = ضروری باتوں والی

प्रभविष्णुना = سمرتھ کے ذریعے → कारयितव्यं = کرانی چاہئے

مقصود

वस्तु = وستو

विवक्षाया = اسے کہنے کی اچھا سے

प्रक्षिप्तस्य = پھینکے ہوئے کو پुंसः = پرش کو

तद्वचन = اسکا وچن کو شुश्रूषामात्र = سننا چاہتا ہے

निविड = گھنا अवधानत्वात् = سمادھان ہونے سے

समस्त = سمپورن वृत्ति = ورتیوں प्रत्यस्तमये = ہر طرف سے ختم ہونے پر

सति = ہونے

संवित = سمجھ → तुरीयां दशाम् = چوتھی اوستھا کو

अवश्यमेवापीति = ضرور ہی کوشش ہوگا (ہر بات کا)

तत्प्रत्यवमर्शा = اس کی بار بار یاد अभ्यासात् = اس ابھیاس سے

परतत्त्वो = پرمتتو کا उपलब्धिः = حاصل ہو جاتی

अन्त्र = [illegible] ब्रह्माण्डगोचर शब्देन =
[illegible]

[illegible] शरीर आकाशस्य = [illegible] -

[illegible] चन्द्रसूर्य शब्दाभ्यां = [illegible]
मनः प्राणप्रसरयोश्च = [illegible]

प्रतिपादनम् = [illegible]

प्रयोजनम् = مطلب کی تکمیل

= [illegible] = अनेन उपदेशेन

प्रत्यभिज्ञापित = [illegible] तुरीयदशा:
[illegible]

[illegible] प्रत्यवमर्श = [illegible] अभ्यास =
[illegible]

काष्ठा = [illegible] अधिरोहिणः
[illegible]

प्रबुद्धस्य = [illegible]

निखिल = [illegible] बाह्याभ्यन्तर [illegible]

अध्व = [illegible] अतिक्रान्त [illegible]

[illegible] परमपदविश्रान्ति = [illegible]

लाभः = حاصل ہوتی ہے

इति व्याख्यातमेतत् पृथक् वृत्तिकृता = اس طرح یہ وضاحت کی ہے الگ الگ ورتی کار نے

"यां स्पन्दरूपामवस्थाम्"

इत्यादिना = جس سپند روپ اوستھا ... وغیرہ سے

"तस्य तामवस्थाम्"

اس کی وہ اوستھا (پیدا ہوگی)

ननु = پرنتو सर्वविधा = ہر قسم کی (اس قسم کی) दशा = دشا

सर्वस्य = سب कस्यचित् = کسی کسی کو कथंचित् = کسی طرح سے

उपजायते एव = پیدا ہوتی ہی ہے

جب یہ دشا کسی کو کبھی پیدا ہوتی ہی ہے تو اپدیش کا کیا فرض ہے۔

तत् = تو किम् = کیا

उपदेशेन = اپدیش کا فرض ہے۔

इत्याह = کہتے ہیں

अत्र = یہاں ब्रह्माण्डगोचर शब्देन =
وہ جو برہمانڈ گوچر شبد ہے - اس سے کہی گئی

شریر جو آکاش ہے

शरीर आकाशस्य = شریر جو آکاش ہے -

चन्द्रसूर्य शब्दाभ्यां = چندر سوریہ شبد سے

मनः प्राणप्रसरयोश्च = اس میں من اور پران پرسر کرتا ہے

प्रतिपादनम् = ثابت ہے سمجھنا

प्रयोजनम = مطلب کی تکمیل

= اس کی اندر = अनेन उपदेशेन

प्रत्यभिज्ञापित = دکھایا اس کی تریا تुरीयदशा:
جو تریا دشا ہے

اسی طرح प्रत्यवमर्श = سدا ہوش अभ्यास =
جو اسی (عمل) کا ہے

काष्ठा = اس سے ادھر کی अधिरोहिका:
چڑھنے والی

प्रबुद्धस्य = بیدار ہوئے کو

निखिल = سارا باہر اندر बाह्याभ्यन्तर

अध्व = راستہ अतिक्रान्त
وہ آسمان کا - گذر کر

परमपदविश्रान्ति = پرم پد اس پر ٹھہرنا

लाभः = حاصل ہوتا ہے

इति व्याख्यातमेतत् पृथक् वृत्तिकृता = اس طرح یہ بیان کیا گیا ہے الگ الگ ورتی کار نے

" यां स्पन्दरूपामवस्थाम् "

इत्यादिना = کہ جو سپندروپی اوستھا سے

" तस्य तामवस्थाम् " "

اُس کی وہ اوستھا (پراپت ہوگی

ननु = بیشک सर्वविधा = ہر قسم کی दशा = دشا

सर्वस्य = سب کی कस्यचित् = یا کسی کو कथंचित् = کسی طرح سے

उपजायत एव = پیدا ہوتی ہی ہے

جب ہر ایک کسی کو
کسی نہ کسی طرح سے
پیدا ہوتی ہے تو
اپدیش کا کیا
ضرورت ہے۔

तत् = وہ किम् = کیا

उपदेशेन = اپدیش کا ضرورت ہے۔

इत्याह = کہا ہے

18/

तदा तस्मिन्महाव्योम्नि
प्रलीनशशिभास्करे
सौषुप्तपदवन्मूढः
प्रबुद्धः स्यादनावृतः ॥ ६ ॥

तदा = تب तस्मिन्महा = اسی بڑے میں
व्योम्नि = [illegible]

प्रलीन = جس میں لین ہو گیا ہے
शशिभास्कर = سورج اور چندرما کے

सौषुप्तपदवत् = اسی طرح - جیسے سشپت کی حالت میں ہوتا ہے

[illegible] سکن

प्रबुद्धः = جاگا ہوا स्याद् = ہوتا ہے

अनावृतः = بغیر کسی پردے کے [ہر وقت کھلا / آزاد ہو جاتا ہے]

तदा = تب तत्र = وہاں → तादृशदशाविशिष्टे
= ویسی حالت میں [illegible]

काले = وقت (اسی وقت)
(یعنی جب ویسی حالت ہو وقت میں)

79 78

सौषुम्नाध्व = جو سُشُمنا راستہ ہے   प्रतिपादिते = جو سمجھایا (بیان کیا)

"महाव्योम्नि" = بڑے آکاش میں - یہی ہے بڑا آکاش — مہاآکاش

یہاں کچھ جاننے کو نہیں رہتا → समस्त वेद्य = سارے جو ویدیہ وستو ہیں

व्यतिरिक्त (یعنی کچھ جاننے کو نہیں ہے) الگ سے ہیں

स्वरूपत्वात् = یہی اپنا روپ

سر آکاش   शब्द गुणात्मक = شبد گن والا (یعنی آکاش) भूताकाश = بھوت

वैलक्षण्यात् च = اس سے وہ لکشن و

[illegible] اس شبد آکاش و بھوت [illegible] سے مہاآکاش کچھ الگ ہے] آکاش ہے (جو [illegible])

महाव्योम शब्द = یہ ہے مہاآکاش

प्रतिपादिते = اس شبد سے جو سمجھایا گیا ہے

یہاں [illegible] ہے   स्वस्वभाव एव = صرف اپنا سوبھاؤ

कीदृशे ? = کیسے میں یعنی آکاش

"प्रलीन प्राण भास्वरे" = جس میں پران [illegible] ہو جاتے ہیں

→ प्रत्यस्तमित समस्त ज्ञान क्रिया = प्रसर प्रपञ्च

اس میں گم ہوں جہاں سارے گیان [illegible] [illegible]

79

मूढ़: = مورکھ → परस्परा = پرمپرا سے ہوئے

तिग्मरश्मि = تیز رسمی والا - سورج

→ परम प्रातय = پرم پرتیت ہوئے
سب سے زیادہ یقینی ہوئے

کرنوں अंशु = انشو - کرن

स्पर्शाभावात् = انکے سپرش کا ابھاو کے سے

मूढ़: = مورکھ ہے

→ प्रनिद्रा = نہ نیند प्र प्रत्ययत्व لگنے
ہوتا ہے

دی निद्रावसाद: = اسکی نیند کا ناش

ہے 'सौषुप्तपदवत्स्यात' " سوشپت پد کی طرح ہے

→ सुषुप्तावस्थायामिव भवेत =
سوشپتا اوستھا میں ہی جیسے ہو جاتا ہے

यथा = جیسے सुषुप्तावस्था = سشپتا اوستھا

प्रलीन अखिल = اکھل پرلین ہوئے } سوشپتی میں وشے

वेद्यप्रपञ्चरूपापि دیکھنے والے } دکھ سکھ کا ابھاو ہو جاتا ہے

79

آو۔ अप्रबुद्धस्य = جو بیدار نہیں ہے تत्काले = اس وقت

اتنا اداس ہو کر آبنا۔ अनुभवसामर्थ्य = انوبھو کا سامرتھ
अभावात् اس کا غیاب ہونے سے

मोहमयैव لہذا موہ کو موہی ہونا ہے

तथा = ویسا एषा तुर्यदशापि یہ چوتھی دشا بھی मोहात्मिकैव.
وہ موہ ہی بنتی ہے

"प्रबुद्धः" = جو بیدار ہو → पुनरीश्वरदशात्तिपात = جو ایشور کا لوٹنا ہے

प्रभावात् اس کے پربھاو سے प्रकर्षेण = زیادہ

लोक अतिरिक्त अतिप्रयोग لوک سے زیادہ -

= اس زیادتی سے → बुद्धः
یہ بیدار ہوتا ہے

دیکھو प्रत्युदित ابھرنا सम्यक् = صحیح طور

ज्ञान दृष्टिः = گیان کی دشٹی ہے
بنتا ہے -

तादृग्दशा = ویسی دشا प्रत्यवमर्श =
غور کرنا ہے

अवसर = اس جا و وقت ہے

अनुभूत = وہی انوبھو کیا ہوا

तुर्यभोग: = توریہ بھوگ ہے

"अनावृतो" = اسکو ڈھانپ رہا نہیں ہے →

→ देहादि अवच्छिन्नाहं प्रत्यय रूपेण =
وہ دیہ وغیرہ سے ملی ہوئی میں اہم بری — اسے اپنے آپ میں ہوا ہوتا ہے

= بھی ہے آپ ہی

वियुक्तः = اس الگ (ملا ہوا نہیں)

"स्यात्" = ہو جاتا ہے → संपद्यते

तदेतत् = وہی یہ بات ہے

"तस्मिन्नस्महाद्व्योम्नि"
اسی مہا آکاش میں

اس طرح گرنتھ دیا کھیان میں کہا گیا ہے -

इत्यादिना ग्रन्थेन व्याख्याते वृत्तौ ॥६॥

एवं = [illegible] देहादिवेद्य वर्ग = [illegible] व्यतिरिक्तत्वेन = [illegible]

संविद्रूप अनुस्यूत [illegible] उपलब्धृमात्र = [illegible]

लक्षणैक स्वभावत्वेन च = [illegible] उपपादितस्य

प्रतिपादित [illegible] उपलब्ध्युपायस्य = [illegible] स्वात्मन एव

([illegible]) [illegible] = प्रोक्तस्य

यत्सामर्थ्य = [illegible] तदेव = [illegible]

पूर्वप्रयकरणीय [illegible] शास्त्रचोदित = [illegible]

[illegible]

सत्क्रियासाधनभूतानां [illegible] मन्त्रान्तरवीर्यम [illegible]

शोह = [illegible] प्रबुद्धमेव [illegible]

उपलब्धस्य [illegible] तादृगात्म [illegible]

आत्मस्वभावं = [illegible]

प्रति उपदेष्टुं [illegible] युगलकम [illegible]

आह = [illegible]

40/41 तदाक्रम्य बलं मन्त्राः सर्वज्ञबलशालिनः
प्रवर्तन्तेऽधिकाराय करणानीव देहिनाम् ॥
तत्रैव संप्रलीयन्ते शान्तरूपा निरञ्जनाः ।
सहाराधकचित्तेन तेनैते शिवधर्मिणः ॥२०॥२१॥

तथाक्रमय = [illegible] बलं = [illegible] मन्त्रा = [illegible]

सर्वज्ञबल = [illegible] शालिनः = [illegible]

प्रवर्तन्ते = [illegible] अधिकाराय = [illegible]

करणानी इव = [illegible] देहिनाम् = [illegible]

तत्रैव = [illegible] सं = [illegible] प्रलीयन्ते = [illegible]

शान्तरूपा = [illegible] निरञ्जनाः [illegible]

सह = [illegible] आराधक = [illegible]

चित्तेन [illegible]

ते

41/ तेन = اُس(ا) यैते = یہ منتر शिवधर्मिणः

(سب کمالات سے) شوجی

"तेन" = प्रस्तुत = یعنی شاستر کے ذریعہ व्याख्यानेन हेतुना

وہ کمالات جن کا ذکر ہے =

"ऐते" → मन्त्रा = یہ منتر کہ ओंकारादय देवता

یعنی اوم وغیرہ دیوتا

पर्वत = منتر ہی بلاشبہ دیوتا ہیں

वाचका = بتانے والے ہیں → वाराणादिसंनिवेशा

(بیان کرنے والے ہیں کہ وہ ہیں) - اکو اوم وغیرہ کہتے ہیں =

"शिवधर्मिणः" = شیو دھرم والے शिवस्य परमेश्वरस्य

شیو کے دھرم جن میں ہوں

परमेश्वर کے دھرم (سب کمالات) ہیں ان میں प्रतन्य आत्म धारणा

→ सर्वज्ञत्वादि गुणा = سب وگیان وغیرہ گن

جو धर्मः

= وہی دھرم ہو جاتا

। स = وہ विद्यते = ہے

एषा = ان منتروں کا ते = وہ तथा = اسی طرح

(یعنی شیو دھرم میں)

→ शिवाद् अभिन्न = شیو سے ابھن

? स्वरूपा یعنی شیو سے الگ نہیں ہے وہ اکر इत्यर्थः = یہ مطلب ہے

"केन हेतुना" = کس کارن سے

यतः = جس کارن "तत" = وہ समनन्तर प्रतिपादित = اسکے بعد جو بیان کیا گیا ہے

स्वरूपस्य = سروپ کی शिवस्य = اس شیو سوامی کا

संबन्धि = سمبندھ رکھنے "बले" = بل →

प्राप्तिम् پرپتی کو ← सामर्थ्यं سمرتھ کو

'प्राक्रमय' = پرکرم کر → उद्घाचारयिषावस्थायां = اجاگر کرنے کی اچھا کے روپ کی اوستھا میں

तत्प्रभेद = اس شیو کے بھید سے उपपत्त्या = سدھ ہونے سے

स्वीकृत्य = اپنا کر (انگیکار) - سویکار کر

"सर्वज्ञबलशालिनः" سب کچھ جاننے والے شیو کے بل سے سروگیہ بل شالی →

"सर्वज्ञस्य शिवस्य बलेन प्राप्तया श्लाघमाना सन्तः"
سب کو جاننے والے شیو کے بل کی پرپتی سے وہ تعریف کئے ہوئے

4. "अधिकाराय प्रवर्तन्ते" [illegible]

[illegible]

यथास्वं प्रतिप्रति [illegible] प्रनियत कार्य [illegible]

संपादन = [illegible] स्वाम्यार्थं [illegible]

प्रसरन्ति = [illegible] एते हि = [illegible]

प्रनासादित = [illegible] परमेश्वराभेददृशा = [illegible]

उत्पाद = [illegible] विनाप्रा = [illegible] धर्मिक = [illegible]

वर्णमात्रात्मकाः [illegible] ([illegible]) तृणमपि = [illegible]

कुब्जयितुम [illegible]

प्राक्ताः = [illegible]

उक्तबलाक्रमणेन [illegible]

तु = [illegible] नियतानि [illegible]

कर्तव्यता = [illegible] सहाया = [illegible]

5. दीक्षादि = [illegible] वृश्चिक = [illegible] विषाकर्षणान्त [illegible] =

अपरा परापर = پرا اور اپرا स्वकार्य = اپنی کام

संपादन = اسکے حاصل وا بنانا अधिकार = ادھیکاری

ہر منتر ہوتے ہیں { अप्रतिहत = اس پر نہ رکنے والی
शक्तयो = طاقتیں भवन्ति = ایسے ہو جاتے منتر اسکو سنتے ہیں

यदि एवं = اگر ایسا ہے सर्वमन्त्राणाम् = سارے منتروں کی

उक्तवता = کہا ہے اسکے
क्रमलक्षणावीर्यं = گن لچھن ہے جو کہ شکتی ویرج ہے

साम्यं = ایک جیسے तत कथं

तत् कथं एषां = اس سے کیسے ان
भिन्नाधिकारित्वं = ان منتروں کو بٹوارہ
ادھیکار والا کی ہے

सर्व साधारण साधन = سارے منتر سادھن
अधिकृता: = بولا ادھیکار کو سدھ کرنا
कथं न भवेयुः? = نہیں ہیں؟ اس پر ادھیکار ہوتے ہیں

इत्यत्र = اسی طرح پر

परमेश्वर परिकल्पित

नियति नियन्तृत्वमेव — پرمیشور نے کلپنا کی ہوئی نیتی کی
اس نیتی کو ٹھیک سے پر پابند ہیں

प्रतिपादयितुम्प्रभु = دینے سمجھانے کو

उपमानम् = مثال — उपमा = [illegible]

कथं मे ते मन्त्रा = کس طرح یہ منتر — नियताधिकाराय = مقرر ادھیکار کے لئے

प्रवर्तन्ते = پرورتن میں آتے ہیں — साधकानां = سادھکوں کو

'देहिनां करणानीव' = جیسے دیہ دھاریوں کی اندریاں

यथा हि = جیسے کہ — देहादिमात्र = دیہ آدی ماتر

अनित्य वस्तु = وہ انت وستو — व्यवस्थित तत्माभिमानानां = ٹھیک سے ٹھہرے آتما ابھیمان والوں کو

सर्वशरीरभृतां = سارے شریر دھاریوں کو

करणानि → इन्द्रियाणि = اندریاں — "यतः करणवर्गोऽयम्" — جس سے یہ اندریوں کا گروہ

इत्यत्र = یہاں پر اس جگہ — प्रतिपादनं युक्तम् = سمجھانا ٹھیک ہے

परमेश्वरादेव = پرمیشور ہی سے चेतनत्वापादन جس میں چیتنا کو پیدا کر کے

हेतु = کے لیئے प्रवृत्त्यादिलाभसामर्थ्ये
= پرورتی آدی کے لابھ کی سامرتھیہ پر

सत्यपि = ہونے پر بھی करणानि = اندریاں

तत = اس ایشور کے دوارا کلپت کی नियतिशक्ति نیتی شکتی کے
परिकल्पित

बलात् = زور سے ہی शब्दादि

शब्दादिविषय شبدادی وشیوں کو =

प्रकाशनमात्र = پرکاش کرنے تک ہی पर्यवसितसामर्थ्यानि
جن کی طاقت محدود ہے

اپنی اپنی طرح سے

यथास्वं اپنی اپنی طرح पृथकपृथक = الگ الگ

अधिकाराय = ادھیکار کے لیے प्रवर्तन्ते
= پرورت ہوتی ہیں (اپنے اپنے کاموں پر)

न = نہیں सर्वाणि = سب

सर्वस्मै = سب کے لیے

तथैवैते = ایسے ہی मन्त्राः = یہ منتر साधकानां = ان سادھکوں

स्वीकृत = انگیکار کیا ہوا परस्वभाव = پر سوبھاؤ -

स्वभाव = اپنا سوبھاؤ प्रतिपत्तीनां = [illegible]

[illegible] यथा = جیسے नियमित = [illegible] अधिकाराश्च = ادھیکار رکھنے

प्रवर्तन्ते = پرورت ہوتے ہیں

तस्मात् = اس واسطے कररावत् = ان [illegible]

सर्वेच्छबलप्रा = [illegible]

लिनोऽपि = [illegible] मन्त्रा = وہ منتر

नियतअधिकारस्य = یہ نیتی [illegible] (یعنی [illegible] پابند ہیں)

ततश्च = اسی طرح سے द्विवर्मिणा = [illegible]

मन्त्रा = منتر यत = جو

कृत अधिकार = ادھیکار [illegible] सतः = [illegible]

"निरञ्जना" [illegible]

अञ्जनात् = [illegible] बाह्योपरागरूपात् मलात् [illegible]

[illegible]

वर्णादिरूप
→ ~~[illegible]~~ = [illegible] भावनात्मक [illegible]

निष्क्रान्ताः = [illegible]   एत एव = [illegible]

"शान्तरूपा" = [illegible] → शान्त - शुद्ध = [illegible]

[illegible] → संविन्मात्रस्वरूपत्वात् [illegible]

[illegible]   निर्विकारे = [illegible]

रूप आत्मा = [illegible]

येषां ते = ان کی   तादृशाः सन्तः
= [illegible]

"तत्रैव" = [illegible] ([illegible]) प्रिवे →

परमकारणे [illegible] =

स्वस्वभावे = [illegible]

"संप्रलीयन्ते" [illegible] =

तदैक्यमुपगच्छन्ति = [illegible]

= [illegible]
[illegible]

केन साकम? =

"आराधकचित्तेन" " آرادھنا کرنے والا جو چت ہے

सह" = ساتھ ہی → साधकमनसा साकं = سادھک کے چت سے (اسکا مطلب وہ نہیں ہے جو لگتا ہے)

तस्यां हि = کیونکہ اسی میں अभिसंदधे =
दशायाम
उपाधिविरहात کیونکہ اس حالت میں کوئی اپادھی نہیں رہتی

صرف سوابھاوک स्वभाविकमात्र = ہے اور سوبھاوک एवदोष = ہی دوش میں

यत = ३. साधकचित्तं = سادھک کا چت

तेन साकम = اس کے ساتھ किमनने =
तात्विकमन्त्रवीर्य کی اصل منتر کی طاقت ہے

प्रतिपादितं भवति = ثابت ہو گیا ہے
= اس کا مطلب یہی ہے کہ "کیا اس میں"

तदिदं भवति = وہ یہ ہوا मन्त्रचेतसोः
= منتر اور من

उदय अस्तमय दशायोः = ابھرنے اور ڈوبنے کی حالت میں परमकारणात
= پرم کارن سے

शिवादभेदः - شیو سے ابھید ہے
اس کا شیو سے ابھید ہے

इति = (یعنی) मन्त्रात्मकतया = منتر روپ ہونے سے

साधकचित्तात्मकतया च = سادھک کے چت روپ ہونے سے प्रिावप्राप्तेरेव

= [illegible]

वैरासंकल्पादिरूप [illegible]

धारिणी [illegible]

उदिता सती [illegible]

संप्रति = اس وقت पुनःआसादित = پھر پایا ہوا

स्वस्वभाव = اپنا سوبھاو (اپنی حقیقت)

बल

= [illegible] स्पष्टी =

[illegible]

प्रतिपत्तीनां = [illegible] साधकानां =

سادھکوں کی

भेदविभ्रम [illegible] उतपादयन्ती

यन्ती

→ नियतार्थसाधनाधिकाराय पर्यवस्याति

[illegible] = [illegible]

यस्तु = جو شخص यथाप्रतिपादित्ते ; مطابق بیان شدہ کے

स्वस्व भावे सव = اپنے اپنے ... سے سुदृढात्म प्रतिपत्ति = [illegible]

तस्य = اسکا उदयास्त मय = [illegible]
त्रयस्य [illegible]

सर्वे मन्त्राः [illegible]
सर्वार्थसाधनाधिकारि [illegible]
भवन्ति (रो) [illegible]

[illegible]

तत तत् = [illegible] इति कर्तव्य = [illegible]

साक्षित्य = [illegible] नियमाद्य = [illegible]

अपेक्षा । विना = [illegible]

[illegible]

प्रासतो वा = [illegible]
मन्त्राः [illegible]

यत यत वचनं = جو جو کہتے ہیں   येन येन = جس جس

अभिसंधिना = ارادے سے   उच्चारयति = اچارن کرتا ہے

तत = وہ   तस्य = اس کی   अमोघ = [illegible]

मन्त्रताम = [illegible] आपद्यते [illegible]
([illegible])

इति = ایسا   स्वभाव = [illegible]
बलात्क्रमरोमेव [illegible]

सिद्ध = [illegible]   स्वतो = اپنے آپ

मन्त्राणां = منتروں کی   वीर्यं = [illegible]

[illegible]   प्रत्ययवश बृंहयेत् = [illegible]   योगिना = یوگی نے

इति तात्पर्यार्थः = [illegible]

उपलक्षणार्थं = [illegible]   मन्त्राण्ये च = [illegible]
चैव यतत् = [illegible]

उक्तोपपत्त्या = اس کی یوکتی پرمان سے न = نہ केवलं = صرف

मन्त्रा एव = منتر ہی سے क्रियाधर्मिणो = کریا دھرمی

यावत् न = جب تک काचित् = کوئی क्रिया = کریا

ज्ञाने = گیان میں कार्ये = کام ज्ञेयं वा = یا گیان کا

वस्तु

संभवति = ممکن ہے

यत् = ३. परतन्त्रत्वाभेदात् = پرتنترتا کے ابھید سے

आपत्ति = [illegible]

लब्धात्मकं = [illegible]

सत् = [illegible]

क्रियात्मकमेव = کریا روپ ہی न भवति = نہیں بنتا

इति समनन्तरमेव = اس کے بعد ہی

वक्ष्यति = کہے گا

व्याख्यातम् एतत् = [illegible]

वृत्तौ = [illegible]

"यद्दुलं निरावरणाचिद्रूपम्."

([illegible]) [illegible] ۳ [illegible] =

85

इदानीं = اس وقت   पक्षान्तर = [illegible]

उपन्यासभङ्ग्या = [illegible]   प्रकरण आरम्भ = [illegible]

श्लोकापरार्धे = شعر کا نصف [illegible]   प्रतिज्ञाते = [illegible]

स्वस्वभावस्य = [illegible]   ध्रुवस्य = [illegible]

विश्वव्यापिमय = [illegible]   नि प्राकि चक्र [illegible]

विभव = [illegible]   शीलत्वम = [illegible]

अवसर प्राप्तम् = [illegible]   उपपत्त्युपलब्धिभ्यां

[illegible] = निर्वाहयितु

[illegible]

श्लोकत्रयमाह = [illegible]

तृतीयो निःष्यन्दः ।।

यस्मात्सर्वमयो जीवः सर्वभावसमुद्भवात् ।
तत्संवेदनरूपेण तादात्म्य प्रतिपत्तितः ॥१॥

तेन शब्दार्थचिन्तासु
न सावस्था न या शिवः ।
भोक्तैव भोग्यभावेन
सदा सर्वत्र संस्थितः ॥२॥

इति वा यस्य संवित्तिः
क्रीडात्वेनाखिलं जगत् ।
स पश्यन्सततं युक्तो
जीवन्मुक्तो न संशयः ॥३॥

85

यस्मात् = جس کا ان سے   सर्वमयो = سرو سے

जीव: = جیو جو ہیں   [illegible]

सर्वभाव = سب بھاو [illegible]   समुद्भवात
از ان سے ادے سے

तत् = اسی کا [illegible]   संवेदन = [illegible]   اس [illegible] سے

[illegible]   तादात्म्य = [illegible]   प्रतिपत्तित:
اس جانے سے

तेन = اسی   प्राणदार्थी = شبد اور ادتھ کی

[illegible]   चिन्तासु = [illegible]   [illegible]

[illegible]   न सावस्था = [illegible]

[illegible]   न या = جو نہ   शिव: = [illegible]

[illegible]

سدا

भोक्तैव = [illegible]   भोग्यभावेन = [illegible]

सदा = سدا   सर्वत्र = ہر ایک جگہ میں

संस्थित: = ٹھہرا ہوا ہے

86

इति वा = یا ایسے यस्य = جس کو संवित्तिः

= ایسا گیان ہے

क्रीडात्वेन کھیل کی طرح سے अखिलं जगत् تمام جگت کو سارا ملک

सः = وہ न पश्यन् = دیکھتا ہوا सततं = ہمیشہ

युक्तो = جڑا ہوا جیون मुक्तो न संशयः

— وہ جیون مکت ہے اس میں کوئی شک نہیں ہے =

"यस्य इति वा", یا ایسے جس کو "संवित्तिः" = گیان ہے

सः = وہ है जीवन्मुक्तः" جیون مکت ہے

इति संबन्धः = یہ ہے سمبندھ

अथैवम् = اب ایسے इदानीमेव اس وقت

प्रतिपाद्य प्रकारेण پرتپادن کے طریقے سے

"यस्य वा" = جس کو → साधकोत्तमस्य =

سادھکوں میں اتم سادھک کو

"संवित्तिः" = گیان → सम्यक् ज्ञानं =

اچھی طرح گیان

स: = ۲ "सततम" = ہمیشہ → अव्यवधानेन
= لگاتار

सर्वावस्थासु = ہر ایک حالت میں "युक्तः" = یوگ سے یُکت
→ समाहित : = ہر وقت ساودھان
درشٹی سے

उक्त वक्ष्यमाण = کہے ہوئے اور کہے جانے والے उपदेष्टा
= اُپدیش کو دھارن کرنے

स्वभाव बल परिशीलन = تو سبھاؤ کی طاقت کا
ملا کر اس پر غور کرتا ہے

أ अप्रमत्त = نہ چوکنے والا एकाग्रमानसः
= یکاگرچت ہو کر

"सञ्जीवन" = زندہ → नियत देहाधिकार
حاسلئ
دیرگھ
←
[سدا] = ہمیشہ زندہ رہنے والا ہے

प्राणान् = پرانوں کو

धारयन् एव = دھارن کرتا ہے [جو زندہ رہتا ہے]

"मुक्तः" مکت ہے → सर्वव्यापक सर्वात्मक

سب میں ویاپک - سب کی آتما = सर्वेश्वर स्वतन्त्र स्वस्वभाव

انکار جس | سب کا مالک سوتنتر - اپنی ہی [illegible] روپ | स्फुरकार

प्रतिपत्ति बाधने = [illegible] میں رکاوٹ ڈالنے سے

जन्मादि विरोधात् = جنم وغیرہ کی رکاوٹ سے

निष्क्रान्तः = چھوٹا ہوا سے | परमेश्वर स्व

[illegible] | सर्वेत्त = ہر ایک [illegible]

[illegible] (الٰہ [illegible])

इत्यत्र = یہاں پر "न संशयो" =

کوئی شک نہیں (کہ یہ ٹھیک ہے)

→ न भ्रान्तिः اس میں کوئی بھرم نہیں ہے

اپنے آپ سے جانا جانے والا | स्वसंवेद्य = اپنے آپ ہی جانا جائے | उपपत्त्युपलब्धि =

پرمان اور [illegible] =

[illegible] | निष्प्रकम्पत्वात् = ان سے نہ ہلنے [illegible]

पुरुषस्य प्रार्थस्य = [illegible]

स = ० "सततम" = ہمیشہ → अव्यवधानेन

= نرنتر سے

सर्वावस्थासु = ہر اوستھا میں "युक्तः" - یوگ یکت

→ समाहित : = ہر وقت سادھو چت دھیان سے

उक्तवक्ष्यमाण = کہے گئے و کہے جانے والے उपदेश

= اُس اُپدیش کے ودھان سے

स्वभाव बल परिशीलन = سوبھاؤ کی طاقت سے

کے ابھیاس کو پرکاش کرتا ہے

اُن अप्रमत्त = نہ چوک کر एकाग्रमानसः

= ایکاگر من ہو کے

"सञ्जीवन" = وہ زندہ → नियतदेहाधिकारणान्

اُدھر →

[ابھی تک] = [illegible]

प्राणान् = پرانوں کو

धारयन्नेव = دھارن کرتا ہوا [یعنی زندہ رہتا ہے]

"मुक्तः" = مکتی ہے → सर्वव्यापक सर्वात्मक

= سب میں ویاپک - سب کی آتما सर्वेश्वर स्वतन्त्र स्वस्वभाव

जس سب کا ایشور - سوتنتر - اپنی ہی سوبھاؤ کا دھنی پورا اختیار प्रकार

प्रतिपत्तिदार्ढ्यन = پرتیتی کی مضبوطی درڑتا سے

जन्मादिविरोधात् = جنم وغیرہ کے ورودھ سے

निष्क्रान्तः = چھوٹا ہوا سے परमेश्वर स्व

کیونکہ सवृत्त = پرمیشور کے سوروپ میں ورت ... بنا ہوا ہوتا ہے - (اس کا)

इत्यत्र = یہاں پر "न संशयो" = کوئی شک نہیں (کہ یہ ٹھیک ہے)

→ न भ्रान्तिः = اس میں کوئی بھرم نہیں ہے

جان جانا آپ اپنے آپ سے स्वसंवेद्य = آپ ہی جاننے والا ہے उपपत्त्युपलब्धि

= پرمان اور دلیل سے

نہ ڈگمگانے والا निष्प्रकम्पत्वात् = اس کے نہ ہلنے سے

परस्य अर्थस्य = [illegible]

किं कुर्वन् = کیا کرتا ہوا ہے ?

जीवन्मुक्तः = جیون مکت

"परिखिलम्" → ~~अखिल~~ سارا →

"अशेषमनन्त वस्तु व्यक्ति विचित्रं जगत् जगत"

= سارا اننت وستو (بے انتہا) اور ان کی وہ ویکتیاں وچتر

ہیں۔ ان سے جو بنا ہوا ہے جگت ہے

یہ ہے → विश्वं = دنیا

اسکا کو "क्रीडनत्वेन" = کھلونا کر کے سے برابر خوش کرتا ہے

→ स्वनिर्मित = اپنے سے بنا ہوا

चराचर = ہر طرح کی भाव क्रीडन

یہ سب کھیل کی مثل

कोपरचित लीला = کھیل کی یہ کھیل میں

उपरचित मात्रतया = ان سے بنا ہوا

लीलामात्रतया = یہ سب کھیل ہے

87

"पप्रयन" " [illegible] विभावयन्

= [illegible]

[illegible] सर्वो हि जनः = ہر ایک جو प्रानुन्मिषित

[illegible]

स्वस्वभाव = اپنی [illegible] त्रिभालन

= [illegible]

[illegible] धाम = [illegible]

[illegible] विमल = نرمل विज्ञान = [illegible]

दृष्षिरात्मनो [illegible]

= [illegible] [[illegible]]

[illegible] अन्योन्यतश्च = ایک دوسرے [illegible] विभिन्नम्

([illegible])

= [illegible]

उद्घाटितं = [illegible] भावजाते =

[illegible]

[illegible] कुञ्च

= [illegible] प्रध्यतः [illegible]

[illegible] कारणात् [illegible] उद्धृतम् = [illegible]

بہ۔ جو احساسات ہو جاتی جس سے تو ہرش سے اور شوک سے بھی ہم و ماں دن کو میراث ہوتا ہے

السابق معنیہ مانع میں

प्रतिष्ठो = سمجھنا मन्यमानः = مانا گیا ہوتا ہے (کیونکہ آتما گیان و درشٹی نہیں کبھی ہوتی ہے)

بنا ؟ तद्भाव = اس کا جو

جنم
× } जन्य = پیدا ہوئی हर्षशोक = ہرش شوک

भयादि = ڈر وغیرہ विकारान् = بھی بدلاؤ کو अनुभवन = انوبھو کرتا رہتا ہے

بنا भवाद्ध्वनि = سنسار میں पुनः पुनः = بار بار

जन्मादिबन्धन = جنم آدی بندھن भाजनतां भजते = کا برتن ہو کر رہتا ہے

यस्तु = جو کوئی प्रतिपाद्य = ثابت کرتا ہے

प्रकारेण = اس طرح

उत्पन्न = پیدا ہو परसंविद = برتر سموت

[illegible]

[illegible] प्रभिव्यक्तिः = [illegible]

[illegible] = [illegible] यथा = [illegible] कथित = [illegible]

क्रीडापरः = [illegible] स्वपरिकल्पितै
= [illegible]

भयक्रोधादिकारणभूत = [illegible]

भाव = [illegible]

भाव = [illegible]

प्रतिच्छन्दैक
क्रीडन् = [illegible]

~~तथे यथ~~ तथाथात्म्य [illegible]
स्व
त्वात् [illegible]

भयादिविकारकालुष्यं = [illegible]

मनागपि = [illegible] नापद्यते [illegible]
([illegible])

तथैव = [illegible] भावानां = [illegible]

स्वस्वभाव = [illegible] विजृम्भित
प्राप्ति [illegible] = मात्रतया

यथात्म्यवेदी सन् = یعنی ٹھیک ٹھیک سمجھتے ہوئے سمجھتا ہے

مناگپی विकृतिं = تھوڑے وکار کو

न प्रापद्यते = آپتی نہیں ہوتی ہے

~~कथ यस्य~~ एवं = اسی طرح

सर्वं क्रीडात्वेनैव = سب کو کھیل (تماشا) کے

पश्यन् = دیکھتا ہے

जीवन्नेव मुक्तः = جیتا ہوا ہی مکت ہے

"कथं यस्य संवित्तिः? = کس طرح جس کو ہے گیان

तेन = اس لیے | मित्यादि = شلوک [illegible]

श्लोकेन = شلوک سے ثابت کرتا ہے प्रतिपादयति:

'तेन' ہیتو کے لیے ہے हेतुना = کارن سے

"पूर्वार्थचिन्तासु' = سب اشیا کی
فکروں میں

اُس کی सा अस्यैव नास्ति = وہ اس کے ہی
نہیں ہے

"या न शिवः" = جو شیو نہیں ہے

इति यस्य संवित्तिः = جس کو یہ سمجھ ہو

स जीवन्मुक्तः इति = وہ جیون مکت ہے

पूर्वदोऽथ प्रत्यायकः = شبد و ارتھ کو دکھلاتا ہے

→ पदसमुदायः = پد سمودائے

→ अथो जात्यादिभेदात = ذات وغیرہ کی بھید سے اور

बहुविधम् = بہت طرح کا — अभिधेयं वस्तुजातं

अ = ...

तथा = اسی طرح "चिन्ता"

तथा तथा विकल्पना = ویسی ویسی کلپنا =

अवन्त = ... चिन्तनीय

वस्तुपरागात = وستو کے رنگ سے =

۵۰۱ विचित्राणि ज्ञानानि = بہت طرح کے گیان

यन्मयो व्यवहारः = [illegible]

एतासु शब्दार्थ चिन्तासु = ان شبد اور ارتھ کی چنتاؤں میں

"साऽवस्था" = وہ اوستھا → دشا

न काचित् = کوئی نہیں ہے (کوئی دشا ایسی نہیں)

शब्दचिन्तारूपा = جو شبد چنتا روپی ہے

वा अर्थचिन्तारूपा = یا ارتھ چنتا روپ

संभवति = نہیں ہو سکتی

या = جو (جس) शिवस्य = شو کی

साक्षात् = ساکھشات न भवति = نہ ہے

यतः एव = کیونکہ ہی तस्य = اس کے "भोक्ता" → = بھوگنے والا

[illegible] अनुभवितैव = انوبھو کرنے والا ہی ईश्वरः = ایشور

"सदा" = ہمیشہ नित्यं = نتیہ

"सर्वत्र" = ہر جگہ सर्वासु अवस्थासु = سب اوستھاؤں میں

[illegible]

"भोग्यभावेन" " [illegible]

"अनुभवनीय = [illegible] त्वात्मना" "स्थितो"

[illegible]

न = نہ पृथक = [illegible] किंचित = [illegible] भोग्ये = [illegible]

नाम = [illegible] अस्ति = ہے

तत्व = [illegible] अनवमर्श मात्र = [illegible]

विजृम्भितम् = [illegible] सतत = [illegible]

भोक्तृ भोग्य विभाग रुपम = [illegible]

केन हेतुना = [illegible] ? "न सावस्था न या शिवः" = [illegible]

इत्याह = [illegible]

तस्मात = اسی لئے جीवः = جیو →

"सर्वमयो" " = [illegible] ([illegible]) आत्मा

विश्वरुपः ([illegible]) = [illegible]

२४ परस्पर = آپس میں व्यतिरिक्त = [illegible]

प्रतिपत्तिः = حاصل ہوتی ([illegible])

जीवस्यापि = جیو کا بھی / جیو پر بھی यः व्यवहारः = جو برتاؤ ہے

सोऽपि = وہ بھی वेद्यवेदक = [illegible]

अभेद पूर्वक = اس سے [illegible] तयैव उपपन्न = [illegible]

[illegible]

[illegible]

इत्यर्थः = یہ مطلب ہے

कुतस्तत? = کیسے ہوتا ہے ؟

[illegible] | "तत्संवेदन रूपेण" [illegible]

तादात्म्य प्रतिपत्तिः = [illegible] حاصل ہوتی ہے

सर्वभाव समुद्भवात = سب بھاؤں کی پیدائش ہونے سے

([illegible])

सर्वमयो जीवः = اس لئے جیو سرو مئے ہے

तस्य = اس کا कस्यचित = کسی کا संवेद्यस्य

घटसुखादि = گھٹ سکھ وغیرہ کا جو جاننے کے لائق ہے =

यत = جو "संवेदवे" " جاننا یا پہچان ज्ञानं

तस्य = اس کا यत "रूपं" = جو اس کی شکل ہے → स्वाभावः

तेन हेतुना = اس ہیتو سے या = جو وجہ سے =

"तादात्म्य प्रतिपत्ति" = ایک ہو جانا → ~~[illegible]~~

तदभेदसंवित् = اس سے ابھید ہونے کی پہچان ہے

ततो हेतोः = اس وجہ سے (جو اس سے پیدا ہے)

निर्वर्तमानो यः = جو پیدا ہوتا ہے "सर्वभाव समुद्भवः"

यः = जो 'सर्वेषां भावानां ' سب بھاووں کی پیدائش

उत्पत्तिः - پیدائش

لہٰذا तस्मात सर्वमयो जीवः = اس لئے جیو سرو مئے ہے

किमुक्तं भवति = کیا کہا گیا ہے

जीवस्यैव = جیو ہی کا
व्यवहारो = برتاؤ ہے

विचार्यमाणो = بچار کیا جاتا ہوا

रूप्यं वस्तु = شی =

याथात्म्यम् = ٹھیک ٹھیک اصلیت

उपपादयति = ثابت کرتا ہے

तथा हि = جیسا کہ
रूप्यं = شی

स्वविषये = اپنے موضوع میں
संविदन्नेव = جانتا ہوا ہی

समुद्भावयति = پیدا کرتا ہے
→ सृजति = پیدا کرتا ہے

संवेद्यमानमेव हि वस्तु = جو جانی جاتی ہے وہی چیز

स्वरूपं लभते = اپنی صورت کو پاتی ہے

न तु असंवेद्यमाने = جو نہیں جانی جاتی ہے وہ نہیں پا سکتا ہے

لہذا

संवेद्यमानता च = جو محسوس کی جاتی (ہیں) وہی तेन तेन रूपेण

= اس اس سے

प्रकाशमानता = روشنی کی جاتی ہے
- جانی جاتی ہے

प्रकाशमानत्वे च لہذا ہی پرکاش ہے

प्रकाशाद्व्यतिरिक्तं جو پرکاش سے الگ ہو =

नान्यत् किंचित् — اور کچھ نہیں ہے

= اور کچھ نہیں

नान्यत् किंचित् = نہ ایک بھی کچھ ہے = यदाहन्यायवादी

" चेतनाचापि वेद्यत्वात् तद्रूपाप्रवेदनात् "

چیتن سے بھی / وہ اشیاء دیکھی جاتی ہیں / مگر دیدی کی ہے / اسکے / جانی جاتی ہے / کیونکہ جیسے دیدی واقعہ ہو

چیتن سے بھی — دیدی کی جاتی ہے — اس روپ کو — نہ جانی ہیں

جس جانی جاتی ہے اور ہے

اور اشیاء وہ دیکھی جاتی ہیں۔ وہ چیتن کی طرح نہیں جانا جاتا ہے

इति - एवं च = اور ایسا यत् यत् = جو جو

अयं जीवः = یہ جیو संवित्ति = جو کچھ دیکھا رہا ہے

तत तत = وہ وہ अस्य शरीरमेव اس کا شریر ہی

न तु = نہ کہ नियत = مقرر शिरः = سر पाणायाद्य
ہاتھ پیر وغیرہ

वयवसंनिवेश एव = ہی ٹھہرا
کہ ہے

सोऽपि = وہ بھی हि یقینا अस्य = اس کو

संवेद्यमानतावस्था = [illegible] शारीरी भवति
यामेव

रूपं यदा तु = [illegible] व्यतिरिक्तो [illegible] किं विषय एव.
[illegible]

तथा च [illegible] संवेद्यमानत्व [illegible] सामान्यात्
[illegible]

द्विविधं = دو طرح سے शरीरमस्य [illegible]

~~शस्मात रूपस्य~~ [illegible] ~~तत्त्वविदः~~ [illegible]

तत्त्वविदेभः = [illegible] आम्नात [illegible]

[illegible] भूतात्मकं = [illegible] भावात्मकं च = [illegible]

तत्र = وہاں मायाशक्ति = [illegible] वैभव

विस्मारित [illegible] तात्त्विक स्वभावतया
([illegible]) = [illegible]

वस्तु = [illegible] संवेदनावसरे [illegible]

स्वरूप = [illegible] परामर्शत्व = [illegible]

मुकुलित = بند کئے ہوئے سامर्थ्यो = سامرتھیہ سے अयं जीवः = یہ جیو

एवं दृढ = ایسے پکے अहंकार = اہنکار کی وجہ سے

स्थूलः = موٹا، पारायां = [illegible] प्रदतया = [illegible] शरीरत्वेन = شریر کے روپ میں

दिमत = [illegible]

यत् परामृशति = جو کچھ اس کو پرامرش کرتا ہے तत् = وہ अस्य = اس جیو کا

सृष्ट्यादिमयत्वात् = سرشٹی آدی سے بنے ہونے کی وجہ سے भूतात्मकम् = پانچ بھوت سے شریر بنا ہے

यत्तु = جو व्यतिरिक्तं = الگ ہے शब्दादिविषयत्वेन = شبد آدی وشیوں کی طرح

परामृशति = پرامرش کرتا ہے सत् भावात्मकम् = [illegible] (شریر ہے)

परमार्थे तु = پرمارتھ میں تو विचार्यमाणे = وچار کرنے پر

द्वयमपि = دونوں ہی अस्य = اس جیو کا

शरीरं = شریر ہے संवेद्यमानत्वाविशेषात् = سمویدیمان ہونے کی [illegible]

([illegible])

एवं = [illegible] संवेद्यमानता = [illegible]
लक्षणाभाव [illegible]

संसर्गावस्थायां = [illegible] जीव = [illegible]

संवेद्यवस्तु = [illegible] व्यतिरेकात् [illegible]

[illegible] सर्वमयो विश्वरूपः [illegible]

स्थितोऽपि सन् = [illegible] तथावस्तु = [illegible]

संवेदन तत्त्व = [illegible] परामर्शात् [illegible]

अनउन्मेषा ऽपि सन् = [illegible]

[illegible] सर्वमिदम् = [illegible] स्वात्मव्यतिरिक्त [illegible]

कारणान्तर = [illegible] लब्धात्मकत्वेन [illegible]

स्वात्मन = [illegible]

परस्पर तथ्यं = [illegible] पृथकत्वेन [illegible]

अवच्छिन्न = ٹکڑے ٹکڑے ہوئے   प्रमाणेन च = اور ثبوت سے

देशाद्यव = جو دیس آدی سے ہے   अनित्यभाव = جو ہمیشہ نہ رہنے والا

अहंभावेन = اس میں ہم ہیں کے خیال سے   अध्यवस्यन् = پکا کرتے ہوئے

जन्मादिबन्धभाक् = پیدا ہونا آدی کی جو بندش ہے
اسکو سہنے والا ہے

سنسار संसारी जीव इति = اس کا نام سنساری
व्यपदिश्यते = جیو رکھا جاتا ہے

यदा तु = جس وقت   इव = جیسے   दिवाकर = سورج

شکتی शक्ति = شکتی (دانشمندی) ایسا ہی   पंक = کیچڑ

पात = ناش ہو

जनित = پیدا ہوا   प्रबोध = گیان   (جب کہ گیان ہو)

उन्मीलित = کھلا ہوا   विषाद = رنج

दृष्टि = روشنی صاف ہوا (نظر)

प्रकाशमान = روشن ہوا   स्फुटतर = بہت صاف

देहादि = دیہ وغیرہ   व्यतिरिक्त = الگ

९१/

सत्यात्मस्वभाव = [illegible]   सुस्थित = [illegible]

अहंप्रतिपत्तिः = [illegible]

यथावस्थित सतः = [illegible]   वस्तु = [illegible]

संवित्संवेदन = [illegible]   परामर्श प्राप्तिभि = [illegible]

व्यक्तिभाक् = [illegible]   भवति = [illegible]

यदा = [illegible]   स एव = [illegible]

संकल्पमात्र = [illegible]   विलिखित = [illegible]

विचित्र = [illegible]   विश्वव्यक्तिमय [illegible]

= [illegible] प्राप्तिचक्रः [illegible]

शिवः संपद्यते = [illegible]   [illegible]

91/

तेन उक्तम् = اس نے کہا ۔ वस्तुसंवेदन तत्तत् = [illegible]

स्वभाव बलेन = اپنی فطرت کے زور سے

या = ३. तादात्म्य

प्रतिपत्ति = [illegible]

संवेद्यमान वस्तु = [illegible] अभेद संवित्तितः = [illegible]

सर्वभाव समुद्भवः = [illegible] तस्मात् = اس لیے

जीवः = [illegible] तावत् सर्वमयः = سب ہے

तेन च = اس لیے ۔ तस्य = [illegible]

सर्वमयत्व = [illegible] प्रतिपत्तिलक्षणेन = [illegible]

हेतुना = [illegible]

सा अवस्था नास्ति = [illegible] या शिवमयी न भवति = [illegible]

([illegible])

91/ ततश्च = اور اس لیے भोक्तैव = بھوگی

ईश्वरो = ایشور جو भोग्यभावेन = بھوگ کیے جانے کی حیثیت سے

ईशितव्यवस्तु حکم کی جانے والی چیز रूपतया
صورت ہونے سے

सदा = سدا सर्वत्र = ہر جگہ
संस्थितः = اچھی طرح قائم ہے एव = اسی طرح

यस्य = جس کو سंवित्तिः = علم
ہو گیا

स जीवन्मुक्त = وہ جیون مکت ہے

इति = اسی طرح वाक्य = واکیہ کا

समन्वय = سمنوے संकलनार्थम् = اکٹھا کرنے کے لیے

اس لیے इतत् = یہ पुनरुक्तम् = پھر کہا ہے

इत्यनेन श्लोकत्रयेण = ان تین شلوکوں سے

आत्मन एव विश्वरूपत्वेन = آتما کے ہی وشو روپ ہونے سے

स्थितिः = [illegible] प्रतिपादिता [illegible]

विश्वप्रपञ्चस्य [illegible] निमित्तान्तरा [illegible]

अनुपपत्तेः = [illegible]

[illegible]

यथोक्तं ब्रह्मविदा =

"कल्पयत्यात्मनात्मात्मा देवः स्वमायया।
स एव बुध्यते भेदादिति वेदान्तनिश्चयः॥"

[illegible] कल्पयत्य = [illegible] आत्मा = [illegible]

आत्मात्मना = [illegible] आत्मदेवः = [illegible]

स्वमायया [illegible] स एव = [illegible]

[illegible] बुध्यते [illegible] ते भेदात् = [illegible]

[illegible] वेदान्त निश्चयः = [illegible]

तथा = [illegible] अन्येनापि = [illegible] [illegible]

स्तुतिद्वारेण [illegible] उक्तम् = [illegible]

विविधै = طرح طرح ; उपाधिभि = پابندیوں - شرطوں

प्रविस्थ = گھسے ہوئے ; वह्नि = بادل / ہوا میں

स्फटिकादिवत् = بلور وغیرہ کی طرح ; तव = تمہارا

विचित्रता = تعجب یا دھوکہ ; उच्यताम् = بتلائیے

यदि = اگر ; ते = تمہیں ; कदाचित = کسی وقت

कथं च = کیسے طرح ; कुचित् = کسی جگہ

~~भवितत्~~ भावितं = دیکھنے ; क्षाम = کم ; वत = مثال

भासत: = ہا نظر آنا (ان) (غیر موجود) نظر آئے ; पृथक = الگ

परमाणु = ذرہ ; पाक = پکنا ; परिणाम = کسی کے بدلنے کا نتیجہ

विभ्रमात् = دھوکہ سے ; युत वा = یا (دیکھو دوئی) ملنے کی کیفیت

विवर्त = دیکھنے والا (رسی سانپ) ; इति = ایسے

विश्वमिथ्यामाम = دنیا کو جھوٹا ماننا

विबुध = جاننے والا ; उतमय = ایسا ; यत = جو ; उच = ...

یہ الگ دکھاؤ تمہاری
بھی دنیا سے الگ الگ
رہتے ہم سمجھتے ہیں
جب ہم الگ
ہوئے تو سمجھ
میں نہیں آ سکے

یہ پیدا ہوتا
لیکن
پانی پیدا ہو سکتا ہے

اس سے دوری
جو اس سے ...
اس سے

९२

तदितापि च = [illegible]

ततविकल्पना = [illegible] तव प्राप्तिरेव

न = نہ तथा = ایسے اس [illegible] उपपादयेत [illegible]

तत = اس سے प्रतिनिमेष ~~उन्मेषन्~~ उन्मेष - निमेष

~~निमिषत~~

विकल्प [illegible]

विविध प्रपु मुराउल = [illegible]

पथ च = [illegible] प्रति शुद = [illegible] वपु =

प्रतभुत = [illegible] एक = [illegible]

नू : [illegible] स्फुरसि = [illegible]

त्वमेव = تم ہی ہو शिव = [illegible]

चिन्मयो = [illegible] मारा. = [illegible]

[illegible]

विविधै = طرح طرح — उपाधिभि = [illegible] — [illegible]

प्रविश्य = گھس کر — वहि = باہر ہوا میں

स्फटिकादिवत् = بلور وغیرہ کی طرح — तव = تمہاری

विचित्रता = [illegible] — उच्यताम् = [illegible]

यदि = اگر — ते = تمہاری — कदाचित = کسی وقت

कथं च = [illegible] — कुचित् = کسی جگہ میں

~~भवाति~~ भवितुं = [illegible] — क्षमा = [illegible] — वत = [illegible]

भासत: = [illegible] — पृथक = الگ

परमाणु = [illegible] — पाक = [illegible] — परिणाम [illegible]

विभ्रमात् = [illegible] — युतवा = [illegible]

विवर्त = [illegible] — इति = اس طرح

विश्वमिथ्यात्वम् = [illegible]

विबुध = [illegible] — उत्तमय = [illegible] 3.

यत = 3 — इदं = [illegible]

[illegible]

[illegible]

तदि हापि च = اس کے بعد بھی

तत विकल्पना = وہ وکلپنا بھی   तव प्राप्तिरेव = [illegible]

न = نہ   तथा = اس طرح   उपपद्येत [illegible]

तत: = اس سے   प्रतिनिमेष ~~उन्मेषन्~~ उन्मेष - [illegible]   निमेष त

~~निमिषत = [illegible]~~

विकल्प = وکلپ [illegible]

विविध अपु मुराडल = [illegible]

पथ च = [illegible]   प्रतिपदुद = [illegible]   वपु = [illegible]

प्रतभुत = [illegible]   एक = [illegible]

भू: = [illegible]   स्फुरसि = [illegible]

त्वमेव = [illegible]   शिव = [illegible]

चिन्मयो = [illegible]   मारा. = [illegible]

[illegible]

व्याख्यातम् इतत् वृत्तौ पृथक पृथक : [illegible]

" सर्वात्मक एवायमात्मा " [illegible]

" तेन तथाविधेन " [illegible]

" एवं स्वभावे यस्य " [illegible]

चतुर्थो निःष्यन्दः

इदानीम् = [illegible] इयमेव = [illegible] उपपत्तिः [illegible]

सुगृहीता [illegible] सती = [illegible] अभेद उपलब्ध [illegible]

उपायः = [illegible] अहि प्रदर्शयितुं [illegible]

मन्त्रन्यासादि = [illegible] समस्तविधि [illegible]

अस्या = [illegible] प्रतिपादयितुं [illegible] संस्कारत्वम्

अहं = [illegible]

अयमेवोदयस्तस्य ध्येयस्य ध्यायिचेतसि।
तदात्मता समापत्तिरिच्छतः साधकस्य या॥१॥

अयमेव = [illegible] उदयः [illegible] तस्य = [illegible] ध्येयस्य = [illegible]

ध्यायि = [illegible] चेतसि = [illegible]

तदात्मता = [illegible] समापत्तिः = [illegible]

इच्छतः = [illegible] साधकस्य = [illegible] या = [illegible]

"तस्य" = (اس) कस्यचिद् = [illegible]

"ध्येयस्य" = [illegible] तेन तेन = اس اس

प्रकारेण = [illegible] → स्मर्तव्यस्य = [illegible]

मन्त्रवाच्यस्य = [illegible] देवताविशेषस्य = [illegible]

(کی) "उदयः" = [illegible] → तत् तत् = وہ وہ

प्रतिक्रिया = [illegible] संपादिना = [illegible]

प्रमोध = [illegible] प्राप्तिना = [illegible]

तेन तेन = اس اس उपास्वेन = [illegible]

प्रकारेण, प्रथनम् = [illegible]

कु = [illegible] अधिकरण ? = [illegible]

"ध्यायिचेतसि" = [illegible] دھیان [illegible]

→ ध्यायिनः = [illegible] دھیان [illegible]

→ स्मर्तुः = [illegible]

संबन्धानि = [illegible]

[illegible] चेतसि = [illegible] → संकल्पे = [illegible]

کس بات کا نتیجہ

कोऽसावुदयः ? = یہ نتیجہ کونسا ہے — इदंता :

(اس وقت یعنی) یعنی خواہش کی حالت

→ इच्छावस्थायां = خواہش کی حالت میں

वर्तमानस्य = موجود ہونے والے کا — मन्त्र = منتر کے

उच्चारयिषो = اُچارن کرنے کی خواہش والے — साधकस्य = سادھک کے

→ अभियुक्तस्य = مشغول ہوئے ہوئے کے — वस्तु = وستو کا / یا جو چیز

وستو کی ایسی طاقت / یہی تاثیر کا نتیجہ

सामर्थ्यसिद्धा = اُس کی طاقت سے ثابت — या = کہ

तदात्मता = اُس کے روپ ہونا — समापत्तिः = حاصل ہونا

→ तस्य = اُس — ध्येयस्य = دھیان کی

جو اپنا — य आत्मा स्वरूपं = جو اپنا روپ — तस्य = اُس کا

→ भावस्तदात्मता = یعنی اُس کا ہونا (ایک ہو جانا)

तया समापत्त्या = اُس حاصل ہونے سے →

یعنی — एकाभावः = ایک ہی ہو جانا

इदमत्र तात्पर्यम् = یہاں یہ مطلب

مطلب

न्यासादि = [illegible] सेतु।

मात्र उच्चार = [illegible]

उच्चावस्थायां [illegible] =

[illegible] — मन्त्ररूप = [illegible] अन्यदेवताकारायां [illegible] =

साधकचेतसः = [illegible]

स्वयम = پانے अप्रयत्नेन = [illegible]

[illegible] | संपाद्यमाने = [illegible] यत = ३

अभिन्नरूपत्वं = [illegible] स सब = [illegible]

[illegible] परामर्शक्षमम् [illegible] संविदा [illegible]

ध्यानेन ध्यातु = [illegible]

[illegible] मुख्य = [illegible] पाराध्यदेवतायाः

[illegible] =

[illegible]

प्रत्यक्षादर्शनरूप = [illegible]

उदयो

[illegible] { नुत् = [illegible] व्यतिरेक = [illegible] विभावमान: [illegible]

रूपाकारता = [illegible]

[illegible] इति रूपनयैव संविदा = [illegible] ([illegible])

शिवरूपतापत्ते: = [illegible]

" .... शिवो भूत्वा शिवं यजेत् "

[illegible] -

([illegible])

इत्यस्य विधेः चरितार्थत्वम्।

= [illegible]

" रूपयमेव तत्संवेदन द्वारेण " "

[illegible] [illegible] -

इत्यादिना व्याख्यातमेतत् वृत्तौ ॥ "

[illegible]

अपस्या एव संविदो = اسی سموید کی

विद्यन्तर = دوسرے تجربوں کا संस्कारकावश

سے خالی ہونا ہے

आह = کہا ہے

इयमेवामृतप्राप्तिरयमेवात्मनो ग्रहः।
इयं निवीरादीक्षा च शिवसद्भावदायिनि॥२॥

یہی امرت پراپتی ہے
یہی آتما کا گرہن ہے
یہی نروان دیکشا ہے
شیو کی حالت کو دینے والی

इयमेव = یہی अमृतप्राप्ति = امرت - آنند کی پراپتی

इयमेव = یہی आत्मनो ग्रहः = آتما کا گرہن کرنا
حق کا قرار

इयं = یہی निवीरादीक्षा च = مکتی کی دیکشا

3. शिवसद्भाव = شیو کی ستھتی دायिनी = دینے والی ہے

"इयमेव" یہ यथा प्रतिपादिता = جیسے سمجھایا گیا

یہ शरीरादि = شریر وغیرہ निरक्षर = [illegible]

अपालम्ब = بغیر سہارے کے अपरे प्रत्ययरूपस्य
= [illegible]

स्वप्रकाशा [illegible] व्यतिरिक्त = [illegible] वेद्यभाव प्रतीति

[illegible] = मयस्य

[illegible] मिथ्याज्ञानस्य = [illegible] उच्छेदात् = [illegible]

[illegible] अनवच्छिन्न = [illegible] स्वच्छ = [illegible]

स्वच्छन्द स्वभाव = [illegible] =

मात्र = [illegible] एकत्व [illegible]

उपलब्धिरूपा [illegible] = संवित्

→ सम्यग् ज्ञानम् = [illegible] → [illegible]

[illegible] "अमृतप्राप्तिः" = [illegible] → प्रहतस्य

→ अविनाशिनः ([illegible]) [illegible] =

शिवात्मकस्य = [illegible] आत्मनः = [illegible]

प्राप्तिरूपाविद्य = [illegible] → ? = [illegible]

किल = [illegible] अर्थे = [illegible] अनुगत [illegible]

अमृतप्राप्ति [illegible] भवति = [illegible]

न तु = [illegible] द्रव्यविशेष = [illegible]

[illegible] जडस्य = [illegible] अनित्यस्य [illegible] fluid [illegible]

وہ کسی دوسرے کی پراپتی جو دوسری چیز کی ہے - اس کو جو کسی وقت پراپت رکھتے ہو اس کی کو اس روپ
کا اپنا روپ بنا جاتا ہے - کہ اوت پراپتی ہو گئی -

वस्तुनः = چیز کا कस्याचित् = کسی دوسری   प्राप्ति = پراپتی

अप्रभूत प्राप्तिः (جو اوت پراپتی نہیں ہے)

सा हि जीवस्य = وہ جیو کی   कालान्तर = کسی وقت تک

(ٹہرنے والا) स्थायि = ٹہرنے والی   शरीरत्व = شریر والا پن

कारणाभावात् = کارن نہ ہونے سے   इति = یہ

उपचारेण = اپچار سے   एवम् = اسی طرح

उच्यते = کہی جاتی ہے (یہ بات کہی جاتی ہے)

तथा = اسی طرح "प्रियमेव वात्मनो ग्राह्यः"

= یہی ہے آتما کا گرہن کرنا - من کا پیارا

यः = جو एवंविधा = ایسی اس، मन्त्र उच्चारण

= مقرر جگہ کا ہے اسی طرح   इच्छा

क्षणभाविनी = اسی لمحہ میں ہونے والی

संवित = موجود ہے

सो = وہ   प्रियमेव = یہی   आत्मनो = جیو کا

ग्राह्यः ग्राहणं (ग्राहणम्) विषयसंबन्धित्वेन = جیو کا اپنا = स्वस्य जीवस्य वा

= گرہن کرنا — اپنے شریر پر پیار کرنا

[illegible]

97

तेषु तेषु = [illegible] हि [illegible] दीक्षादिषु [illegible]

विविधविशेषेषु = [illegible] आत्मनः = [illegible]

शिष्यसंबन्धिनः = شش سمبندھی

वा स्वस्य = [illegible] गह्वरां = [illegible]

शास्त्रेषु उपदिश्यते [illegible]

यथा उदाहृते वृत्तौ = [illegible]

" आत्मनो गह्वरां कुर्याद्दीक्षाकाले गुरुर्धिया॥"

([illegible])

तेन = [illegible] तादृग् = [illegible] विधि = [illegible] संपत्तये = [illegible]

परिकल्पित = [illegible] रूपविशेषस्य = [illegible] आत्मना [illegible]

या = उ - परमकारणं = [illegible] भूतभावस्य [illegible]

[illegible] अभेद = [illegible] समापत्तिः = [illegible]

जायते = [illegible]

97/ सा = وہ (جس سے بحث ہو رہی) परामृश्यमाना = (جس پر غور کیا جا رہا) स्वात्म = آتما کا گیان

ज्ञानात्मक = گیان روپی विधि = طریقہ

संपादिका भवति = پیدا کرنے والی ہوتی ہے

(دوسری طرح سے نہیں ہوتی اس کا گیان نہیں ہو سکتا ہے) न तु = نہیں अन्यथा = دوسری طرح سے तस्य = اس کا (وہ جو ہے)

अमूर्तस्य = جو مورتی نہیں ज्ञानं = گیان

संभवति = ہے (دوسری طرح سے وہ ہو نہیں سکتا)

(یعنی ہی گیان ...) गृहीतु = گرہن کرنے والا परमात्मनः = پرماتما کا

सर्वव्यापक = سرو ویاپک संविद्रूपात् = سمود روپ سے

तस्य = اس کا अभिन्नत्वात् = نہ بھنا (ہونے سے)

तथा = ایسا ہی "इयमेव निर्वाणपदी ..."

बिवीसा = → ... निवृत्ति = ...

= ... → द्वैत प्रत्यय लक्षण क्षोभ परिक्षयात्

= ...

९७

ہمیشہ   आत्यन्तकी = ہمیشہ کی / آخری   प्रशान्ति = شانتی (پوری شانتی)

→ संविद: = سموت کی   स्वस्वभाव = اپنے سوبھاؤ میں   व्यवस्थिति = قرار (یعنی مکتی یا نروان)

तदर्थी = اسی غرض کے لئے   दीक्षा = دیکشا یعنی

→ स्वरूप संबोध = سروپ کی سمجھ / گیان   दानात्मको = دینے والی

भेदमयबन्ध = بھید والے بندھن   क्षपणा = اس کو دور کرنے والی

लक्षणश्च = یہ لکشن ہے   संस्कार = یہ سنسکار
विशेषः = وشیش

सा च = وہ   एवंरूपा = اسی روپ والی

निर्वाणदीक्षा = نروان دیکشا   इयमेव = یہی

प्रतिपादिता = بیان کی گئی   संवित् = سموت

یہ سموت کیسی ہے   एतत् = یہ بات   = اس سموت کی

कारणत्वात् = کارن ہونے   तस्या = اس سموت

शिवस्य स्वस्वभावस्यैव = شو کے اپنے سوبھاؤ ہی

शिवस्य स्वस्वभावस्यैव = شیو کے اپنے سوبھاؤ کا ہی

→ "शिवसद्भाव" (दायिनी) = شو کا →

परमेश्वरस्य = پرمیشور کے यः = 3.

सद्भावः = ہستی یا وجود کا → सत्ता = ہستی ہے

→ येन रूपेण अहमेवास्मि इति = جس روپ میں میں ہی ہوں
[illegible]

१४ / इति प्रतिपत्ति = اس طرح کا گیان ہے

अबाधिता = جو کسی قسم کی بادھا میں نہیں ہے

सिद्ध्यवस्थायाम = سدھی کی اوستھا میں

उपपद्यते = سدھی ہوتی ہے

तस्य दायिनी प्रतिपादिका = اس سدھی کو دینے والی
ہے اس کو سدھ کرنے والی ہے

सा हि = ०० निरुत्तरः = جس کا جواب نہیں ہے

संस्कारः = سنسکار (اندرونی)

98

२०० सुप्रबुद्धगुरु = [illegible] गोचर: = اس کا وشے ہوسکے ہے

→ परमात्मभावात्मकस्वरूप प्राप्तिमात्रो = [illegible] جو ہے وہی [illegible]

न तु = نہیں

बाह्य = باہر کی جو ہے ، साधान साध्य = سادھنوں سے جو سادھیا ہے

विधिविशेषात्मक = [illegible] ، इति = اس طرح

[illegible] — ہے

व्याख्यातमेतत् = وہ بیان کیا گیا ہے

" इयमेव सा । मिथ्याज्ञान शून्यस्य " "

یہی وہ ([illegible]) جو [illegible] → [illegible] ہے

इत्यादिना वृत्तौ :- [illegible] ہے ۔

१४

एवम् उत्तमविधि = [illegible] संस्कारसात्वम् = [illegible]

कारसात्वम् = [illegible] = [illegible] [illegible] प्रस्था

[illegible] = सविदा

प्रतिपाद्य = [illegible] इदानीं = [illegible]

सिद्धयन्तरक = [illegible] कारसात्वे = [illegible]

[illegible] संसारे = [illegible] व्यवहार = [illegible]

निदर्शनेन = [illegible] प्रतिपादयितुं

श्लोकद्वयमाह = [illegible]

यथेच्छाभ्यर्थितो धाता
जाग्रतोऽर्थान् हृदि स्थितान् ।
सोमसूर्योदयं कृत्वा
संपादयति देहिनः ॥ ३ ॥

तथा स्वप्नेऽप्यभीष्टार्थी-
न्प्राणायस्यानतिक्रमात्
नित्यं स्फुटतरं मध्ये
स्थितोऽवश्यं प्रकाशयेत् ॥४॥

यथा = جیسے इच्छा = [illegible] अभ्यर्थितो [illegible]

(جو کچھ مانگتے ہیں) = [illegible]

धाता = داتا जाग्रतो = جاگرت میں प्रार्थीन = [illegible]

हृदिस्थान् = [illegible]

सोमसूर्य उदयं कृत्वा = [illegible]

संपादयति देहिनः = دیتا ہے
(یعنی جب جاگرت میں آتا ہے)

तथापि स्वप्नेऽप्यं = [illegible] अभीष्टार्थं = [illegible]

प्राणायाम = [illegible] अनतिक्रमात् = [illegible]

[illegible]

नित्यं = نت स्फुटतरं = بہت ظاہر मध्ये = اندر میں

स्थितो = ٹھہر کر अवद्वयं = دونوں प्रकाशयेत = ظاہر کرتا ہے

(اسی طرح اس دونوں کو یعنی سمادھی میں اور جاگرت حالت میں ظاہر کرتا ہے)

"यथा देहिनो" = جیسے دیہہ دھاری کو → देहमात्रमेव

— جو دیہہ مات کو آتما مانتے ہیں = आत्मत्वेन

प्रतिपन्नस्य = سمجھنے والے کو — سمجھے کو

सर्वस्य = ہر ایک سنساری کو संसारिणो

"जाग्रता" = جاگرت میں → यथास्वं विषय ग्रहण व्यग्रायेन्द्रिय वृत्तिलक्षणां

جیسے کہ ہم وشیوں کو گرہن کرتا ہے - اس پر جو اندریوں کی وشیال میں ہیں - یعنی نفس ... = [جاگرت میں جو ہر ایک اپنے اپنے وشیوں کو گرہن کرنے میں چنچل ہوتے ہیں۔]

जाग्रदवस्थाम = یہ جاگرت اوستھا

अनुभवतो = جیسے اس کو انوبھو کرتا ہوا

"हृदि स्थितम" = ہردے میں ٹھہر کر → आप्राय = پہنچ کر

निर्विघ्न = بغیر وگھن

یعنی द्रष्टुम् = دیکھنے کو ، परिभीष्टान् = چاہے ہوئے ، भावान् = چیزوں کو۔

"इच्छाभ्यार्थितः" = چاہنے سے مانگا ہوا → इच्छयादि

← इच्छायारूपया

अभ्यर्थितः = خواہش کی صورت میں [illegible]

→ तदवस्थास्वभाव = اس حالت کا سبھاؤ۔

बलात् = زور سے ، तादात्म्यस्मापत्त्या = تادات کی شمامتی سے (اسی حالت میں ہو جانے سے)

تنماتا اُس کی کا سبھاؤ ہو جانا

तदर्थं = اس مطلب کی سدھی کے لئے ، याचित इव = مانگا ہوا سا - اس طرح (کوئی مانگتا ہے)

"धाता" = دھاتا → परमेश्वरः = پرمیشور ، सर्वकर्ता = سب کا کرتا

परमात्मा

"संपादयति" = پیدا کرتا ہے (ظاہر کرتا) → यथाअभिप्रायं = جو اس کا مطلب ہوتا ہے ویسا ہی پرکٹ کرتا ہے = प्रकाशयति

किं कृत्वा? = کیا کر کے؟

"सोम-सूर्ययोः" = سوم - سورج ، ماہتاب - آفتاب

یعنی → चक्षुषी = دونوں آنکھیں - [illegible]

"उदयम" = ادیم → अभिप्रेतार्थावधारण
ہے (یعنی [illegible] صرف) = मात्र

کا [illegible] अवधानरूप = [illegible] अवधान
= [illegible]

प्रथने = [illegible]

विधाय = کر

इत्युपमानवाक्यम् = اس طرح یہ درشٹانت
(یعنی یہ ایک مثال ہے) دینے کا واکیہ ہے

इदमत्र तात्पर्यम् = اس کا مطلب یہاں یہ ہے

यो यः = جو جو   कश्चित् = کوئی

संसारी = سنساری / شخص   यमेवार्थं
= جس کسی ارتھ کو

[illegible] دی   द्रष्टुम् = دیکھنے کو   उत्पन्नेच्छो = اس دیکھنے کی اِچھا
भवति, پیدا ہوتی ہے

स = وہ آدمی   तत् = اس چیز کو

दिदृक्षावस्थायां = دِدِرکشا اوستھا میں

100

अगित्य = [illegible] अपूर्वं स्व = [illegible] परमात्मानं

स्व [illegible] =

[illegible] → धाबारस = [illegible] अभिधेन = [illegible]

अविधाति = [illegible] - [illegible] [[illegible]]

सा अवस्था = وہ حالت

प्रार्थना - [illegible] = अस्य

इत्युपचरिता = [illegible]

तत्पूर्वकतया [illegible] अभीष्टार्थप्राप्तिः

[illegible] =

स = [illegible] तया = [illegible] अभ्यर्थित [illegible]

धाता = [illegible] तावन्मात्रार्थ प्रथाय [illegible]

अवधानात्मना = [illegible] चक्षुषो = [illegible] - [illegible]

स्वरूपव्याप्ति = [illegible] लक्षणाम् = [illegible]

उदयं कृत्वा = [illegible]

[illegible]

९९

سامنے ہوں اگر — بعض وقت دور ہوتے ہیں

सन्निहितेष्वपि = نزدیک ہوں اگر अन्येषु = اور دوسروں

च दृश्येषु यत्र — جن کو دیکھنا چاہتی ہو — बहुषु दृश्येषु

दिदृक्षवेव — بہت سی دیکھنے لائق چیزوں میں अभ्यर्थितः

तमेवार्थं — اسی چیز کو

प्रदर्शयति = اسی کو دکھلاتا ہے

= نہیں دکھلاتا = न अन्यत्

चक्षुषोरुदयं = آنکھوں کا [illegible]

कृत्वा — کر کے — इति उपलक्षणमात्रं

اپنی ایسی [illegible] — = [illegible] — इतत

तेन = اس سے शुश्रूषाभ्यर्थितः

श्र ष — [illegible]

~~श्रवणयोरुदयं~~ — اس سے [illegible]

श्रवणयोरुदयं

कृत्वा = [illegible]

श्रव्यान्तर संनिधानेपि — [illegible] ہیں ٣٣

سامنے ہیں

शुश्रूषितमेव अर्थं

दाता देहिनः

श्रावयति = سنتا — [illegible]

[illegible]

इति सर्वेन्द्रियेष्वपि = اس طرح سارے اندریوں میں
योऽयम् = جو کہ دیکھا جاتا ہے

चक्षुषोश्च सोमसूर्यप्रभेदेन = سو اور سورج کے بھید سے
प्रतिपादनेन = اسکا ثابت کرنے سے

विश्वरूपात् = وشو روپ
धातु जीवस्य = یہ دھاتا جیو کا

वास्तव अभेद = واستو میں ابھید
प्रतिपादन प्रयोजनम् = اسکا سدھ کرنا پریوجن ہے

उपलक्षणार्थं च वृत्तिकृतैव = دکھلانے کیلئے ورتی کار نے ہی
व्याख्यातम् . = ویاکھیا اس طرح کی ہے

चक्षुरादिव्याख्यानेन
[illegible]

इत्यत्र ग्रहणात् = اس لئے یہاں گرہن کرنے سے

इत्थं = اسطرح सर्वजीवानां = سب جیوؤں کے

100

सर्वार्थ प्रथनमिच्छा = سب سے پہلے خواہش = حاصل

पूर्वकं भवति = یہ (خواہش) پہلے ہوتی ہے

(وہ جو چاہتا ہے وہی کرتا ہے)

सा च = وہی इच्छावस्था = جو یہ (خواہش) کی حالت ہے

संसारिणः = اس سنسار میں ہوتی [یہ سب سنسار کی بات ہے]

परमकारण प्रभेदरूपा = جو پرم کارن ہے

= اس کا ماننا ہے کہ ... ہے {یہ سب ... ہے جب پرم ... اس ... ہے}

इति = اس لیے परमेश्वर एव = پرمیشور ہی

स्वतन्त्रो = وہ سوتنتر ہے۔ यथेच्छमिदन्

صورت (خواہش) کی ... = अखिलं

प्रकाशयति = ظاہر ہے इति = اس لیے

परमार्थं = وہ پرمارتھ ہے - وہی ہے -

तदीयमाया शक्ति = اس کی وہ مایا شکتی ہے

جو پرم ...

अनित = اُسے پیدا ہونے والا

देहादि व्यवहरेदा = شریر آدی کی بیہد

संसारिसो = جیو کل کو — اُس سے

न प्रपद्यते = وہ پیدا کرم پراپت نہیں ہوتا ہے - [اِن سنساری جیو کل کیونکہ مایا شکتی بے بید ہے]

यस्तु = 3. प्रबुद्ध = پربدھ ہوا ہے

उक्त उपदेश = کہا ہوا اپدیش

प्रम्यास प्रकर्ष = اُس کے ابھیاس کی زیادتی

(ابھیاس کی کسوٹی پر تیز کیا ہوا)

कषणापाषाण = کسوٹی کی رگڑ کی طرح

निशातीकृत = اُس پر تیز کیا ہوا

प्रज्ञा = بدھی — گیان

कृपाणी = وہی پرم تلوار اُس سے گیان کی تلوار

निकृत्त = کاٹ دیا ہوا

कल्प = دلیل

कायादि अहंकारक = کایا وغیرہ پر ہوا اہنکار

कंकण = کنگنا

ग्रन्थि = گانٹھ (جب ... ہوا)

उदित = اُدے میں آیا ہوا

निरावरण = آورن کے بغیر

सत्य आत्म संवित = سچا آتم سموت

101

स एव = وہی समयैमाराः = سمرن کرتا ہوا شروع – آست

तम् = اس پر ماتمی کو प्रत्यभिज्ञा = پہچان لیا प्रमलम् = سمرن پورا ہوا

अंत = آخر سिद्ध = ثابت व्यतिरेक

समाधियोगिने प्राति = الگ الگ سمادھی = یوگی پر — الگ الگ یوگی

इदम् = یہ उपमेय = برابر کی वाक्येन उपादिष्टः

= اس واکیہ سے اپدیش کیا ہے (یعنی دونوں کا الگ الگ بات کہی ہے)

यथा व درشانت کی تे इव = وہ

प्रतिपादित = ثابت کی گئی

उक्त्या इदम् = اس کہنے سے الگ

प्रव्याथितेः سرارکھا کیا

सत्र

सर्वार्थान् प्रथयाति = سب دکھوں کو نیست کرتا ہے

101 "तथैव" "ایسے ہی" → तेन प्रकारेण = اسی طرح سے ہی

"नित्यं" = نت → सर्वदा = ہمیشہ

सर्वासु = سب کی   ज्ञातृ ज्ञेय संबन्धदशासु

= جاننے والے جانی ہوئی چیز کے سمبندھ دشاؤں میں

"प्रणायस्य" — پیار کی → इच्छावस्थाया

= (خواہش کی حالت کی)

तदात्म्य प्रतिपत्ति = ایک ہو جانے کی

रूपाया   روپ والی

= پیار کی = प्रार्थनायाः

اس پیار کی   "अनतिक्रमात्" = نہ الگھن کرنے سے   प्रत्यवमर्श प्रवाहितत्वेन

= پرارتھنا سے مسلسل بہتے رہنے سے

अनुपेक्षणात् = نہ اپیکشا کرنے سے   "स्वप्नेऽपि" = سوپن میں بھی

نیند میں جس میں آنکھیں بند ہوتی ہیں → स्वव्यापार उपरत चक्षुरादि = اپنے کام سے ہٹے ہوئے آنکھ وغیرہ

صرف मनोमात्र ग्राह्य = صرف من ماتر سے گرہن ہونے والی

स्वसृष्टिविषयाणां اپنی سرشٹی کی وشیوں کی

"स्वापावस्थायां" = سوتی ہوئی حالت میں (سونے کی)

यावत् = جہاں تک "प्रभीष्टान्" چاہے ہوئے

→ साधक अभिमतानेव = سادھک کے جو چاہے ہوئے ہیں (چاہے ہوئے)

प्रधान = اعلیٰ - بڑا اعلیٰ

زیادہ "स्फुरतरम" = ظاہر کرکے → प्रतिप्रकटे कृत्वा

= اچھی طرح ظاہر کرکے

"मध्ये स्थितो" → "بیچ میں ٹھہرا ہوا" → हृदये सदासीनो

= سدا ہردے میں اس ہردے میں

بیٹھا ہوا ہے

"प्रवश्यं" = ضرور ضرور नियमेन

= ہمیشہ ہمیشہ

प्रसौधाता → ظاہر کرتا ہے

प्रकाश्यते

इति = ایسی، तथा = ایسی ہی

इत्यादि = وغیرہ وغیرہ उपमेयवाक्यस्य (واکیہ) سپنے

अर्थः : مطلب یہ ہے کہ وہ

102

तात्पर्यं पुनरिदं = مطلب پھر یہ ہے

यः = जो. सर्वदा = ہمیشہ → सर्वानुभवेषु = سب انوبھوؤں میں

धातु = بنانے والا सर्वेश्वरस्य جو سب کا ایشور ہے → स्वस्वभावस्य = اپنے سوبھاؤ کے

तत लीनत्व = اُس میں لین ہونے کو लक्षणां प्रवृत्तौ کی تعمیل ہوتی ہے

२ ही स्वसामर्थ्यात् सिद्धं = اپنی سامرتھ سے ثابت ہے

प्रतिक्षण = ہر لمحہ प्रत्यभिज्ञा अवाप्तिख्यात = پہچان سے ثابت ہوتا ہے

नातिक्रामति = نہیں اُلنگھن کرتا ہے (کوئی کام اس کے بغیر نہیں ہوتا)

तस्य असौ = اُس کا وہ =

धाता = سہارا دینے

जागरवत् = جاگرت کی طرح (میں زور رہتا)

स्वप्नेऽपि = سپنے میں بھی

جو پہلے سے ارادہ ہو अभिमतानेव अर्थान् = من پسند چیزوں کو ہی
جو من میں ہوں - اُن کو

102

प्रकाशयति = پرکاش کرتا ہے

न तस्य = نہیں ہے اُس کا وشیک स्वप्नदायी: = جو سپنوں میں بادشاہ بنتے ہیں

سپنا؟ स्वतन्त्रेयरा = یہ سواپنے کی سوتنترتا سے بنا کر
प्रवर्तमाना: = برتے ہیں

सर्वकृत्तत्वलक्षणा = سروکرترتو لکشنا کو دیں ٹکش

स्वशक्ति = اپنی شکتی کا

پرتی بندھ کو پرکٹ نہیں کرتے ہیں

प्रतिबन्धम = اسکے پرتی بند - رکاوٹ

उद्भावयन्ति = پرکٹ کرتے ہیں (نہیں)

असंसारित्वात् = کیونکہ یہ اسمساری ہیں

किंतु = [illegible] स्वतन्त्र: = جب سوتنتر ہے

स्वशक्त्या यथेष्टं = اپنی شکتی سے اسکی اِچھا کی
तान् = ان کو
सृजति = اُپجاتا ہے

102/103.

यथा आह भर्तृहरि = یہی بھرتری ہری نے کہا ہے

" प्रविभज्यात्मनात्मानं सृष्ट्वा भावान् पृथग्विधान् ।
सर्वेश्वरः सर्वशक्तिः स्वप्ने भोक्ता प्रपद्यते ॥" "

اپنی ہی تقسیم کر کے اپنے آپ سے (اپنی اچھا سے) اپنے سنکلپ سے اُپجا کر بھاؤں کو
الگ الگ سب کا ایشور ہے۔ یہی سپنے میں بھوگتا بنتے ہیں بھاؤں کو بھوگتا ہے۔

इति एतत एव = اس طرح یہی بات स्वप्नस्वातन्त्र्यमेतत् سپنے کی سوتنترتا

इत्युक्तम = کہا گیا ہے (یہ پہلے بول کر بتایا ہے)

तस्य = اس پرش کو स्वप्नजागरयो = سپنے اور جاگرت میں

विशेषो न = کوئی فرق نہیں ہے अस्ति

इति तमसावरणा = اس طرح تم کا پردہ निर्भेदः = ابھید کا نا
آورن کا

स एव उक्तः = یہی کہا ہے

پھر दर्शनाद्य प्रहेता = جس کے درشن وغیرہ کا نتیجہ ہے जनित = اس سے پیدا ہوا ہے

अन्वदिशत्र = بتلایا स्वमाहात्म्य निरोधः = اپنے مہاتمیہ کا نرودھ

तमः = یہی تم ہے - آورن

103

तेन वरणं = اس ڈھکنے سے स्थगने →

→ स्वभाव तिरोधाने = اپنی اصلی حالت کو چھپا دینے سے ... ڈھکنا

तस्य निर्भेदो = اس کا کھل جانا

15/2 → प्रसन्न = صاف निर्मल = روشن

वैभव = عظمت اس کی شان

प्राभिव्यक्ति = ظاہر ہونا

वशात् = اس کی وجہ سے

کھولنا × विना प्रा: = بغیر اس کے کھولنا

सा हि = وہ तस्यामवस्थायाम्

'اس حالت میں ظاہر ہونا' = प्राविर्भवति

व्याख्यातम् इतत् = اس کی تشریح کی گئی ہے

वृत्तौ पृथक् पृथक् = الگ الگ

" यथा ऽस्य अनभिव्यक्तस्वस्वरूपस्य "

جیسے اس کے نہ ظاہر کئے سروپ سوشت کو

इत्यादिना तथा = وغیرہ سے

" स्वप्ने ऽप्यभीष्टार्थानेव पश्यति "

اسی طرح سپنے میں بھی چاہے ہوئے ان ہی چیزوں کو دیکھتا ہے ۔

इत्यादिना ग्रन्थेन = وغیرہ گرنتھ سے

अथ = اب پھر इवमविध = اس قسم کے समाधि व्युत्थान मात्रात = سمادھی کے لحاظ سے

संसारि समानतां = سنساری کے ساتھ برابری کو

سنساری جیسا (برابری) ... کو

योगिनः = یوگی کو

नित्य उक्ततो = ہمیشہ کی ... کو प्रतिपादयन् = ثابت کرتے ہوئے / द्रढयिताम

आह = کہتے ہیں

अन्यथा तु स्वतन्त्रा स्या-
त्सृष्टिस्तद्धर्मकत्वतः ।
सततं लौकिकस्येव
जाग्रत्स्वप्नपदद्वये ॥५॥

103/104

अन्यथा = نہیں تو دوسری طرح تु = لیکن स्वतन्त्रा = پرسونتر تا

स्यात् = ہو سृष्टि = سرشٹی

तत धर्मिकत्वतः = اس دھرم والا ہونے سے

सततं = ہمیشہ लौकिकस्येव = دوسرے پرش کی طرح

जाग्रत्स्वप्नपदद्वये = جاگرت سپن دونوں پدوں میں

" अन्यथा तु तु " → उक्तात्प्रकारात् अन्येन प्रकारेण = جو کہے ہوئے طریقے سے دوسری طرح

सर्वकर्तुः = سب کے کرتا ہو

स्वतन्त्रस्य = سوتنتر کے

परमेश्वरस्य = پرمیشور

एकस्य = ایک کے مैमव = بڑی (ایکتا بڑی)

उक्तं = کہا ہوا जगतकार्यम् = جگت کارج =

इति = یہ प्रतिपत्त्यभावरूपेण = جانا نہیں اس روپ سے

वर्तमानस्य = پرہونے آئی کی योगिनो

यوگی کی
"जाग्रत्स्वप्नपदद्वये" "جاگرت اور سپن پد تعلق" →

जागरस्वपद द्वायो = جاگرت اور سواپن میں

"तद्धर्मिकत्वत:" → सर्गगुणात्मकत्वात्

= سرشٹی گن سے ہونے سے ہی

"सृष्टि" = "سرشٹی" → नानाभावनिर्मिति:

= نانا پرکار بھاونا کا ہونا - بنانا

"सततम्" = ہمیشہ → आत्मतत्त्वसंविद् उदयात्

آتم تتو آتم سوروپ گیان کا اُدے

"स्वतन्त्रास्यात्" آپ ہی سے سوتنتر

→ वास्तवेन = سچ مچ کی स्वतन्त्रस्वात्म سوتنتر ہو جاوے تو

मात्र
कर्तृत्वेन = کرتا ہونے کا अपरामृश्यमाना

= اگر نہ پرامرش کرنے میں آتی ہے = सती

विचित्र = نانا پرکار विभ्रम = بھرم بھرم کا دینے والی दान =

دان
स्वच्छन्दा = خود اپنے ارادے سے دُرنِوار تاٹک

کو

सामर्थ्यप्रसरा भवेत् = سامرتھیہ پرسر ہو جاتی ہے

कस्येव = کسی کے ہی ، "लौकिकस्येव"

سنساری کے =

→ संसारिणो लोकस्य यथा = سنساری لوک کے

इदमत्र हि तात्पर्यं = یہ اس میں تات پری ہے

जागरा स्वप्न लक्षणे पदद्वये = جاگرت سپن لچھن دو پدوں کے

सर्गे स्वभावे = سرگ سوبھاو (پیدائش) میں

तत्र हि ज्ञान ज्ञेय भावेन : ان دونوں میں نیز ہے

= گیان گیے بھاو سے

पारमेश्वरी शक्तिः = پرمیشور کی شکتی स्थितिः = موجود ہے

प्रतिपादिता = بیان کی ہوئی ہے (یعنی وہ دونوں شکتی ہے) (شکتی کے دو روپ ہیں)

तादृशि = ویسے ہی परस्मिन = اسی

द्वयात्मके पदद्वये = دونوں روپ والے دو پدوں میں

यो योगी = جو یوگی यथोक्त संवित्ति समाधान

والا ہے یوگی جو ساتھ سمادھان رہتا ہے =

परित्यागात् = اُس کے چھوڑنے سے — यदि = جو

उत्थितः = اُٹھا ہوا ہو — तस्य सर्वथा स्यात् = اُس کو ہر طرف سے

स्वतन्त्रे सर्वकर्तरि = سو تنتر وہ سرو کرتا — اس پر

स्वात्मनि سو آتم میں

सुव्यवस्थितस्य (اچھی طرح ٹھہرا ہو) =

९ सृष्टिस्वभावं = سرشٹی سوبھاؤ کو — तत्पदद्वये = ان دو پدوں

शक्तिप्रतिबन्धाय = شکتی کی رکاوٹ کے لئے

न प्रभवति نہیں پیدا کرتی ہے

यस्य = جس — ततः = اُس سے — अन्यथा स्यात् دوسرا ہو جاوے

स = وہ लोकवत् = دنیا کی طرح

निजयैव = اپنی ہی — भावसृष्ट्या = بھاؤ سرشٹی سے (پیدا کرنے سے)

परवशीक्रियते (اور کے بس میں) کیا جاتا ہے

104 इति नित्ययुक्तेन = اس ہمیشہ ملے ہوئے سے

योगिना = اس یوگی نے भाष्यामि = میں بتاتا ہوں

इत्यपृष्टः = بن پوچھے

तदेतत् = وہی یہ

" अन्यथा स्वरूपस्थित्यभावे "

دوسرے پر اپنے روپ میں ٹکنا نہ ہوگا

इत्यादिना व्याख्यातम् = اس وغیرہ سے بیان کیا ہے

इतत् वृत्तौ اسی سے وہ ورتی میں

اس وقت کی بات - / گزری ہوئی / ہونے والی / [illegible] / [illegible]

इदानीम् = اب प्रतीत = گزرا ہوا

अनागत = آنے والا व्यवहित = چھپا ہوا - دوری کا / درمیان میں

विप्रकृष्टादि = دور ہٹے ہوئے وغیرہ वस्तुविज्ञानम् = وستو کا جاننا

(ایشور کی بیوی)

ईव संविदा सुलभम् = اسی طرح سمجھ سے آسان ہے

इति युगलकेन आह = اس جوڑے سے کہا ہے

105

यथा ह्यर्थोऽस्फुटो दृष्टः
सावधानेऽपि चेतसि।
भूयः स्फुटतरो भाति
स्वबलोद्योगभावितः॥६॥
एवं यत्परमार्थेन यत्र येन यथा स्थितम्।
तत्तथा बलमाक्रम्य न चिरात्संप्रवर्तते॥७॥

यथा = [illegible] हि = [illegible] ~~कस्यचित्~~ = [illegible] अर्थः [illegible] अस्फुटो = [illegible]

दृष्टः = [illegible] सावधानेऽपि [illegible] चेतसि = [illegible]

भूयः = [illegible] स्फुटतरो भाति = [illegible]

स्वबलोद्योग = [illegible]
भावितः [illegible]

एवं = [illegible] यत = [illegible] परमार्थेन = [illegible]

यत्र = [illegible] येन = [illegible] यथा = [illegible]

स्थितम = [illegible] तत् = [illegible] तथा = [illegible] बल = [illegible]

आक्रम्य = [illegible] न = [illegible] चिरात = [illegible]
संप्रवर्तते ([illegible]) = [illegible]

"यथापि" = جیسے کہ بھی   कस्याचित्: = کسی کو

"सावधाने" = دھیان سے → तदर्थादि दक्षता

[ہونا چاہئے جیسے سادھن میں ہوتا ہے] (جو دیکھا نہیں ہے) [illegible]

= اس کو دیکھنا   निविड = گھنا

(گھیرا) ہے

[illegible] (ہے ([illegible]) = [illegible] प्रयत्नादि

[illegible]

(اپنی [illegible]) "चेतति" = [illegible]   सति = [illegible]

भीमीति = [illegible] इष्टमात्रो [illegible] ([illegible])

"प्रथी: = [illegible]   प्रस्फुट: = [illegible]

भाति = [illegible] ← प्रथते

"भूय:" = پھر → अनन्तरे = [illegible]

"स्वबलोद्योगभावित:" [illegible]

[illegible]

→ स्वस्यात्मन: सर्वज्ञस्य बलं सामर्थ्यं ज्ञात्वादि लक्षणा

(شکتی) [illegible] = اپنے آتما [illegible]

[illegible]

[illegible]

Margin notes:

[illegible]

[illegible]

[illegible]

جو तदा = اس وقت "उद्योगः" = کوشش ← उद्यमो

निविडत = گھنا پن، اَवधानतया = دھیان سے

दर्शनोत्साहः = دیکھنے کا اور شوق تेन = اس سے

"भाविता" → लक्षितः सन् = ~~[illegible]~~ [illegible]

جو "स्फुटतरो भाति" (صاف تر) [illegible]

→ प्रत्यभिज्ञायमान [illegible] निर-अवशेष/विशेष

([illegible]) [illegible] =

جو सोऽयम् = وہی یہ प्रथते = ہے [illegible] — [illegible]

इत्युपमान वाक्यम् = اس طرح [illegible] والا جملہ

अस्येदं तात्पर्यं = اس کا یہ مطلب ہے

यस्य कस्यचित् द्रष्टुमभीप्सोः جس کسی کو دیکھنے کی [illegible]

प्रभो [illegible]

भगिति = [illegible] विस्फारितमात्र चक्षुषा

[illegible] =

न सम्यक् = ٹھیک طرح نہیں दृश्यताम् = دیکھی جاوے

आपद्यते = ہوتی ہے पुनः = پھر

द्वारान्तर = دوسرے ذریعہ سے तद्द्वारागत तस्यै = اسی ذریعہ سے آئے ہوئے

तथैव = ویسے ہی त्यक्त्वा = چھوڑ کر निक्षिप्त = پھینکا

उपेक्षास्य = بے پروائی स्फुटतरः = بہت صاف

प्रकाशते = ہوتا ہے

तत्र को हेतुः? = اس میں کیا وجہ ہے

न हि = نہ तेन = اس दृश्यतीति = دکھائی دیتا ہے

विप्रोषदर्शन साधनं = [illegible] किंचिदाक्रियते = کچھ کیا جاتا ہے

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तेन = اس سے   तात्त्विक = [illegible] अनुप्रवेश एव
स्वभाव [illegible]

[illegible]

तस्य संजायते = [illegible]

यत बलस्पर्शात = جس بل کے سپرش سے   तस्य = اس کو

सोऽर्थो = وہ چیز   यथात्म्येन [illegible]

प्रथते [illegible] ([illegible])

ततः = اس سے   स्वबलोद्योगमात्र [illegible]

[illegible] सर्वार्थप्रकाशन साधने = سب [illegible]

सर्ववेदिनो = سب [illegible]

न अन्यत् किंचित = اور کچھ نہیں

एवं विध अर्थप्रकाशनं = [illegible]

[illegible]

सर्वप्राणिसाधारणमपि = سب [illegible]

प्रबुद्धस्य योगिन एव = صرف [illegible]

प्रत्यवमृश्यमानं सत् = صرف [illegible]

न तथा प्रकाशते = ایسی چمکتی نہیں ہے

न अन्यस्य = نہیں دوسرے کسی سنسکاری کی   मायातिमिर-

= مایا اندھیرے سے ترسکار کیا ہوا - دبایا گیا   तिरस्कृत

सम्यग्दर्शनस्य = اچھی طرح دیکھنے والے

نہیں ہوتا ہے

इति = ایسا योगीस्व = یوگیوں کی آپ अनेन न उपदेशेन

= اس اپدیش سے

स्मायते = سمرن میں آکر "एवम" = ایسا

→ इत्याद्युपमेयं = ان وغیرہ وغیرہ वाक्योक्तेन =

اوپر کہے

यथा हि = جیسا کہ

अस्फुट दृष्टौ = نہ ہرگز دکھائی دیا अर्थः = پدارتھ

स्वबलमेवाक्रम्य = اپنی طاقت پر

स्फुटतरं प्राशते = ہر طرح سے چمکتا ہے

एवमग्रेनैव = ایسا ہی। उपमानवाक्यो तीन प्रकार के

تشبیہ والا فقرہ - تین قسم کا ہے =

स्वस्वभावसामर्थ्यम्

'बले' = بل → سوبھاو کا سامرتھ

اس کو 'आक्रम्य' = پکڑ کر, दिदृक्षाक्षणो

= دیکھنے کی خواہش کا وقت - اس میں

तत्प्रभेदेन = اس کے فرق سے। प्रादिष्ठायं = معلوم ہوتا ہے

योगिनः वर्तमानस्य = یوگی کی موجود ہونے والی

"तथा" = ایسا ہی। तेनैव = اسی طرح سے

तत्तत् अवस्था = وہ وہ حالت

आकार = شکل صورت देश = وطن

कालादि = وقت وغیرہ अविसंवादितः = اس کے مطابق

तेनैव प्रकारेण = اسی طرح سے "संप्रवर्तते" = جاری رہتا ہے

→ सम्यगभिव्यक्तिमेति = اچھی طرح ظاہر ہو جاتا ہے।

सम्यक = اچھی طرح   न्यायतया = ٹھیک طرح سے

अभिमुखी भवति = سمجھ آتا ہے - سامنے آتا ہے

किं तत् वस्तु? = کیا وہ شئے

"परमार्थेन" = بطور حقیقت → तत्त्वतो = اصل میں درحقیقت

"यत्" वस्तु = جو شئے   गवादि = گائے وغیرہ

~~यादृशेन~~ यथा = جیسے → येन अवस्थात्मना प्रकारेण

"येन" = جس दाहपाकविशिष्ट सास्नादिमत्ता — جس برتاؤ سے جیسے خاص سینگ وغیرہ اوصاف سے

आकारेण = اس شکل سے

"यत्र" = جہاں   यस्मिन् - جس میں   व्यवस्थित = جمع ہوا ہے

دور کی بات   विप्रकृष्टादौ = دور   देशे = جگہ میں

" " گزری   भूतादौ = گزرے ہوئے دوران   वा काले = یا وقت

" " ٹھہری ہوئی   स्थिते तत्तथा = ٹھہرا ہوا = وہ اسی طرح

संप्रवर्तत. برتاؤ میں آتا ہے

अयमत्र भावार्थः = یہی یہاں معنی کا خلاصہ ہے

अस्फुटेऽर्थे = نہ پرکٹ میں दृष्टे = دیکھا ہوا

तस्य = اس کو स्फुटतरावभासाय = پرکٹ کرنے کے لئے

सर्वज्ञस्वस्वभाव प्रभेदो = جب سروگیہ وہی سوامی کا جو
اپنے ساتھ اپنے سوبھاؤ کی

यः = جو सर्वस्य = سب کا कस्यचित् = کسی کا

अप्रयत्नेन = نہ کوشش سے उत्पद्यते = پیدا ہوتا ہے

प्रबुद्धः = جاگا ہوا، بیدار ہوا तत्परामर्शाभ्यासात् = اس کی وچار کے ابھیاس سے
(سروگیہ سوبھاؤ کی یاد کے)

از قسم بیان [illegible] / [illegible]

देशकालादि = دیش کال وغیرہ

व्यवहितानपि = اگر دور ہوں بیچ میں آئے ہوئے

यथाभिमतानर्थान् = جیسے چاہے ویسے معنی کو

तत्त्वतो जानाति = اصل میں جانتا ہے

इति = یہ ہی अबाधितायो = نہ بادھت ہونے والی युक्ती, स्थितयो / = حیثیت
= یہی سب معنی کا ہے

सर्वज्ञत्वादि गुण अभिव्यक्तौ = سروگیہ وغیرہ گنوں کی
ان کی پرکٹتا میں

अयमेव हेतुः = اس پریتی میں یہی سادھن ہے
(یہی ہیتو)

अत एवोक्तम् = اسی لئے یہ کہا ہے

"परिमित विषयमतीतानगत ज्ञाने न
किंचिदाश्चर्यं निरावरण स्वस्वभावत्वात् ॥"

"محدود (مجھ کو) آنی ہوئی وشے ہوس (کیا وہ ہے) گذرا ہوا - جو آنے والا وہ گیان
اس میں کچھ آشچریہ کی بات (گذری ہوئی یا ہونے والی کی بات ہونی) نہ جب نرآورن
سوبھاؤ کا جس وقت یہ خود ہی ہوتا ہے"

तस्यां हि दशायां = اسی دشا میں
देशकालाद्यनिरुद्धं = دیش - کال - آدی کی
جس سے پرچھن نہ تھا - محدود پایا تھا -
हे अप = رکاوٹ اس کی ایسی کوئی
رکاوٹ نہیں ہے (کال آدی کی)
स्वस्वभाववल अभिव्यज्यते
= اپنے سوبھاؤ کا بل پا کر ہی پرکٹ
ہوتا ہے

"अस्फुटऽर्थो दृष्टः" [illegible]

इत्युपलक्षणार्थम् = یہ مثال [illegible]

एतत् मन्तव्यम् [illegible]

[illegible]

तेन = اُس سے श्रुतादिष्वेवमेव = کان سننا [illegible]

= [illegible] योज्यम् = [illegible]

एतेन च = اس سے दृष्ट्यादेरर्थस्य = [illegible]

अस्फुटतर = [illegible] प्रयत्नविशेषावस्थायां
दर्शनाद्यर्थ = [illegible]

[illegible]

संपाद्यमानेन = [illegible]

प्रतिष्ठितस्पन्द = [illegible]

अनुप्रविष्टेन = [illegible]

सर्वेबुद्ध्यक्षाः = سارے [illegible]

व्यापारात्मक = [illegible] जाग्रत् अवस्थाश्रयः = [illegible]

परतत्त्वोपलब्ध्युपाय = پُرش کی اپلبدھی
کا اُپائے وغیرہ

प्रसङ्गात् = اس پرسنگ سے

प्रतिपादितो = سمجھایا ہوا →

वेदितव्यः - جاننا چاہیے (ایسی کتاب کو پڑھو)

व्याख्यातम् इतत् वृत्तिकृता ورتیکار

पृथक पृथक

" यथा किल दूरस्थित "

جیسے کہ دور رہ کر

وغیرہ ← इत्यादिना

" तथा तेनैव प्रयत्नविशेषेण. "

اسی طرح اس کوشش کی خصوصیت

وغیرہ گرنتھ سے ← इत्यादिना ग्रन्थेन ॥

10९

अथैतयैव = اسی سبب سے युक्त्या = یکتی سے क्षुत्तृषादि जयं (بھوک پیاس کی) = پر فتح پانا

प्रतिपादयितुं = سمجھانے کو आह = اس پر کہتا ہے

दुर्बलोऽपि तदाक्रमय यतः कार्ये प्रवर्तते।
आच्छादयेद्बुभुक्षां च तथा योऽतिबुभुक्षितः ॥ ८ ॥

दुर्बलोऽपि = اگر کمزور بھی ہو ततः आक्रमय = تب وہ ان پر قابو کر

यतः = جس سے कार्ये = کام کے لیے प्रवर्तते = کام میں لگ جاتا ہے / مشغول ہوتا ہے

आच्छादयेत् = چھپاتا ہے बुभुक्षां च = بھوک کو

तथा = ایسا ہی यः = जो अतिबुभुक्षितः = بہت ہی بھوکا ہو

"यतो" → यस्मात् हेतु = جس کارن سے [illegible] = کو →

→ सर्वकर्तृत्वस्वातन्त्र्य लक्षणं = سب کچھ کرنے کی آزادی / شکتی سے

सामर्थ्यम् = طاقت (یعنی طاقت) आत्मीय = اپنا / آتما کا आक्रम्य = قابو کر کر

اطلاق
اصول

→ पूर्वोक्तया युक्त्या = پہلے کہی ہوئی دلیل سے   तत्र = اس پر

अव्यतिरेकेण = نہ چھوٹنے سے — بغیر جدا ہوئے

स्थित्वा = ٹھہر کر (श्लोकादि)

اگر کمزور بھی ہو

→ असमर्थोऽपि सन् = کمزور ہو کر । अमीचित देह धातुत्वात् شریر دھاتو ہم سے نہیں

→ अ = اس وقت جب کمزور ہو

"कार्ये" = کام   भारोद्वहनादि → بھار اٹھانا وغیرہ   کوئی = कश्चित्

اس کام پر   व्यापारे = اس دھندے کو   "प्रवर्तते" = یہ دوسروں میں آتا ہے - شریک ہوجاتا ہے

→ क्रियाप्रधानो भवति = کام پر زور رہتا ہے - یعنی رہتا ہے

एतत् दृष्टान्त वाक्यम् = یہ بات درشٹانت ہے / اس سے

अस्येदं तात्पर्यम् = اس کا یہ مطلب ہے

यः = جو   परिकृष्ट = لاغر (کمزور)   कायत्वात् = شریر ہونے سے

ऽप्रशक्त = نہ طاقت سوش

एव संध्यादि = سندھیا آدی کو   व्यापारम् = اس دھندا کو

ऽप्रारभमाण = شروع نہ کرنے والا

ऽभ्यासबलात् = ابھیاس کے زور سے   विषयान्तरे = دوسری شے پر

चलचित्ततया = چلائمان ہوئے چت کر

ऽपि अप्रशक्यं = ناممکن اگر چہ   व्यायामादिकर्म कर्तुं = ورزش وغیرہ کام کرنا

= کرنے پر   प्रभवति = سمرتھ ہوتا ہے

तस्य = اس کی   तथा = ویسے ہی

सामर्थ्योत्पत्तौ = اس سمرتھی کی پیدائش پر

प्राक् प्रतिपादित = پہلے کہی ہوئی سے
युक्त्या = اس طریقے

स्वभावबल [illegible] आक्रमणम् [illegible]

ऐके = ایک اکیلے کو वर्जयित्वा = چھوڑ کر

न अन्य = نہیں ہے किंचित् = [illegible] निमित्तम्

तत्तु = وہ تو यथेष्ट = من چاہا ہے

सर्वकर्तृत्वलक्षणं [illegible]

बलम् = بل आत्मतत्वस्य = آتما تتو کا

بر मायीय प्रति = [illegible] माया कर्ता = [illegible]

माया प्रतिबद्ध = [illegible] प्राप्तित्वात् [illegible]

[illegible] नियतकारणान्तर [illegible] अपेक्षा = [illegible]

नियत कार्य = [illegible] संपादनसामर्थ्यं

मन्यत

[illegible] = [illegible]

[illegible]

مگر ان کا — सोऽपि = وہ بھی इदम् प्रबन्ध = اس مسئلہ کو कर्तुं = کرنے प्राक्रमि

इत्थं = اس طرح विकलोत् = دشوار ہونے کی حالت میں

साद्दृश्याया = مشابہت کی حالت میں

اس لیے — तदेव = وہی प्रवलम्बमानः = سہارا لینے والا

तत्कार्य नलम संपादन = اس کام کو انجام دینا क्षमो भवति = اس کے کرنے کا اہل ہوتا ہے / ہو سکتا ہے

इति = اس لیے युक्तियोगिन एव = دلیل کے جاننے والے ہی

حاصل کیا — प्रतिपत्तिगोचरी भवति = سمجھ میں آتا ہے / جانا جا سکتا ہے

इतामेतो = اس بات کو दृष्टान्ती कृत्य = مثال بنا کر

ते प्रत्येव = انہی کی طرح इदं = یہ

दार्ष्टान्तिक वाक्येन = دارشٹانتک کے ذریعہ

उपादिश्यते = اس دارشٹانتک کا اپدیش کیا جاتا ہے

111/

यथा = جیسے دुर्बलोऽपि = کمزور بھی बलवत्संपाद्य

زبردست کی طرح جو کام ہو اسکو انجام دینے پر = कार्यसंपादनसमर्थः

جیسے स्वस्वभाव बल = اپنی طبعی قوت جو ہے آक्रमणादेव भवति (حملہ کرنے سے ظاہر ہوتی ہے)

"तथा" — तेनैव प्रकारेण اسی طرح सर्वकार्यसंपादनस्वतन्त्रं

سب کاموں کے انجام دینے میں مختار =

स्वबलमाक्रम्य = اپنا زور دکھا کر

तत = جو स्वशक्तितया = اپنی طاقت سے

आधिष्ठाय = قابو کر

'योऽतिबुभुक्षितः । جب سخت بھوکا ہو →

→ अत्यर्थं भोजनेच्छाविष्टः = سخت کھانے کی خواہش میں آیا ہوا

وہ स = وہ तांबुभुक्षाम् = اس بھوک کو

'आच्छादयेत्" = چھپائے ← स्थगयेत्

111/

→ त्रि व्यक्कुर्यात = [illegible] नित्यतृप्ताकृतस्वरूप

[illegible] = सामर्थ्य प्रथनात्

→ एतत्राद्य = [illegible] एतद्व्यवहारकारणामेव

क्षुन्निवृत्त्यादिकार्यम् [illegible]

इति नियतिप्राकृप्रतिबन्ध = [illegible]

विदलने सति [illegible]

प्रत्यन्तं = [illegible] तां = [illegible]

तिरोभावयते = [illegible] नित्यतृप्तस्व

स्यात् इत्यर्थः [illegible]

दुर्बलः क्षीणधातुरपि ॥

[illegible]

इत्यादिना व्याख्यातम् इतत् वृत्तौ ॥

111/112

इत सर्वं = ہر ایک پرتھک = الگ سर्वज्ञत्व सर्वकर्तृत्वादि

گن = سارے جاننے والا ہونا سب کچھ کرنے والا ہونا وغیرہ گن گُण

کرنا اور پراپت کرنا یاد کرنا گا ہ کرنا کیسے وغیرہ वस्तु व्यत्यय उपाय उपपत्ति

प्रतिपाद्य = سمجھا دینے کو

पुनर = پھر एको = ایک ہی उपपत्ति =

برہان - جاننا

निदर्शनेन = دکھلانے سے ता: = وہ

प्रतिपादयितुम سمجھانے کو آہ = کہا

1 अनेनाधिष्ठिते देहे यथा सर्वज्ञतादय: ।

तथा स्वात्मन्यधिष्ठानात्सर्वत्रैव भविष्यति ॥६।

अनेन = اس - اس کا अधिष्ठिते

= اس کو دھر سے

देहे यथा جس طرح

= دیہہ میں جسم میں سर्वज्ञतादय:

سارے گن اس میں ہوتے ہیں =

तथा = ویسے

स्वातन्त्र्य = خود مختاری   अधिष्ठानात् = ٹھکانے سے

सवित्र = سورج   इव = کی طرح

भविष्यति = ہوگا

"अनेन" = اس سے   आत्मना = آتما سے → चेतयित्रा

= چیتنی سے

'अधिष्ठिते' = ٹھہرا ہوا → अध इति प्रतिपत्त्या

'اسم' کا ہونے سے جو ٹھہرا ہے = अध्यासिते

"देहे" شریر میں शरीरे "सवित्रादयः" = سورج وغیرہ سب

ہوتی ہیں शरीर आश्रयाणि شریر کے آشرت سب میں सर्वाणि ज्ञेयानि कार्याणि च

جاننے اور کرنے کے لائق ہونے والے

तेषु ان شریروں میں ज्ञाता = جاننے والا

ज्ञातृत्वमादि

एषां = ان شریروں کا   तान्येव = وہی   कर्तृत्वादयो धर्माः

= کرتا ہونا وغیرہ دھرم

यथा = جیسا   सवितुः = سورج کا   स्थिताः = ٹھہرے

इति दृष्टान्तवाक्यम् = یہ مثال والا جملہ

अस्येदं तात्पर्यम् = اس کا یہ مطلب ہے

यत् यत् = جو جو ; आत्मा = آتما
(جس جس کو)

अहम् इति प्रतिपत्त्या = (میں ہوں) ماننے سے ; अधितिष्ठति = کھڑا ہے

तत् तत् = وہ وہ ; अस्य शरीरम् = اس کا شریر ہے
(وہ وہ جو اسکا شریر ہے)

तत् आश्रयं च = اس کا آشرے ; सर्वमयं = سب ہے

स्थूलं = استھول ; सूक्ष्मं = سوکشم

سمجھنا ज्ञेयं कार्यं च = جاننے یا کرنے ; जानाति च करोति च
جانتا ہے اور کرتا بھی ہے

इत्यनेन = اس دلیل سے ; निदर्शनेन

"तथैव" तेनैव प्रकारेण = اسی طرح اسی پراکار سے

अहंतया = اہنتا سے (میں پنا)

देहाधिष्ठानवत् = جیسے دیہ پر بیٹھا ہے

112/113

स्वस्वभाविन

کلمہ؟ स्वात्मनि → = اپنے میں یعنی صفا

"न दुःखं न सुखं यत्र , جہاں نہ دکھ ہے نہ سکھ

इत्यादि उक्त लक्षणों = جن کا بیان ہو چکا ہے دेहादि व्यतिरिक्त

سوئی → देह = وہ جو دیہ سے جدا الگ ہے

विप्रकृष्ट = دور شدہ अद्वय = اَدوئے

चिन्मात्र वपुषि = جس کا محض علم ہی صورت ہو

"अधिष्ठानात" = اُس پر مقرر ہوا

→ अहं तया अध्यासनात् = یعنی اُس پر اپنا تصور کرنا ہو

एवं = ایسے شरीर अशय = شریر کو آشرے

समस्त = سب ज्ञेयकार्य वस्तु = جاننے کے لائق وانتہا

ज्ञातृत्वादिवत = جاننے والے کی طرح

"सर्वत्र" , سب جگہ →

→ सकलेष्वपि भुवनेषु = سب بھونوں میں = योगिनः

सर्वज्ञातादयो = سب کو جاننا

= علم کی

113

भविष्यन्ति = [illegible]

→ प्राप्य = [illegible] प्राभिव्यक्ति [illegible]

यास्यन्ति = [illegible]

परस्पर = آپس میں [illegible] व्यतिरिक्त = الگ

देहमात्र प्रतिभाव लक्षण = [illegible]

प्रतिबन्ध = [illegible]

भङ्गाद = [illegible] ٹوٹ جانے سے

प्रत्याचिन्मात्र = [illegible]

स्वात्मप्रतिष्ठित = اپنا سہارا

प्रकारस्य = [illegible] (روشن)

योगिनो = [illegible]

निर्विघ्नाः = [illegible] بغیر

सर्वज्ञतादय: = [illegible]

सर्वत्र प्राभिव्यज्यन्ते एव [illegible]

इत्य प्रर्थः = [illegible]

"अनेन आत्मस्वभावेन"
[Urdu gloss, illegible]

इत्यादिना व्याख्यातमेतत् वृत्तौ ॥

एवं = [Urdu gloss] व्याधि = روگ वली = [Urdu gloss] पलिताद्या = سفید بال وغیرہ =
उद्दिश्यन्ते = [Urdu gloss] उपपत्तिः = [Urdu gloss]
पाठ = [Urdu gloss]

ग्लानिर्विलुरिठकादेहे
तस्याश्चाज्ञानतः स्मृतिः
तदुन्मेषविलुप्तं चे-
त्कुतः सा स्यादहेतुका ॥२०॥

ग्लानि = [Urdu gloss] विलुरिठक = [Urdu gloss]
देहे = [Urdu gloss] तस्या = [Urdu gloss]
अज्ञानतः = [Urdu gloss] स्मृतिः = [Urdu gloss]
तत = [Urdu gloss] उन्मेष = [Urdu gloss] विलुप्त = [Urdu gloss]
हेतुका = [Urdu gloss] चेत = [Urdu gloss] कुतः = [Urdu gloss] सा = [Urdu gloss] स्यात = [Urdu gloss]

113/114 "ग्लानिः" → मान्द्यादि = [illegible]

जनिता = [illegible] हर्षग्लानिः = [illegible]

सा = [illegible] "देहे" → शरीरे = شریر میں

'वि' [illegible] → धातु बलवर्ण तेज शक्ति दीनता

[illegible] = हेठन हत्री

[illegible]

"तस्याश्चाज्ञानतः" [illegible]

→ प्रतिपादि = [illegible] तत्त्व = [illegible]

[illegible] अवगमा = [illegible] प्रभावात = [illegible]

[illegible] 'स्मृति' → सरूप – [illegible] प्रवृत्ति = [illegible]

'तत' → अज्ञानम = [illegible] 'उन्मेषविलुप्तवेत = [illegible]

→ उन्मेषणा = [illegible] वक्ष्यमाणेन [illegible]

115 → स्वभाव प्रलोक विकास से न = [illegible]

विलुप्त = [illegible] → विछिन्न = [illegible] निरमूलितो → नीत = [illegible]

यदि = اگر   तदा = تب   प्रसौ ग्लानि = [illegible]

अहेतुका = [illegible] → कारणरहिता = [illegible]

कुतो भवेत् = کیوں ہو

→ न भवेदेव = [illegible]   निर्निमित्तस्य उत्पाद प्रभावात्

بے سبب - [illegible] =

परिणाम नाम = [illegible]   जन्म – परिणाम – वि = [illegible]

विवृद्धि = [illegible]   क्षय = [illegible]   विनाशात्मक = [illegible]

विकार = [illegible]   विरहित   निर्विकार = [illegible]

स्वस्वभाव = [illegible]   प्रत्याभिज्ञा = [illegible]   नात

जन्मादिविकार = [illegible]   प्राधिकरण = [illegible]

[illegible] कलेवरादौ = کلیور آدی شریر [illegible] آتم अभिमानः
= آتما کا ابھیمان ہوتا ہے۔ یعنی [illegible]

यस्मिंश्च सति = جس کے ہونے پر [illegible]

अप्रबुद्धो जनः = ابدھ جن یعنی بے سمجھ لوگ [illegible]

तत् विकारात् [illegible] جنمادین [illegible] जन्मादीन

आत्मनि = آتما پر आरोपयन् = آروپ کرکے

یعنی ग्लान्या विलुठ्येत [illegible]

यस्तु वक्ष्यमाणोन्मेष = [illegible]

परिशीलनाद् = [illegible]

आविर्भूत = ظاہر ہوا सत्यात्म प्रत्ययः = [illegible]

तस्य कुतः ग्लानिः = اس کو کہاں سے [illegible] ہو سکتی ہے

ہونا چاہیے

इति मुख्यं फलं = اس سے بڑھاپا جو ہوتا ہے

وغیرہ سहजानन्द ज्ञानिस्वरूपाया = کی آنند و شگفتگی والا — ग्लानेरभाव

= تھکاوٹ نہیں ہوتی — = جی اُکتانا

= اُکتاہٹ و تنگی کا — (یعنی تھکاوٹ نہیں ہوتی)

نہیں آتا ← गौरास्तु = (بڑھاپا نہیں آتا) — वली = wrinkle

पलिताद्य = بالوں کی سفیدی وغیرہ — अभाव: = اسکا نہ ہونا

यतः = جس — तदा = تب — कुतः = کس لئے

ग्लानि = دکھ و تھکاوٹ — कारणाभावता — جب تک فکر ہو

भवेत् = ہو سکتی ہے

इति व्याख्याय = یہ بیان کرکے

पुनः = پھر — श्री वृत्तिकृता = ورتکار نے

व्याख्यातम् = بیان کیا ہے

"अनेनैव कारणेन वली पलिताभाव: शरीरदार्ढ्यं च योगिनाम्"

اسی کارن (اسی وجہ سے) سے بڑھاپے کے آثار کا نہ ہونا، جھریاں اور سفیدی بال نہیں ہوتے ان یوگیوں کا

अप्रथ = [illegible] उन्मेषय = انمیش کا ३.

ग्लानिकारता भूत = ملال کا باعث بنی ہوئی अज्ञान = اگیان کا

विनाप्राह्रितोः = اس اگیان کو دور کئے بغیر (یعنی [illegible])

स्वस्वरूप प्रतिपादनाय = اپنے اصلی سروپ کا [illegible]

अप्राह = کہا ہے

एकचिन्ताप्रसक्तस्य यतः स्यादपरोदयः
उन्मेषः स तु विज्ञेयः स्वयं तमुपलक्षयेत्॥२२॥

एकचिन्ता प्रसक्तस्य = ایک خیال پر لگے ہوئے यतः = جس

स्यात् = ہوتا ہے अपरोदयः = کچھ لمحوں میں جیسے اور کوئی (یعنی بیرونی کا جاننا)

उन्मेषः = وہی ہے انمیش स तु = وہ

विज्ञेयः = جاننا چاہیے स्वयं = آپ ہی तम = اس انمیش کو

उपलक्षयेत् = پہچان کر جانا چاہیے

"सतु" وہ تو → स पुनर उन्मेषः = وہ پھر امیش

→ स्वस्वभाव प्रकाश आभास = [illegible] "विच्छेयो",
विकासे। [illegible] [illegible] =

→ बोद्धव्यो लक्षणीयः = پرکھنا چاہیے کौसो? کونسا؟

'एकचिंता प्रसक्तस्य = ایک چنتا پر لگے ہوئے → एकस्यां = ایک ہی

चिन्तायुक्तः = فکر میں → दृश्यमान دیکھنے میں

स्मर्यमाणा = سمرن میں آیا ہوا तत तत् वस्तु = اس وستو کو

اس کی ذات میں رنگا ہوا

उपरक्ते = اس میں رنگا ہوا ज्ञाने = گیان پر प्रसक्तस्य = [illegible]

→ एकाग्रस्य = یکاگر بنا ہوا

चिन्तयितुः = سوچنے والا 'यतो → यस्मात् = جس سے

चिन्त्याभास = سوچنے کا آبھاس ,पुनःउपरक्त ज्ञानात्मनः
[illegible]

स्वस्वभाव = اپنی ذات
प्रकाशात् = [illegible] कारणभूतात्
کارن بنا ہوا =

"अपरस्या" = دوسری चिन्तायाः = چنتا کا

پیدا شدہ ہوتی ہے اس میں لگا رہ کر دوسرا کوئی پیدا علم کرتی ہے یعنی شے کو معقول کرو اسی کا گیان کو کہا
نہیں کہتے ہے - ادھم پر ہے - یہاں مجھ کو جانتا ہے کہ "میں ہی ہوں" رسائی نہیں کا قائل کرنا اس میں باقی
- ہے

گ्राह्य ग्रालम्बिनो = شئی کے جو شکل (جو ہے اسکے پیدا کو) ज्ञानान्तरस्य
= دوسرے گیان کا

"उदय" = उत्पत्ति: = پیدا ہونا (اسکی) स्यात्

ते च = اور کی योगी = جوگی ' स्वयं ' آپ ہی =

→ ग्रात्मनैव = آپ ہی (آتم) उपलक्षयेत् پہچان کرے

९ گیان کو परमार्थी परमेश्वर: = سچ کا پرمیشور

सर्वतो विवित्त: = ہر طرف سے پرکٹ ہے

परमकारणो = ہے آخری سبب پرم کارن پرमात्मा = پرماتما

ہے کہ اयमहमास्मि = "میں یہ ہوں" इति प्रतिपद्यते
اس طرح کا جانا جاتا ہوں

न हि तस्य = کوئی اسکا نہیں ہے शब्दादिवत्
[جو کہ شبد وغیرہ کی طرح ہے] جیسا کہ شبد آدی کا =

سے کہ شبد آدی ہے اس کی یदन्तया = پرتیا [ہے جو کہ پیدا ہوتا ہے
- ہے جو کہ ظاہر ہو پرکٹ = ظاہر ہوتا ہے کسی طرح نہیں ہے]

स्वस्वरूप उपलक्षयितुं प्राक्यं .

کیوں स्वसंवेदन संविदित = اپنا ہی جو جاننا ہے - اسے جانا جاتا ہے
स्वभावत्वात् (اپنا ہو جانا کا جان لینا ہے) سو بھاؤ سے

तस्यैव विमर्शस्य = اسی کے مرشہ کو । नित्योदित = نت اُدی ہونے کو

उपदेश्यं प्राप्ति = اپدیش پر । स्यापि तदानीमेव = اسی وقت کے

अभिव्यज्यमानत्वात् = ظاہر ہونے کے ہوتا ہے उन्मेष प्रकादेन

(یعنی اسی لمحے میں ہی) دیا گیا اسے نام = व्यपदेशः कृतः

यस्तु = जो इव मन्यते = مانا جاتا ہے جیسا

यस्यो चिन्ता = اس فکر سے । अपराचिन्तोदयः
یا सत्याम् سچ ہوتے ہوئے = دوسری فکر کا اٹھنا ہے

सा चिन्तैव = وہ فکر ہی । चिन्तान्तर = دوسری فکر کا ہونا
कारण = اسی کا ہے

न अन्तरालवर्ति = نہ اندر رہنے والا

جو دوسری چیز وस्तु अन्तरे = دوسری چیز میں । विद्यते = ہے

यत = जो चिन्ताद्वय = دو فکروں کا स्वरूप
سروپ کے بغیر व्यतिरेकेण
= اپنے سروپ کے

کیوں उपलक्षणीयात्मकं = پہچان والا ہے । द्वितीय चिन्ता कारणं स्यात्
= دوسری فکر کا کارن ہے

इति = ایسی
तं प्रति = اس پر

कारणभावेन = کارن بہاو سے
कार्यभावेन = کاریہ بہاو سے
च
अभिमतस्य = ابھیمت
पूर्वापरीभूतस्य = پوروا پری بہوت

चिन्ताद्वयस्य = دو چنتاؤں
एष संबन्धो = یہ سمبندھ
न सिद्धयति = نہیں ہوتا

अनुसंधातारं = انوسندھاتا
तृतीये = تیسرا
विना = بنا
(ایسے تیسرے کے بغیر (یہ چنتا اور چنتا)

पूर्वं = پہلے
कारणम् = کارن
अपरा च = دوسری
कार्यभूता चिन्ता = کاریہ بہوت چنتا
इति यो = جو
अनुसंधत्ते = انوسندھان کرتا ہے

यश्चासौ = [illegible] अन[illegible]वनीयो

چھُ [illegible] =

[illegible] अनसंधाता = انوسندان

[illegible] - सो = چھُ

अनुसंधेय = انوسندان [illegible] चिन्ताद्वय = [illegible]

व्यापक [illegible]

विप्रुद = [illegible] चिन्मात्र = [illegible]

स्वरूपः [illegible] = सविकारस्तात्मैव

= [illegible] چھُ उन्मेष = [illegible]

इत्युक्तः = [illegible]

अत एव वृत्तिकृता = [illegible]

व्याख्यातम् [illegible]

" चिन्ताद्वयान्ते व्यापकतया अनुभाव्यमानः

[illegible] انوسندان [illegible] }

[illegible] }

इदानीं = अब तत् तत् साधन विशेषाभिनिष्ठाना
ان مختلف ذرائع میں لگے ہوئے =

योगिनो یوگیوں کو प्रायशः = اکثر

याः प्राप्यफलतया = جو حاصل ہونے والے پھل کے طور پر

अभीष्टाः सिद्धयः = پسندیدہ سدھیاں ہوتی ہیں

ता = وہ सतत उद्यासा

یوگینو = یوگی کے (اصل مقصد) کی راہ میں رکاوٹ ہی ہیں

विघ्नपरम्परा एव = وہ رکاوٹوں کا سلسلہ ہی ثابت ہونے والی ہیں

इति उन्मेषाभ्यास प्रभावं = اس لئے اب اُنمیش کے ابھیاس کا اثر

प्रतिपादयितुमाह = بیان کرنے کے لیے کہتے ہیں

अतो बिन्दुरतो नादो रूपमस्मादतो रसः।
प्रवर्तन्तेऽचिरेणैव क्षोभकत्वेन देहिनः॥१२॥

अतः = اسی سے बिन्दु = بندو گیان अतः नादो = اسی کا دھیان ہے

रूपम = اسی کا سب روپ ہے / آتما کی

रस: = اسی سے سب رس کو لطف ہوتا ہے

पवर्तन्ते = پیدا ہوتے ہیں अविरसौव [illegible]

[illegible]

क्षोभकत्वेन = جب کھچاؤ میں ہو देहिनः = اس دیہ دھاری کو

(جب شکل میں ہو تو ہر ہر [illegible] اس میں آتی ہیں - جو حرف وغیرہ بنتے ہیں)

جس حالت میں وجود کی چیز باقی رہ جاتی ہے کھچاؤ میں ہے

अतः اس کو → अस्मात = اسی سے प्रतिपादितस्वरूपात = [illegible]

उन्मेषात = [illegible]

जागराद्य अवस्थागत = جاگرت آدی حالتوں کے सुखदुखाद्य
اور سکھ دکھ میں
آتما اندر ہوتا ہے سکھ دکھ آدی

अनुभवदशासु = تجربے کی حالتوں میں अविलुप्तेन

= نہ ہونے میں حاضر ہے

अवधानेन = سماوھان ہوتے ہیں

[illegible]

→ प्रतिक्षणा विनश्वर विचित्र परतन्त्र तुच्छरूपात्

= ہر لحظہ وہ فانی ہیں - نا برابر کی ہیں - مختلف ہیں - کمزور کمینی ہیں

[illegible] वेद्यवस्तुनो = جاننے کے لائق چیزوں کی वैधर्म्येण

[illegible] भाव्यमानात = [illegible] = [illegible]

सवीकाशीभूतात्

प्रपंचेण = [illegible]

= [illegible] → प्रपंचेन कालेन [illegible]

[illegible] एतानि सिद्ध विद्यानि [illegible]

क्षोभकत्वेन [illegible] → संतोष स्माया भि मानादिभि:

[illegible] = [illegible]

[illegible] चित्तव्युत्थाप = [illegible] - [illegible] = दाहिनो " [illegible]

नितराम = [illegible]

पनन्मूलितु = [illegible]

[illegible] देहाद्यहंप्रत्ययस्य

= [illegible]

योगिन: = [illegible]

"प्रवर्तन्ते" = پیدا ہوتی ہیں → प्रादुर्भवन्ति
ابھرتی ہیں

कानि तानि? = کون سے

"बिन्दु" " → भ्रूमध्यादौ प्रदेशे =
بھووں کے درمیان آدی جگہوں میں

ध्यानाभ्यास प्रकर्षे =
دھیان ابھیاس کی زیادتی سے

प्रवर्धमानो उत्तरोत्तर = آگے آگے بڑھتا ہوا

بڑھتی ہوئی بڑھتی   प्रसाद = برکت → तेजोविशेषो = خاص قسم کی روشنی

यो = जो. बिन्दुभेदा = بندو کے بھید جو کچھ ہیں

अभ्यासात् = اس ابھیاس سے

धारातत्त्वध्यायि नाम = دھارا تتو کا دھیان کرنے والوں میں

अभिव्यज्यते = ان کو پرکٹ ہوتا ہے

तथा = جیسا "नादो" = ناد →

वेत्रवत् = [illegible] नद्यो = ندیاں

धनी = [illegible] चित्र[illegible] = شبد

घन उप = [illegible] क्रमस्न [illegible]

सुक्षामी भावा = [illegible] ,पाभिव्यज्य मान् [illegible]

मधुमत्त = [illegible] मधुकर = [illegible]

ध्वनितानुकारी شبد [illegible]

स्वोच्चारितो = اپنے [illegible]

ध्वनिविशेषो شبد [illegible] =

ये = جو व्योमतत्त्व = [illegible]

,प्रभ्यासिन: [illegible] = [illegible] श्रावन्ति = سنتے ہیں

तथा = جیسا "रूपं" = روپ

→ सन्तमसाध्य = [illegible]

,प्रावरणाऽपि [illegible] सति

अमोघ = सफल

مگر तत तत दृश्य वस्तु आकार =
दर्शनं اس اس کو دیکھتی دستو ہے
= اسی شکل دیکھی

यत् = उ तेजस तत्त्व-पक्षानिक्षिप्त شیج پر کھڑا ہے

119 मत्तया = مرضی سے निरीक्षन्ते = دیکھتے ہیں

तथा = ویسا "रसो" = رس →
रसवत वस्तु विरहेऽपि = جو رس دستو میں
= اگر نہیں ہے تو अमृतास्वादो मुखे
= لیکن اس کو ادرشٹ ہو منہ میں ہوتا ہے

اور لाल = سرخ अग्र = آگ
= ٹبکا लम्बिका

अ धारणा निरते آکی دھارنا پر ہو گئے ہیں

ہر ایک میں अप्रतत्त्व ध्यायिभिः ہر جل کو ذکی دھارنا کرتے ہیں उपलभ्यते
= بہا ہے یہی پاتے ہیں

119

पवनतत्त्व ध्यायिनां = جو وایو تتو کا دھیان کرتے ہیں

(margin: ان وایو تتو کے دھیان کرنے والوں کو)

स्पर्शविशेषोऽपि = سپرش کا وشیش بھی ہوتا ہے — यः = جو

प्रभिव्यज्येत = ظاہر ہوتا ہے — सोऽपि = وہ بھی

प्रस्मात् = اس سے (margin: اس سے)

= [illegible] — प्रवर्तते = پرورتی ہوتی ہے

इति अत्र द्रष्टव्यम् = یہاں دیکھنا = دیکھنے [illegible] دکھائی دیتا ہے

इदमत्र तात्पर्यम् = اس کا یہ مطلب ہے {اس کا مطلب [illegible]}

उन्मेषाभ्यास योगिना = جو انمیش کا ابھیاس کرنے والے یوگی کو

तत तत धारणाभ्यास

= جو دھارنا کا ابھیاس [illegible] [illegible] پراپت ہوتی ہے

جو ان کو ہر ستائش لیکن انہی کو علاوہ لیکن پراپت ہوتی ہیں

यानि चिरलभ्यास्वादि श्रावर — لیکن انہیں اطمینان کو

प्राप्यासु = کہ جو دیر میں یہ سدھیاں پراپت ہوتی ہیں

एतासु उपलब्धिषु = ان کی تو ... پر سدھیوں کی حاصل ہونے پر

संतोषिणा न

भाव्यम् = سنتوش نہیں کرنا چاہیے (اطمینان کی)

لگاتار

निरन्तर = لگاتار ہوتی ہے — اُس پر — प्रारब्ध प्रत्यह

भूतत्व = ... ہے

आदासाम्
अस्यसूत्वार = اُسکی ... ملتے ہیں

اس ہونگیوں کو یہ سدھیاں کرم سے ملتی ہیں

एताश्चेतरयोगिनो = یہ بعد ہونگیوں کی

क्रमभाविन्योऽपि — یہ کرم سے ملتی ہیں

لیکن اُن اجھیاسی ہونگیوں کو

उन्मेष अभ्यासयोगिनो = جو اب اس اطمینان ... ہوتی ہیں

ततश्चाभिसंधिविरहात् = اُن کی ... نہ ہونے سے

52

अक्रमेणापि प्रवर्तन्त = ... کو یہ سدھیاں بغیر کرم کے ہی ...

इति तत्रैव निर्दिष्टाः = ... وہیں بتلایا ہے

व्याख्यातमेतत् = بیان کیا گیا

" अतोऽस्मात् उन्मेषात्

اس انمیش سے یعنی [illegible]

इत्यादिना वृत्तौ : [illegible]

~~इदानीं = اب وقت तत्~~

एवम् = اس طرح उन्मेषोपदेशेन = اس انمیش کے اپدیش سے

आत्मनो → देहादिवेद्यव्यतिरिक्त स्वरूपतो

[illegible]

[illegible]

प्राक् बहुभिः प्रकारैः = [illegible]

प्रतिपादितं = بیان کی [illegible] संग्रहेण = [illegible]

प्रतिपाद्य = بیان کر [illegible] इदानीं = اب तथैव = اسی طرح

तस्य = اس کا سکل لوک सकललोक [illegible]

स्वानुभव = اپنے تجربے [illegible] सिद्धं [illegible]

प्रतिपादयन व्यवहारे = प्रदर्शनी

[illegible] कृत्य

विश्वरूपतो = [illegible] संक्षेपतः = مختصر

समस्त प्रकरणार्थता पदम = سارے پرکرن کا جو تاتپریہ ہے [illegible]

आह = فرماتے ہیں

दिदृक्षयैव सर्वार्थान्यदा व्याप्यावतिष्ठते
तदा किं बहुनोक्तेन स्वयमेवावभोत्स्यते ॥२३॥

दिदृक्षयैव = دیکھنے کی خواہش سے ہی   सर्वार्थान् = سب پدارتھوں کو
यदा = جب   व्याप्या = ویاپت ہوکر   अवतिष्ठते = ٹھہرتا ہے
तदा = تب   किं = کیا   बहुन उक्तेन = بہت کہنے سے
स्वयम एव = آپ ہی   अवभोत्स्यते = [illegible]

'यदा' = جب → यस्मिन् काले = جس وقت میں
साधको = سادھک   "दिदृक्षयैव" ,
دیکھنے کی خواہش سے

→ द्रष्टुम् इच्छया = دیکھنے کی اچھا سے   यथा = جیسے
"सर्वार्थान्" , = سب پدارتھوں کو
अखिलान् प्रमीय पदवी = [illegible]
जुषो [illegible]

[illegible]

انہیں بھاؤں میں

भवान् 'व्याप्य' = انہی بھاؤں میں ڈوبا ہوا ہو کر

→ स्वसंवित्प्रकाशेन ~~सदा~~ आच्छाद्य = اپنی سموت پرکاش سے سب کو ڈھانپ کر (سب ہی بھاؤں کو ایک روپ کر کے)

→ तदन्तर्लीनान् कृत्वा = اپنی سموت میں لین کر کے ان کو (یعنی وہ سب اپنی سموت میں موجود ہیں) ایسا ہی سمجھ کر

ہی پرویش → "प्रविशेत्" = داخل ہو۔ →

→ नानात्वदर्शन = نانا پن کا درشن جو ہوتا ہے اس میں भ्रान्ति = اس قسم کا بھرم ہے

निवृत्तेः = اس سے ہٹ جانے سے ان کے ہٹنے سے

ہی एकत्र तत्त्वे विश्राम्यति = ایک ہی تتو یعنی اپنی ہی سوروپ میں وشرام پاتا ہے

"तदा" → तस्यां दशायां = اس دشا میں यत् फलम् अनुभूयते = جو پھل یہ (کوئی) انوبھو کرتا ہے

तत्र = وہاں (ایسا) "बहुना" = سب भूयसा "उक्तेन" = کہنے سے

फलाभिधानेन = پھل کا نام لینے سے کیا ہے

"किं" ? (وہ اتنا بڑا ہے کہ کہا نہیں جا سکتا)

اس پھل کو صرف وہ جان سکتا ہے جو اس دشا میں ہو۔ وہ کیا ہے یہ کہا نہیں جا سکتا۔

اگر ہزاروں کتابوں سے بھی کہیں تو نرا لغو رہیگا - کیونکہ الفاظ تو محض
کسی شے کا اشارہ کرتے ہیں - اور وہ کیفیت ہی کرنا ہے -

→ तत्प्रतिपादनेच्छया ان معنوں کو سمجھانے کی خواہش
ग्रन्थ सहस्राण्यपि ہزاروں کتابیں उक्तानि کہی ہوئی
निरर्थकानि भवन्ति = بے فائدہ ہیں
तस्य = وہ वचनगोचरातीतत्वात् ضمنوں کی بیان کی حد سے باہر ہے
کیونکہ الفاظ نہیں ہو سکتے ہیں
کیونکہ باہر

अतीत्वात् = وہ اس لئے ہے (وہ الفاظ میں نہیں آ سکتی ہیں)

एतत्प्राह = یہی کہا "स्वं तदवभोत्स्यते"
= وہ آپ اسے ادراک ہو جائیگا (ور اسکو سمجھ لیگا)

तादृशे फले = ویسا پھل स्वयमात्मनैव آپ ہی - اپنی روح سے

साधन
व्यतिरिक्त = سادھن الگ ہے निरपेक्षो वा = بے پرواہ یا
اس کی پیکار
کیونکہ
اس کو سمجھنے والا
کو اس سمجھیں شک
کام ہو جانے میں

प्रतिपत्स्यते → अभिव्यक्तः = ظاہر ہے
جانتا ہے - ادراک ہو جاتا ہے
{ یہی کہ وہ خود ہی ہے اس کا سمجھ ظاہر ہوا ہے - }

कयोंकि — सं स्वसंवेद्यत्वात् = اپنے آپ کو لہذا
तस्य = جانا جاتا ہے

इदमत्र तात्पर्यम् = یہاں یہ مطلب ہے

योगिना = جوگی کو सर्वभावानां = سب حالتوں کی
स्वस्वभाव کے ساتھ اپنی व्यतिरेक - الگ الگ
ہونے

جس طرح سمادھی کوئی چیز سمادھی کرنے میں کہیں بھی بڑی ہو - لیکن سمادھی ایک سالم رکھ چکے ہیں - سمادھی اور بھو میں [illegible]
پردم ہو رہے ہیں [illegible] وقت اس پر [illegible] ڈال [illegible] - [illegible] ہیں - [illegible] لوگ سب دیکھ [illegible]
رکھتے ہیں - جب [illegible] اور بھو میں [illegible] - [illegible] جو کچھ [illegible] اس میں [illegible] ہے - اس طرح [illegible]
فرصت نہیں ہے

جاننے کی خواہش [illegible] - जिज्ञासुता = جاننے کی خواہش ✱ स्वानुभूता दिदृक्षावस्था

= آپ ہی جو اپنی ہوئی ہے دیکھنے کی خواہش (یعنی کوئی چیز دیکھنے کی)

وہ حرف [illegible] کرتی ہے (یعنی [illegible]) خواہش [illegible] دیکھنے کی چیز ہم — निर्दिधानीकाया = نہیں جانی جا سکتی [illegible]

तथा हि = دیکھئے

= وہ द्रष्टुमभीष्टा भावा: دیکھنا جو چاہے گئے بھاؤ

اپنے گھر کی چیز دیکھ سکتا ہوں

स्वस्वभावाभेदेन व्यवतिष्ठन्ते = جب اپنے سو بھاؤ سے (ابھید) ٹھہرے ہیں

भावभेद हेतो इदन्ता प्रत्ययस्य

इदन्ता प्रत्ययस्य = یہ پن کا گیان = جو [illegible] کا گیان ہے - وہ یہ پن کا گیان ہے - [یہ پن کا جو بیج کا گیان ہے] (یہ سامنے کا بیج کا گیان ہے)

سند شاہ میں جو الگ الگ چیز ہے میں وہ جو بیج ہے - اس میں اس [illegible] نہیں ہے - [illegible] پیدا نہیں ہوتا ہے -

पुन: उन्मेषात् = اس کا اٹھنا (وہ [illegible])

तदा = تب तथा = ویسے

दिदृक्षावस्थायां = دیکھنے کی خواہش کی اوستھا میں

क्षीत्ररा = [illegible] स्वभाव = اپنے سو بھاؤ سے

अभेद: = وہ ایک ہی ہے - اس وقت [illegible]

مثال [جیسے اپنے گھر میں اپنی چیزیں]

भावानां
तत् तत् = ان दिदृक्षितानां = [illegible] तथा [illegible]

परमात्म स्वभावात् = پرماتما کے سوبھاؤ سے، प्रखिल जगत् भावानाम्
[illegible] = अभेद एव

इति पूर्वोपदिष्टं = [illegible]

व्यतिरिक्त = بِنا   परमस्वरूप = آتم سروپ کو
उपलब्धि = [illegible]

परामर्श अभ्यासात् = [illegible]
[illegible]

अभिषितादि दृक्षा = [illegible]   उपलक्षणा
क्षणों [illegible]   क्षण विज्ञान
= [illegible]
[illegible]

चक्षुषं = [illegible]

योगिने प्रत्येव = [illegible]

प्रथम उपदेशः = [illegible]

मायाशक्ति जनितेन = [illegible]

हि = [illegible]   विकल्प तिमिरैः = [illegible]

तिरस्कृत = [illegible]

[illegible]

सम्यक् ज्ञानदृशा = [illegible]

एकमेव = ایک ہی — निर्विभाग चिन्मात्र

स्वरूपमात्म तत्वं = [illegible]

प्रमातृ भेदेन प्रमेय भेदेन च = پرماتر [illegible]

नानारूपं = نانا روپ سے

पश्यन्तो = دیکھتا ہوا

दिदृक्षित दृष्टाद्य = دیکھنے کی [illegible]

= [illegible]

= [illegible] — अवस्था = [illegible]

अविभागं = [illegible]

भावानां परिकल्प्य = [illegible]

दिदृक्षितं नाम प्रि = [illegible]

तेषां = [illegible]

जीवस्वभावात् = [illegible] — अभेदं = نہ بھید

वस्तु = وستو — सन्तमेव = [illegible]

[illegible]

परामृष्टुम = پرامرش کرنے کو — अशक्ता = نہ سکی
(مجبور تھا کرنے میں)

कुतो = کہاں سے — जगत् भावानो = اس جگت کے بھاووں کو

परमात्म स्वभावा नाम = پرماتما روپ سوبھاو میں — अभेदं प्रतिपद्येरन
ابھید کو سویکار کریں

तदा = تب — योगिन इव = یوگیوں کی طرح

दृष्टान्तीकृत = درشٹانت کیا — स्व दिदृक्षा द्वारा
= اپنی دیکھنے کی اچھا ذریعہ

परामर्शी दिदृक्षा = [illegible]

[illegible] स्व स्वभाव = سوبھاو کا [illegible]
अभेदम = ابھید [illegible]

अखिल भुवन = سارے جگ میں

भावा भासानो = اپنے بھاو ابھاس کو
भावयता = بھاونا کرتا

[illegible] भेद ध्वान्त = بید روپ اندھیرا

निर्भेदं = اس ابھید کو [illegible]

भास्करेश = [illegible]

भावितव्यम = [illegible]

व्याख्यातमेतत् = واکھیا کی ہے

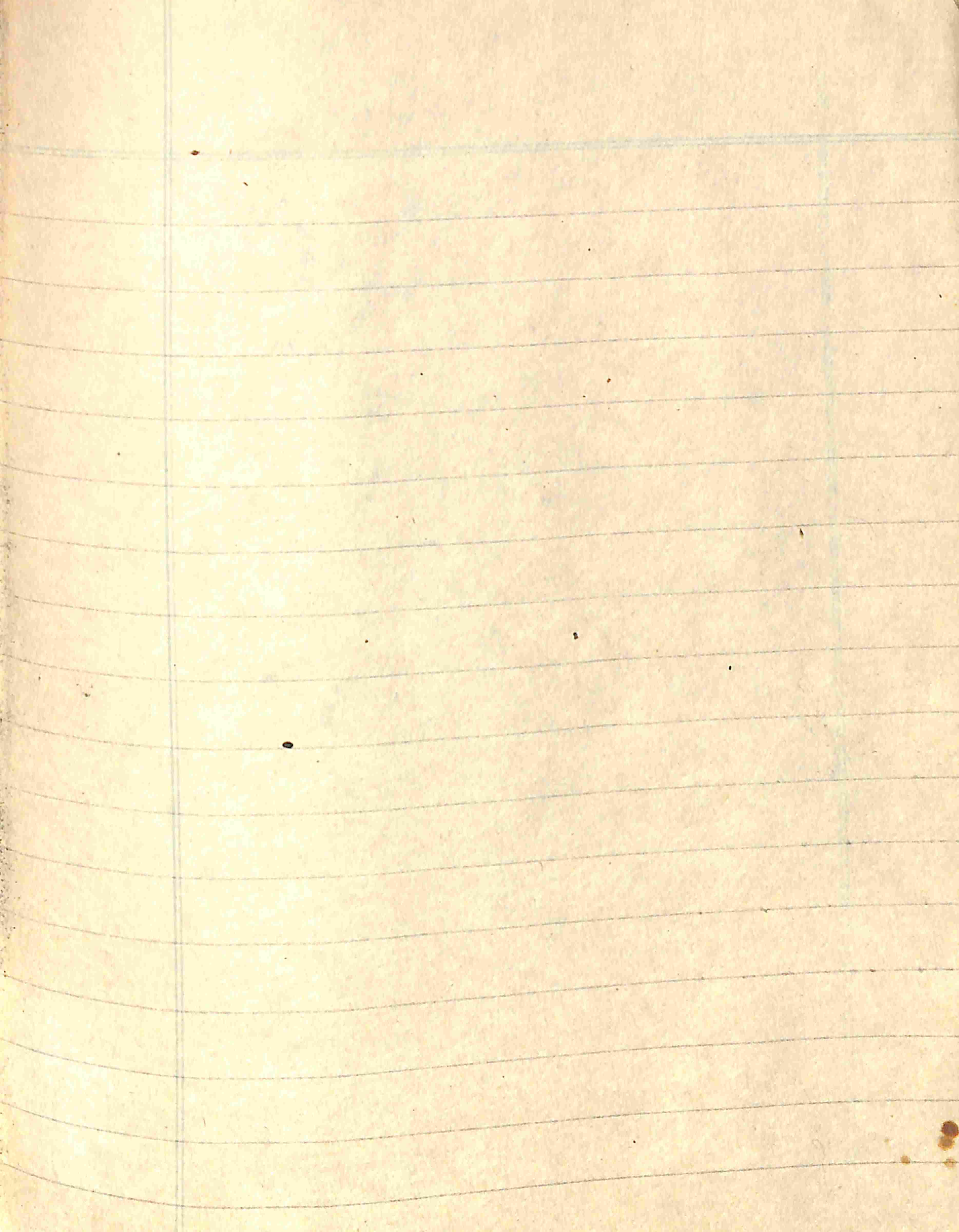
" दिदृक्षा द्रष्टुमिच्छा तदवस्थास्य इव "

دیکھنے کی اچھا جو اسی شکشا میں کہا ہوا ہے

इत्यादिना वृत्तौ ॥१३॥

21.3.67.

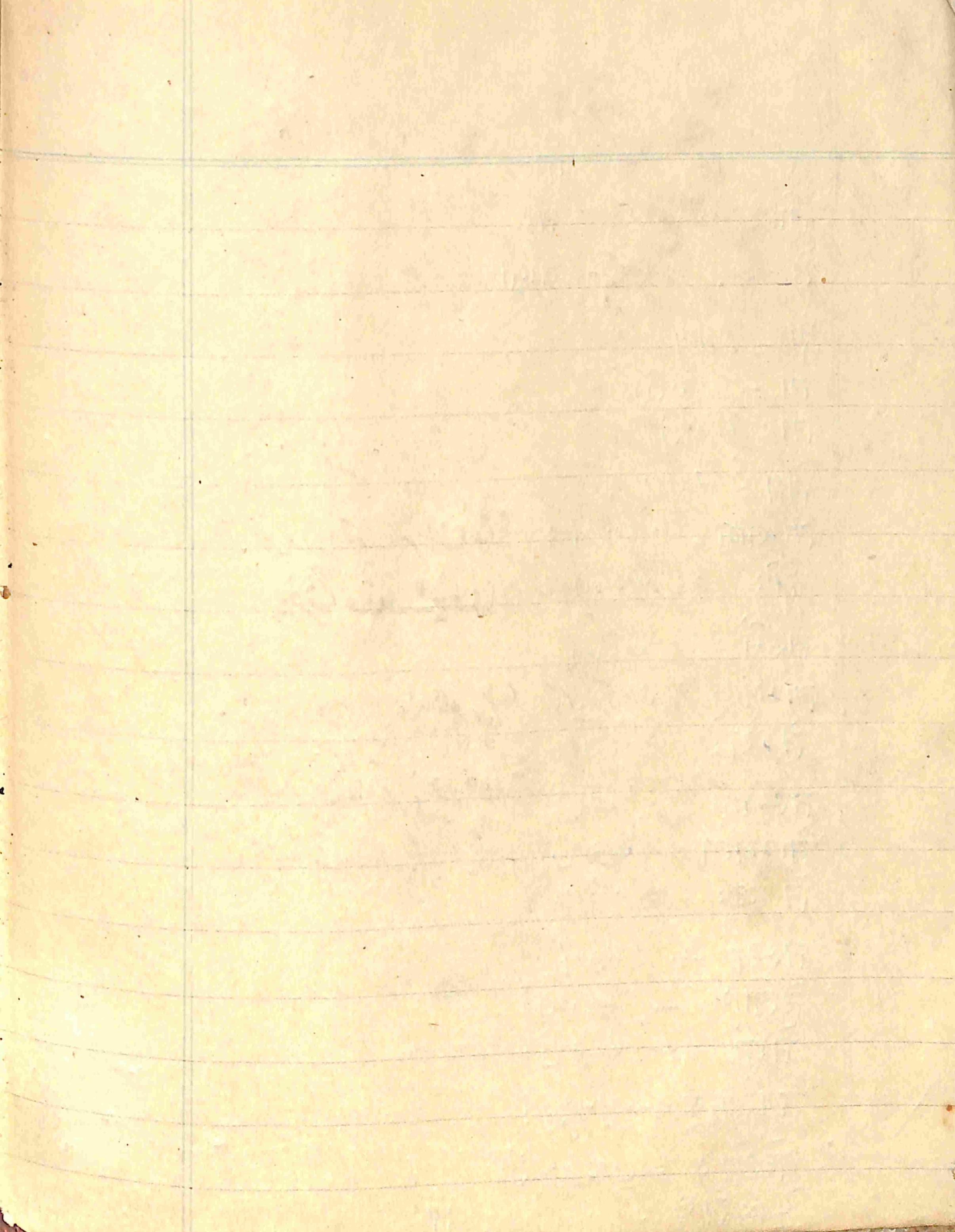
مایا شکتی سے اُدھا ہوا کلپ ہے۔ اِسی سے سرودا کے جن ماتر سروپ ہوتے ~~جس کی ہیک جو ہیا~~ کی گیانی درشٹی اچھی طرح کھُل گئی ہو۔ تو وہ اس سے پرماتر بھاؤں ~~سے بھین پر جو~~ جُھک سے بیری بھاؤں کو نانا روپتا سے دیکھتا ہے۔ مطلب جو دیکھنے کی اچھا ہیں۔ سامنے جو دیکھتا ہو۔ یا دیکھا جو کچھ ہو۔ اسکو وہ باگ بھاؤں سے کلپنا کرتا ہے۔



ماژن چھے یتھی صاحب چھو کونے   یا ہتی ماژن یا ہتی ماژن
دوشونے عالمن صاحب چھو کونے   منزہ گیی وتہ بیول یتہ بب چھو کونے
نادک چھو فرق وطلب چھو کونے   پرتاک اَنس رب چھو کونے
یا ہتی ماژن یا ہتی ماژن

اکہ رام تہ اکہ رحمان ووٗنوی   اکہ شام تہ اکہ سلیمان ووٗنوی
اکہ کرشن تہ اکہ یزدان ووٗنوی   اکہ اللہ تہ اکہ بھگوان ووٗنوی
نادک چھو فرق وطلب چھو کونہ   یا ہتی ماژن یا ہتی ماژن

اکہ مندر مسجد اکہ چھو جہان   اکہ گرجن دھوم صاحب چھو لادان
اکہ جنگلن بیابانن چھو جہان   اکہ منس منز چھو تہ چھو جہان
نادک چھو فرق وطلب چھو کونہ   یا ہتی ماژن یا ہتی ماژن



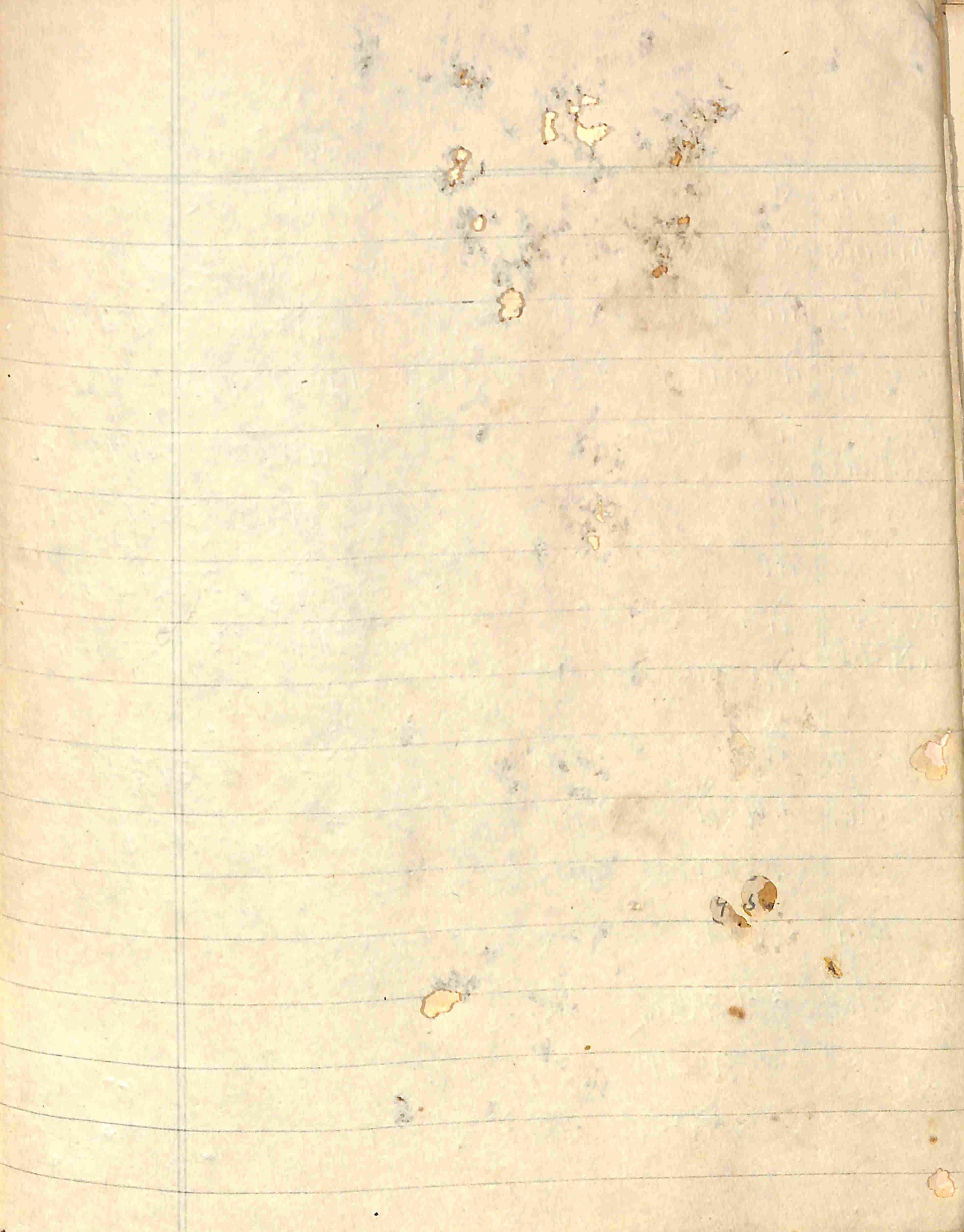
सः = وہ — ति
तौ = وہ دو — तः
ते = وہ سب — वन्ति.

तं = اُس کو
तौ — اُن دو کو
तान् = اُن سب کو
तेन = اُس نے
ताभ्याम् = اُن دو نے
तैः = اُن سبھوں نے

तस्मै — اُس کے لیے
ताभ्याम् = اُن دو کے لیے
तेभ्यः اُن سب کے لیے

तस्मात = اُس سے
ताभ्याम = اُن دو سے
तेभ्यः — اُن سب سے

तस्य — اُس کا
तयोः — اُن دو کا
तेषां — اُن سب کا
तस्मिन् — اُس پر - میں
तयोः — اُن دو پر - میں
~~तेषु~~ तेषु — اُن سبھوں پر - میں



प्र. एकवचन सः = वह करता है

कर्तृ कारक सः करोति वह करता है।

प्र. द्विवचन तौ कुरुतः वे दोनों करते हैं

प्र. बहुवचन ते कुर्वन्ति वे सब करते हैं

कर्मकारक द्वितीया वि तं उसको

द्वि तौ वे दोनों

ब. तान् वे सबों को

करण कारक तृतीया वि तेन उसने

ताभ्याम् उन दोनों ने

ब. तैः उन सबों ने

सम्प्रदान चतुर्थी वि तस्मै उसके लिए

ताभ्याम् उन दोनों के लिए

तेभ्यः उन सबों के लिए

अपादान कारक पञ्चमी वि ए. तस्मात् उससे

द्वि. ताभ्याम् उन दोनों से

ब. तेभ्यः, उन सबों से

सम्बन्ध कारक षष्ठी वि.

ए. तस्य उसका

द्वि. तयोः उन दोनों का

ब. तेषां, उन सबों का।

सप्तमी विभक्ति

ए तस्मिन्, उस पर, में

द्वि तयोः उन दोनों पर में

ब. तेषु उन सबों पर में

सम्बोधन// प्रथमा वि

हे राम

हे राम लक्ष्मणौ

हे लोकाः//

75.60
48.40
27.20

वर्तमान काल

प्रथम पुरुष	सः	करोति।	भविष्य[illegible]
	तौ		भविष्यतः [illegible]
	ते		भविष्यन्ति [illegible]
मध्यम पुरुषः	त्वं	करोषि	
	युवां	कुरुथः	
	यूयं	कुरुथ॥	
उत्तम पुरुष	अहं	करोमि	
	आवां	कुर्वः	
	वयं॥	कुर्मः।	

8.40 × 9
72
3.60
75.60

29.00
2.11
1.20
3.60
75.60
111.51
29.00
82.51
7.00
75.60
12.10
63.50
2

7/5
29.00 9.66 9.50 Deus
200 19.32 19.50 Self } I

6.91
4
1.75

3.50

II { Deus 1.75
Deus 1.75
Self 4.50 }

8.40 5½

2.20×5
11.00
1.10
12.10

31.75

III Deus 12.10
Deus 31.75
Self 31.75

12.10
12.10
24.20
43.40